आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य मे सम्पन्न वाचना के दुर्लभ क्षण चित्रों में

कुन्दकुन्दके कुन्दकला पाठ करते हुए आचार्य विद्यासागर जी और संतोष कुमार बेटरी वाले

आचार्य विद्यासागर जी षट्खण्डागमजी वाचना करते हुए श्री पं. बालचन्द्र जी सिद्धांत शास्त्री, बीना

आचार्य श्री विद्यासागर जी और वाचना करते हुए पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य, सागर

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		(सितम्बर 2018भाद्रपद शुक्ल)	
16	रविवार	सप्तमी	ज्येष्ठा
17	सोमवार	अष्टमी	मूल दिन/रात
18	मंगलवार	नवमी	मूल
19	बुधवार	दशमी	पूर्वाषाढ
20	गुरुवार	एकादशी	उत्तराषाढ
21	शुक्रवार	द्वादशी	श्रवण
22	शनिवार	त्रयोदशी	धनिष्ठा
23	रविवार	चतुर्दशी	शतभिषा
24	सोमवार	पूर्णिमा	पूर्वभाद्रपद
25	मंगलवार	पूर्णिमा	उत्तराभाद्रपद
		(आश्विन कृष्ण)	
26	बुधवार	प्रतिपदा	रेवती
27	गुरुवार	द्वितीया	अश्विनी
28	शुक्रवार	तृतीया/चतुर्थी	भरणी
29	शनिवार	पंचमी	कृतिका
30	रविवार	षष्ठी	रोहिणी
		(अक्टूबर 2018)	
1	सोमवार	सप्तमी	मृगशिरा
2	मंगलवार	अष्टमी	आर्द्रा
3	बुधवार	नवमी	पुनर्वसु
4	गुरुवार	दशमी	पुष्य
5	शुक्रवार	एकादशी	आश्लेषा
6	शनिवार	द्वादशी	मघा
7	रविवार	त्रयोदशी	पूर्वाफाल्गुनी
8	सोमवार	चतुर्दशी	उत्तराफाल्गुनी
9	मंगलवार	अमावस	हस्त
		(आश्विन शुक्ल)	
10	बुधवार	प्रतिपदा	चित्रा
11	गुरुवार	द्वितीया	स्वाति
12	शुक्रवार	तृतीया	विशाखा
13	शनिवार	चतुर्थी	अनुराधा
14	रविवार	पंचमी	ज्येष्ठा
15	सोमवार	षष्ठी	मूल

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ : सितम्बर-20,27, अक्टूबर-4,10
वाहन क्रय : सितम्बर-22, अक्टूबर-11
विद्यारंभ मुहूर्त : सितम्बर-21,27 अक्टूबर-4,10,11

तीर्थंकर कल्याणक

17 सितम्बरः भगवान पुष्पदंत मोक्ष कल्याणक
23 सितम्बरः भगवान वासुपूज्य मोक्ष कल्याणक
27 सितम्बरः भगवान नेमीनाथ गर्भ कल्याणक
01 अक्टूबरः भगवान नेमीनाथ ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

16 सितम्बर : शील सप्तमी, मुक्तावली व्रत प्रारंभ
17 सितम्बर : निःशल्य अष्टमी प्रारंभ
18 सितम्बर : पुष्पांजलि व्रत पूर्ण
19 सितम्बर : सुगंध दशमी प्रारंभ
20 सितम्बर : अनन्त व्रत प्रारंभ
22 सितम्बर : रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
23 सितम्बर : दशलक्षण व्रत पूर्ण, कर्म निर्जरा व्रत पूर्ण, अनंत व्रत पूर्ण
24 सितम्बर : रत्नत्रय व्रत पूर्ण
25 सितम्बर : सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष पूर्ण
26 सितम्बर : षोडशकारण व्रत पूर्ण
26 सितम्बर : क्षमावाणी-मेघमाला व्रत पूर्ण
30 सितम्बर : मुक्तावली व्रत
30 सितम्बर : रोहिणी व्रत
07 अक्टूबर : मुक्तावली व्रत प्रारंभ

सर्वार्थ सिद्धि

16 सितम्बरः 28/56 बजे से 30/17 बजे तक ।
21 सितम्बरः 06/19 बजे से 16/47 बजे तक ।
25 सितम्बरः 06/20 बजे से 25/02 बजे तक ।
27 सितम्बरः 06/20 बजे से 26/24 बजे तक ।
29 सितम्बरः 26/15 बजे से 30/21 बजे तक ।
01 अक्टूबरः 06/22 बजे से 24/52 बजे तक ।
04 अक्टूबरः 06/23 बजे से 20/50 बजे तक ।
07 अक्टूबरः 15/19 बजे से 30/24 बजे तक ।
12 अक्टूबरः 10/41 बजे से 30/26 बजे तक ।
14 अक्टूबरः 13/15 बजे से 30/27 बजे तक ।

संस्कार सागर

• वर्ष : 20 • अंक : 233 • सितम्बर 2018
• वीर नि.संवत 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

• मानसिक भ्रांति का उपाय : उपवास 08
• परस्पर सहयोगी बने 09
• श्री जैन धर्म बनाम कर्म सिद्धांत ये सर्वादित है कि जैन धर्म पूर्णतः वैज्ञानिक एवं कर्म सिद्धांत पर आधारित है। करता ना धरता कोई है। अणु अणु स्वयं स्वाधीन है। 13
• विवाह पूर्व फिल्मांकन मर्यादा के विपरीत घ्रणित कार्य। 15
• सुधार चातुर्मास लिस्ट 16
• आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन मे अकालमृत्यु 18
• पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में मुनिराजों की भूमिका 34
• वाजपेयीजी को अलविदा नहीं कहा जा सकता 43
• श्रद्धांजलि लेख : आदरणीय प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाशजी के स्वर्गवास पर एक सूर्य जो अस्त हो गया 46
• आचार्यश्री विद्यासागरजी के शीतलधाम की परिकल्पना 48
• जैन व्यक्तित्व सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक विक्रम अम्बालाल साराभाई जैन 55

बाल कहानी

• नेपकीन 59

कविता

• मोह लोभ के अंधयारे में 14
• अरिहंत प्रभो, अरिहंत प्रभो 23
• कर्म डुबाये तेरी नैया 32
• सुबह की तलाश में गजल 57

कहानी

• इस जाल में कैसे फंसे 40

नियमित स्तंभ

• **पाती पाठकों की** : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 10
• चलोदेखें यात्रा : 17 • आगम दर्शन :20 • पुराण प्रेरणा : 25 • माथा पच्ची : 25
• कैरियर गाइड : 26 • दुनिया भर की बातें : 27 • इसे भी जानिये: 32 •दिशा बोध : 33
• आओसीखें : जैन न्याय : 39 • हमारे गौरव : 39 • डाकटिकटों पर जैन इतिहास :55• हास्य तरंग : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा 65 वर्ग पहेली 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : 2100/- (15 साल)
परम संरक्षक : 15000/-

अपनेशहर के
- **स्टेट बैंक ऑफ इंडिया** (संस्कार सागर)
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- **भारतीय स्टेट बैंक** (ब्र. जिनेश मलैया)
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- **ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स**
  खाता क्र.07882151004198(IFSC:ORBC0100788)
- **आईडीबीआई बैंक** (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 155104000037022
- **आईसीआईसीआय बैंक** (श्री दिगम्बर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय कोसूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अगस्त का अंक देखा आकर्षक अंक में **''वर्षायोग सूची''** पर विशेष ध्यान लगा। बहुरंगी आवरण पृष्ठ पर आँखे थम गई ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरी आँखो को सम्मोहित कर लिया ही एक हजार से अधिक साधुओं की सूची बनाना एक दुरुह कार्य है ऐसी गतिविधि सस्कार द्वारा संचालित होना एक ऐतिहासिक दस्तावेज का निर्माण करना है। उन्नीस वर्षों से लगातार में वर्षायोग सूची को देख रहा हूँ। सचमुच में संस्कार सागर ने कीर्तिमान बनाया है। यदि यही गति आगे बढ़ती गई तो एक जबरदस्त उपलब्धि होगी। और कई पीढ़ियां याद करेगी।
ब्र. प्रदीप पीयूष (श्रवणबेलगोल)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर अगस्त अंक की संपादकीय को पढ़ा और यह हमने भीतर से मान लिया कि प्रेम समर्पण परिवार सुरक्षा का प्राथमिक बिन्दु है। परिवार तब तक ही सुरक्षित रहता है जब तक प्रेम प्रवाहमान बना रहता हो अपनी सुख सुविधाओं की अपेक्षा परिवार के अन्य सदस्यों को सुख सुविधा प्रदान करने से आत्मीयता और परस्पर में विश्वास पैदा होता है। सहिष्णुता परिवार संगठित करने का मूल मंत्र है जिस परिवार में प्रेम की संवेदना शून्य हो जाती हैं वह परिवार कभी भी बिखर जाता है। यदि किसी एक सदस्य पर कोई संकट आ जाये और समस्त परिवार संवदेनशील हो जाये तब समझना चाहिए कि यह परिवार बिखर नहीं सकता है। सम्पादकीय चुस्त और दिशा बोधक लिखी है येतदर्थ विद्वान सम्पादक को मेरा साधुवाद। **डी.के.जैन (सांवरमतिगुजरात)**

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों दिल्ली के बुराड़ी में राजस्थान मूल के भाटिया परिवार के 11 सदस्यों ने मोक्ष प्राप्त करने के लिए आत्म हत्या की यह अंधविश्वास का चरम रूप है। आत्म हत्या करने से संक्लेश परिणाम होता है। संक्लेश परिणाम से मरने वाले को मोक्ष तो नहीं नरक अवश्य मिलता है। खरपिटक दर्शन के कुछ विचारकों का ऐसा मानना रहा है जिस तरह कोई पक्षी घड़े में प्रवेश कर जाए और जब वह उस घड़े से बाहर नही निकल पाता है किन्तु घड़ा फोड़ देने से पक्षी मुक्त हो जाता है। इसी तरह शरीर को नष्ट कर देने से आत्मा मुक्त हो जाती है ऐसा सोचने वाले पुराने समय में ठगी करते थे। **काशी करवत सिद्धान्त** जिसमें भक्त को काशी में आरी से चीरकर नदी में फेक देते थे उनका धन सोना चांदी लूटने के लिए लोगों पर यह अंधविश्वास थोपा जाता था आज उसी अंधविश्वास ने 11 लोगों की जान ले ली है। समाज को अंधविश्वास से बचना चाहिए।
अभिषेक जैन (मुंबई)

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों पाकिस्तान की एक अदालत ने पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ एवं उनकी बेटी मरियम को दस और सात साल की सजा सुनाई भ्रष्टाचार के मामले में सुनाई गई यह सजा यह संकेत देती है कि भ्रष्टाचार करना अक्षम्य अपराध है ऐसे अपराधों के प्रति राजनेता लोग जब तक सत्ता में बैठे रहते हैं तब तक वे राष्ट्र की और समाज की बात न सोचकर खुद की उन्नति बात सोचते हैं भ्रष्टाचार के कारण अपराधियों के होसले बुलंद होते हैं। और अन्याय व शोषण से गरीबों को सिर्फ अत्याचार का शिकार होना पड़ता है। मेरा तो यह मानना है कि जहां भी भ्रष्टाचार होता है वहां राष्ट कमजोर पड़ जाता है यदि सेना भ्रष्टाचार करने लगे तो शरहदों से होने वाले आतंकी घुस पैठ को रोकना मुश्किल हो जायेगा। जगह-जगह आतंकी हमले होने लगेंगे। और भ्रष्टाचार से हिंसा को ही बढ़ावा मिलेगा।
अंशुल पारासर (लटेरी)

पिछले अगस्त माह के अंक में क्षुल्लक श्री सुगंधसागर जी के स्थान पर क्षुल्लक श्री समर्पण सागर जी भूल से लिखा गया था अतः उसे सुगंध सागर ही पढ़े।

भक्ति तरंग

बीर स्तवन

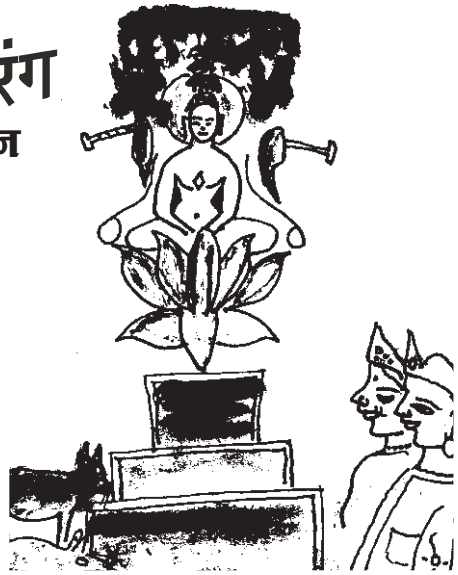

री चल वंदिये चल वंदिये, महावीर जिनराय ।।
पाप निकन्द ये महावीर जिनराय, वारी वारी महिमा कहिय न जाय
विपुलाचल परवत पर आया, समवसरन बहु भाय ।। री चल. ।।
गौतम रिषि से गनधर जाके, सेवत सुरनर पाय ।। री चल.।।
बिल्ली-मूसे-गाय-सिंह सों, प्रीति करै मन लाय ।। री चल.।।
भूपति सहित चेलना रानी, अंग अंग हुलसाय ।। री चल.।।
द्यानत प्रभु को दरसन देखै, सुरग मुकति सुखदाय ।। री चल.।।

अरे ! चलकर श्री महावीर जिनेन्द्र का वंदन करो। जिनकी वंदना से पापों का नाश होता है। उसकी महिमा अकथनीय है मैं उस पर वारि वारि जाता हूँ।

विपुलाचल पर्वत पर भगवान का समवसरण आया है, जो मन को बहुत भा रहा है, अच्छा लग रहा है।

गौतम से विद्वान ऋषि जिनके गणधर है। देव व मनुष्य सभी जिनके चरणों की सेवा करते हैं।

जहाँ जाति बिरोध तजकर बिल्ली और चूहा, गाय और सिंह सभी में आपस में मन से मैत्री स्थापित हो गई है।

रानी चेलनासहित राजा श्रेणिक के रोम-रोम अति आनन्दित पुलकित हो रहे हैं।

द्यानतराय कहते हैं कि ऐसे प्रभु के दर्शन से स्वर्ग व मुक्ति दोनों की प्राप्ति होती है। दोनों सुलभ होते हैं।

संस्कार प्रवाह

परिवार सुरक्षा व दशलक्षण धर्म

आज परिवार की सुरक्षा चिंता का विषय है। टीवी, मोबाइल, फेंक न्यूज, सोशल मीडिया, व्हाटसप, फेसबुक जैसी प्रायः परिवार बिखेरनी वाली गतिविधियों ने समाज का अनुशासन प्रभावित किया है जिस में समाज सुरक्षा नैतिक आचरण और संस्कार निर्माण की दिशा में अनेक बाधाएँ पैदा हुई हैं । पारिवारिक उदण्डता अपना मुँह फैलाती जा रही है। भागकर शादी करना, भोजन में अभक्ष्य वस्तुओं का प्रवेश होना, बातचीत में क्रूरता होना इन सब विकृतियों के कारण परिवार संगठन कमजोर पड़ रहा है। प्रेम के महीन धागे से परिवार का संगठन मजबूत होता है। परिवार के बिखरने में मुख्य कारण सम्मान व सेवाभाव का अभाव है जो परिवार की सुरक्षा में अग्रणीय भूमिका निभाता है।

क्षमा व सहिष्णुता दशलक्षण धर्म का पहला सोपान है। इसी के आधार पर संयुक्त परिवार चिरस्थायी होता है। क्रोध-बैर-विरोध के कारण पारिवारिक कलह जन्म लेती है। क्षमा परिवार को कलह से मुक्त करती है। क्षमा धर्म भी है और परिवार सुरक्षा का आधार है। हृदय की कोमलता मार्दव धर्म को साकार करती है। यह मार्दव धर्म परिवार में ऐसा वातावरण निर्मित करता है कि परिवार के सदस्यों में परस्पर आत्मीय वशीकरण सा हो जाता है। यही वशीकरण परिवार की सुरक्षा में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग करता है।वाणी की कठोरता परिवार को तोड़ देती है। निश्छल प्रेम, सरल, सत्य व्यवहार आत्मीयता, निष्कपट-वात्सल्य आदि परिवार के प्राण होते हैं। निर्लोभता और संतोष परिवार के लिए सौहार्द-पूर्ण वातावरण पैदा करता है इससे अपनापन अपने आप स्थापित हो जाता है।

अनन्त लालसाओं पर विराम लगाने वाला :- शौच धर्म है यह शौच धर्म स्वार्थ को समाप्त कर देता है स्वार्थ और स्वार्थी व्यसनीय और लालची बन जाते हैं। जब परिवार का कोई सदस्य व्यसन और लालसा में डूब जाता है तब वह परिवार के बिखराव में अहम भूमिका निभाता है। सारे लाभ जब कोई अकेला ही प्राप्त करना चाहे तब वह परिवार का संतुलन बिगाड़ देता है। संयम समाप्त हो जाता है। क्रूरता मन में छाने लगती है। मन और इन्द्रिय बस में नहीं रहते हैं वाणी व्यवहार बदल जाता है। तीखी भाषा बोलने लगता और यही तीखी भाषा आत्मीयता को समाप्त कर देती है अनावश्यक टोका टाकी, आदेशात्मक भाषा असंयम को ही जन्म देती है।

तप और त्याग समर्पण को जन्म देता है और परिवार के प्रति जब सभी सदस्यों का समर्पण हो जाता है तब सुगठित परिवार होने में देर नहीं लगती है। नीतिगत संचयन स्वस्थ परिवार की भूमिका अदा करता है। थोड़े में खुश रहने वाले लोग अपनी सुविधा पर केन्द्रित नहीं होते हैं किन्तु दूसरों को सुविधा उपलब्ध कराने में रूचि रखते हैं। ब्रह्मचर्य परिवार की मर्यादा है। छोटे भाई की पत्नी पुत्र वधु एवं कुल वधु को अपनी बेटी के समान समझा जाता है तभी पारिवारिक कलह टल जाता है। ममता समता उत्पन्न हो जाती है जब प्रेम की भावना उत्पन्न हो जाती है तो एक दूसरे के सुख-दुख में सहभागिता विकसित होती है।

दशलक्षण धर्मों का प्रभाव परिवार पर सबसे अधिक पड़ता है अब देखना है कि इस वर्ष का दशलक्षण पर्व परिवार को कितना मजबूत बनाकर और सुरक्षा प्रावधान करता है।

मानसिक भांति का उपाय : उपवास

❊ डॉ. सुनील जैन संचय (ललितपुर)❊

उपवास न केवल धार्मिक, आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अहम है। उपवास त्योहारों-व्रतों में ही रखें, जरूरी नहीं। स्वस्थ रहने के लिए आप कभी भी उपवास कर सकते हैं। अनेक शोधात्मक तथ्य यह प्रमाणित कर चुके हैं कि उपवास करने से स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

यदि आप मानसिक रूप से शांत रहना चाहते हैं, तो महीने में एक या दो बार उपवास करें। इससे शरीर हल्का, अधिक लचीला एवं दिमाग सक्रिय रहता है । उपवास कई बीमारियों जैसे एलर्जी, आर्थराइटिस, पाचनतंत्र और त्वचा की समस्या, अस्थमा, कार्डियोवैस्कुलर आदि से बचाता है।

उपवास से पाचन तंत्र दुरस्त होता है, जिससे यह सुचारू रूप से काम करता है । इसके जरिए आंतो में भोजन में रस सोखने की क्रिया में वृद्धि होती है। जिनका वजन अधिक है, वे उपवास जरूर करें। उपवास के दौरान वसा कम करने की प्रक्रिया तेज हो जाती है। इससे चर्बी कम होती है।

त्यौहार, पर्व के साथ-साथ महीने में एक दो बार उपवास करने से हल्का महसूस होता है। यह शरीर में मौजूद बेकार और विषैले पदार्थों को बाहर निकालता है । जब शरीर अंदर से साफ होता है, तो मेटाबॉलिज्म बढ़ता है। भूख अधिक लगती है।

उपवास करने से शरीर की ऊर्जा का स्तर बढ़ता है । शरीर के सभी अंगो में ऊर्जा का संचार होता है। त्वचा पर सकारात्मक रूप से असर होता है। मन शांत ओर दिमाग अधिक सक्रिय होता है । जो लोग गैस, कब्ज, अजीर्ण, बुखार, सिरदर्द आदि से अक्सर परेशान रहते हैं,उन्हें उपवास जरूर करते रहना चाहिए । इससे इन समस्याओं से छुटकारा मिलता है।

अध्ययनों से पता चला है कि व्रत से मेटाबॉलिक रेट में 3 से 14 फीसदी तक बढ़ोतरी होती हे । इससे पाचन क्रिया और कैलोरी जल्दी बर्न होती है । इन दिनों अन्न, पास्ता, ब्रेड, बिस्कुट, पकी हुई सब्जियों , मक्खन, जंक फूड जैसे पदार्थों के सेवन से बचें । क्योंकि इनके सेवन से उपवास के स्वास्थ्य लाभ नष्ट हो सकते हैं । जैनधर्म के अनुसार तो उपवार के दौरान अन्नादि लेना सर्वथा वर्जित ही है।

उपवास से नई रोग प्रतिरोधक कोशिकाएं बनती हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ कैलिफोर्निया के विशेषज्ञों के अनुसार, कैंसर के मरीजों के लिए फायदेमंद है। फैट सेल्स लैप्टिन नाम हॉर्मोन का निर्माण करती है। कम कैलोरी मिलने से लैप्टिन की सक्रियता पर असर पड़ता है, जिससे वजन कम होता है।

इतना ही नहीं यह जीवनकाल को भी बढ़ाता है । एक अध्ययन में कुछ चूहों को भूखा रखा गया। ये भूखे न रखे गए चूहों के मुकाबले 83 फीसदी अधिक जिए। धार्मिक एवं आध्यात्मिक साधना के रूप में भी इसका महत्व अधिक है। महीन में एक या दो बार उपवास करने से शरीर पर सकारात्मक असर होता है।

व्रत के जरिए अवरोधों को नष्ट करके आंतों, रक्त और कोशिकाओं को शुद्ध किया जा सकता है, जिससे कई बीतारियों से छुटकारा मिल सकता है । उपवास धार्मिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी है, सभी को उपवास करना चाहिए। उपवास को सभी धर्मों में महत्वपूर्ण बताया गया है।

परस्पर सहयोगी बने

❊ सुमति प्रकाश जैन, प्राचार्य (छतरपुर) ❊

तत्वार्थ सूत्र के पॉचवे अध्याय का इक्कीसवॉ श्लोक **''परस्परोपग्रहो जीवानाम्''** का अर्थ है सभी जीव एक दूसरे का उपकार करते हैं। जैन संस्कृति का यह आदर्श वाक्य है । यह अहिंसा पर आधारित है। जैन प्रतीक चिन्ह का यह ध्येय एवं आधारभूत वाक्य है। हमारे सामाजिक जीवन का शुभारंभ एक नन्हें से शिशु के रूप में होता है। शिशु का पालन पोषण करने और शिक्षा देने में माता पिता एवं गुरु का सर्वोपरि स्थान है।

प्रकृति का आधारभूत घटक सूर्य हम सभी के लिए प्रकाश देता है । वायुमण्डल प्राणवायु देता है। जल हमें जीवन देता है। वृक्ष हमें फल देते हैं। प्रकृति द्वारा प्रदत्त इन सुविधाओं से हमें शिक्षा लेने की आवश्यकता है। छोटा सा नियम बनायें। हम प्रतिदिन किसी व्यक्ति को कुछ न कुछ सहयोग करें । किसी को आर्थिक सहयोग दें तो किसी व्यक्ति का हाथ पकड़ कर सहारा दें। समाज में बदलाव के तरीके हजार हो सकते हैं। उसका पालन सजग होकर ईमानदारी से किया जाये तो समाज का प्रत्येक व्यक्ति परेशानी से मुक्ति पा सकता है। हम दूसरों की परेशानियों को दूर करने के लिए एक प्रयास जरूर कर सकते हैं। किसी भी कार्य को करने के लिए सकारात्मक सोच एवं नम्रता का होना अति आवश्यक है। एक फलदार वृक्ष हमें फल देने के लिए अपने अंग (टहनी) को झुका लेता है उसी प्रकार नम्रता व्यक्ति को झुकना सिखा देती है । **नेकी कर दरिया में डाल** इस उक्ति को अपने जीवन में चरितार्थ करना सीखें । परोपकार कर हम अपनी जीवन शैली को सकारात्मक ऊर्जा से आपूरित करें।

कुछ लोग तो केवल जीवन पाकर अपना भरण पोषण करते हैं , मगर कुछ लोग तो महान कार्यो के कारण महानता की ओर अग्रसर हो जाते हैं। हम द्वितीय श्रेणी के लोगों का अनुकरण करें। समय आने पर दूसरों का सहयोग करें। सहयोग का प्रतिफल आपको जरूर मिलेगा। कुछ भी अच्छा हमारे साथ होता है तो उसे परोपकार का प्रतिफल मानकर स्वयं ऊर्जावान बनें।

अरस्तु ने कहा हे मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। प्रत्येक मनुष्य समाज की एक इकाई हैं। समाज के बिना मनुष्य का विकास संभव नहीं है। समाज के बिना वह पंगू है । समाज का निर्माण किसी एक व्यक्ति के द्वारा नहीं बल्कि कई परिवारों से मिलकर होता है। हम समाज में आपसी सहयोग के बिना जीवन यापन नहीं कर सकते, हमारी प्रकृति ही हमें ये गुण सिखाती है।

वृक्ष से लेकर चीटीं तक हमें परस्पर सहयोग की भावना परिलक्षित करती है । यदि किसी चींटी को भोजन का पता लगता है, तो वह वहां जाते समय अपनी लार पीछे छोड़ती जाती है, जिससे दूसरी चींटियाँ उसके पीछे आकर उस भोजन को प्राप्त करे लें। इस छोटे से जीव से शिक्षा लेकर हम अपने अंदर परोपकार की महाशक्ति को जागृत कर सकते हैं।

आज हमारे परिवार हम दो हमारे दो तक ही नहीं अपितु हम दो हमारा एक तक ही सिमटता जा रहा हैं। हम अपनी इस संकुचित मनोवृत्ति को विस्तृत करें और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के साथ जीये, तो जीवन का आनन्द कुछ और ही हागा। जब हम धरती के सभी प्राणियों को अपना परिवार मानेंगे तो **''परस्परोपग्रहो जीवानाम्''** की सार्थकता स्वतः ही सिद्ध हो जाएगी।

किसी को सहयोग करने के उपरांत उससे प्रशंसा या अन्य उपकार की आकांक्षा कदापि न करें । परोपकार कर सिर्फ अपनी ही आत्मा की आनंदानुभूति की ओर ध्यान केन्द्रित करें । इससे ही हमें सच्चा सुख मिलेगा। पारस्परिक सहयोग की अविरल गति से विकास के कदम शनैः शनैः आगे बढ़ाते रहें।

एक दीपक हम जलाऐं, एक दीपक तुम जलाओं
कुछ अंधेरा हम मिटाये, कुछ अंधेरा तुम मिटाओ।

संयम स्वास्थ्य योग

हींग
Ferula Assa Foetida

पर्याय नाम- **हिन्दी** - हींग
संस्कृत - हिंगु, जतुक, सहस्त्रवेधी, रामठ
मराठी, बंगाली - हिंग
गुजराती, सिंधी - हींग
अंग्रेजी - असाफिटिड़ा Asafoetida
लेटिन - केसला असाफिटिड़ा Ferula Assafoetida

उत्पत्ति स्थान- हींग का उत्पादन अफगानिस्तान में सबसे अधिक होता है। ईरान, तुर्किस्तान, पंजाब, पेशाबर एवं कश्मीर में कही कहीं होता है।

रासायनिक संगठन- इसमें उड़नशील तेल 6 से 17 % होता है। इसमें रसोन तेल एवं एलिल परसल्फाइड Allyl Persu/Phide होता है। इसी के कारण हींग की विशिष्ट गंध होती है। इसके अतिरिक्त राल Asaresinotanrol 65% गोंद 25% क्षार एवं लवण 3 से 4% तथा Ferualic acetic, malic formic और Valerianic acid होते हैं।

प्रयुक्त अंग- निर्यास, बीज
मात्रा- 1 से 4 मिली.ग्राम

हींग का वृक्ष 6 से 8 फुट तक लम्बा होता है। इसके दंड वृहत, मोटे एवं पत्रहीन होते हैं, इसके दंड एवं तने पर चीरा लगाने पर जो रस टपकता है इसे गोंद के समान ही संग्रहित किया जाता है। यह दो प्रकार की होती है।

1. श्वेत, 2. कृष्ण

श्वेत हींग के वृक्ष से निकला रस (निर्यास) सुगंधित एवं हीरा के समान चमकदार श्वेत होता है। यह फिटकरी (स्फटिक) के समान श्वेत एवं चमकदार होता है। इसे ''हीरा हींग'' कहते है। इसी का उपयोग औषधि में होता है।

कृष्ण जाति का निर्यास दुर्गन्धित होता है। इसे हींग या हींगडा कहते हैं।

संग्रह विधि- वसंत ऋतु में हींग वृक्ष के तने में चाकू से त्वचा छीलकर चीरा लगा देते हैं । वहाँ पर जो निर्यास संचित होता है उसे धीरे धीरे निकाल लेते हैं। इस तरह से बार बार संचित कर निर्यास निकालते हैं।

शुद्ध हींग की परीक्षा :- 1. जल में डालने पर जल दुग्ध जैसा हो जाता है, एवं कोई भी भाग तल में नहीं बैठता है। तो हींग शुद्ध है ऐसा मानें।

2. माचिस की काड़ी जलाकर हींग पर रखें। शुद्ध हींग की डली जल जायेगी। उसका वर्ण श्वेत, गंध तीक्ष्ण तथा स्वाद कटु होगा।

हींग का शोधन :- हींग को गर्म घी में भूनकर (तलकर) निकालने से हींग शुद्ध हो जाती हे। तभी इसका उपयोग करना चाहिये।

गुण धर्म :- हींग हल्की गरम, रूचिकर, तीक्ष्ण, वातकफ एवं शूल नाशक है। यह समस्त

उदररोग अफारा अनाह एवं कृमि नाशक है। नेत्रों एवं हृदय के लिए हितकारी है। विवन्ध (कब्ज) को दूर करती है।
पित्तवर्धक है। यह विपाक में एवं रस में दोनों में ही कटु है।

औषधीय प्रयोग :- उदर शूल में

1. अपचन एवं अफारा होने पर दूषित अन्न की डकारें आती है या खट्टी खट्टी डकारें आती है। या थोड़ा थोड़ा दस्त होता है। एवं उदर में वायु भरी हो तो हींग का चूर्ण घी में मिलाकर चांटने से लाभ होता है। या हिंग्वाष्टक चूर्ण या शिवक्षार पाचनचूर्ण घी मिलाकर चांटने से लाभ होता है। पेट एवं पेडू पर हींग को जल में या दूध में घोलकर लेप करने से भी लाभ होता है। पेट दर्द में एरन्ड तेल या तिल तैल लगाकर थोड़ा (हल्का सेंक) भी कर सकते हैं।
2. भोजन के 3-4 घंटे उपरान्त उदर में शूल होता हो तो 4 मिली.ग्रा. हींग 15 मिली. ग्रा. सोड़ा बाई कार्व एक ग्राम जीरे का चूर्ण 1.5 चम्मच शक्कर का सीरा के एवं 1 चम्मच घी के साथ सेवन करें। कुनकुना जल पियें।
3. हींग 5 मिली.ग्रा. कूठ चूर्ण 3 ग्राम वायविडंग चूर्ण 3 ग्राम गर्म पानी के साथ सेवन करें।
4. वायु गोला में हींग 4 मिली. ग्राम गर्म जल के साथ सेवन करें। इससे आमाश्य एवं आंतो को उत्तेजना मिलती है। दस्त साफ होता है। पेट का फूलना, उदरशूल, कब्जियत, आमाश्य एवं आंतो की शिथिलता अपचन, कृमि रोगों में हींग बहुत गुणकारी है कृमि रोगों में हींग अजवाइन एवं एलुवे के साथ भी देते हैं। आंतो के रोगों में एवं कृमि रोगों में हींग मिश्रित जल का एनीमा भी लगाते हैं।
1. दंतशूल पर - दांतो में वेदना या मुंख रोगों पर मुख में सरसों का तिल तैल 2-3 चम्मच 5 से 10 मिनिट तक रखें। मुख को हिलाते रहें। फिर थूक दें। फिर कुनकुना जल में हींग घोलकर इसी तरह से मुख में रखे फिर थूक दें। यह गण्डूष विधि है। सभी तरह के मुख रोग, दंत रोग, गले एवं जिह्वा के रोगों में लाभप्रद है।
2. दांत में कीड़े लगने पर 1 मिली. ग्रा. हींग रूई में लपेटकर दांतो से दबायें। कृमिदंत शूल होने पर यह प्रयोग कुछ दिन लगातार करें। एवं ऊपर लिखी हुई गण्डूष विधि भी करें।

मक्कल शूल पर- प्रसूति उपरान्त हींग अजवाइन देने से गर्भाशय का संकुचन होता हे एवं परिस्त्राव साफ निकलता है। प्रसूता स्त्रियों को हींग, हिग्वाष्टक चूर्ण या हिंग्वादी वटी अवश्य दें। इस समय हींग एवं अजवाइन की घूनी भी देते हैं। यह कृमि नाशक है।

मूत्रावरोध पर- हींग 2 मिली. ग्रा. छोटी इलायची चूर्ण 1 ग्राम दिन में 3 बार जल से दें।

कर्ण रोगों पर- हींग की चने बराबर डली लेकर रुई में लपेटकर कान के छेद में रखने से लाभ होता है। सर्दी जुकाम में भी लाभ प्रद है। थोड़ी देर में हींग सूंघते रहने से बंद नाक खुल जाती है। सर्दी जुकाम में लाभ होता है। कान दर्द, कर्णनाद, बहिरापन (कम सुनने) में लाभ होता है।

श्वांसरोग एवं वातज कास (कुकर खांसी)- घी में हींग मिलाकर या हिग्वाष्टक चूर्ण या शिवक्षार चूर्ण घी के साथ बार-बार चांट चांट कर लेने से आराम होता है। इस समय हींग को पानी में घोलकर छाती (सीने) गले, कान, के आसपास लेप करने से एवं हींग सूंघने से भी वातज

खांसी में आराम होता है, हींग में रहने वाला उड़नशील तेल श्वास, नालिका द्वारा, त्वचा एवं मूत्रमार्ग द्वारा बाहर निकलता है। यह तेल जिस मार्ग से निकलता है, उस मार्ग में उत्तेजना देता है। इसमें कफ निः सारक गुण होने से श्वांस नलिका में जमा हुआ कफ पतला होता है, उसकी दुर्गन्ध नष्ट होती है, एवं उसमें रहने वाले जीवाणुओं का नाश होता है । श्वांसोच्छवास के केन्द्र स्थान की क्रिया कुछ धीमी हो जाती। जिससे वातज कास कम हो जाती है। ऐसी दशा में हींग का प्रयोग करने से मज्जा तन्तुओं के लिए बलदायक एवं संकोच विकास प्रतिबंधन मानी जाती है, इससे आमाशय एवं आंतों की पेशियों को बल मिलता है। दस्त साफ होता है। फुफ्फस के रोगों के लिए हींग बहुत गुणकारी होती है। प्रौढ़ मनुष्यों की श्वांस नलिका की पुरानी सूजन, दमा, कुक्कर खांसी, छोटे बच्चों की श्वांस नलिका की सूजन तथा फुफ्फुस (फेंफडों Langs) के रोगों के पश्चात होने वाली सूखी खांसी में हींग खाने एवं लेप लगाने से हींग की सुगंध लेने से लाभ होता है। इससे कफ उत्पन्न होना बंद हो जाता है। एवं पुराना कफ पतला होकर निकल जाता है। अतः सभी तरह के फुफ्फुस रोगों पर हींग अति लाभप्रद है।

विशिष्ट योग- 1. हिंग्वाष्टक चूर्ण एवं शिवक्षार पाचन चूर्ण समस्त उदर एवं फुफ्फुस रोगों पर
2. रजः प्रर्वतनी वटी- गर्माश्य अन्य रोगों पर, मासिक घर्म की विकृति पर
3. हींग कपूर वटी- हिस्टीरिया एवं उदर रोगों पर
4. अतिसार हर वटी- अतिसार पर
5. हिंग्वादी क्वाथ- सभी प्रकार के वातज शूलों पर
6. हिंग्वादी गुटिका-
7. हिंग्वादी घृत-

जैनोदय का शुद्ध घी

विभिन्न लोगों की विभिन्न रूचि को देखते हुए अब घी 3 प्रकार की विविधताओं में उपलब्ध हैं।

1. देशी गिर गाय के दूध के माखन से (बिलो कर) बनाया हुआ घी -1200/- रूपये प्रतिकिलो।
2. (गाय भैंस का) माखन से (बिलो कर) बनाया हुआ घी 700/- रूपये प्रतिकिलो।
3. भैंस के दूध की क्रीम से बनाया हुआ घी 450/- रूपये प्रतिकिलो

आप आवश्यकता अनुसार मंगा सकते हैं।

मध्यप्रदेश की गौ संवर्धन योजना से आर्थिक मदद प्राप्त कर 80 परिवार गाय-भैंस का पालन कर प्रतिदिन शुद्ध घी तैयार करते हैं एवं परिवारों में से 12 परिवार सीमित मात्रा में सोले का घी तैयार करते हैं। यह घी हम व्यापारिक दृष्टि यासोच के आधार पर विक्रय नहीं करते अपतुिहमारा प्रयास मात्र आप तक शुद्ध वस्तु पहुंचाने का एवं इसके द्वारा गौशालाओं के संरक्षण एवं सवर्धन का है।

सम्पर्क करें : 7999646061

श्री जैन धर्म बनाम कर्म सिद्धांत

ये सर्वविदित है कि जैन धर्म पूर्णतः वैज्ञानिक एवं कर्म सिद्धांत पर आधारित है।
''करता ना धरता कोई है। अणु अणु स्वयं स्वाधीन है।''

✻ बरखा विवेक बड़जात्या ✻

वर्तमान में प्रायः देखा जा रहा है कि जैन समाज के धार्मिक भव्य आयोजन जो कभी दुर्लभ होते थे अब आम हो चले हैं। जगह-जगह नव निर्माण, खण्डित होती प्राचीन धरोहर को नजर अंदाज कर रहे हैं। धर्म के मायने कुछ भिन्न से बदलते से नजर आ रहे हैं। व्हाटसप आदि सोशल मिड़िया पर अपवाद स्वरूप कुछ जैन साधु संतों के अविवेक की कृत्य हमारे गुरुओं के सम्मान को ठेस पहुंचा रहे हैं।

इससे भी ज्यादा शर्मनाक बात तो तब है जब जिन शासन के प्रणाम योग्य पूज्य नायक को अपने संघ को चलाने के लिए भौतिक संसार का सहारा लेकर व्यवसाय कर अपनी आजीविका अर्जित करना पड़े ? मन बहुत व्यथित होता है। आज वैभव सम्पन्न समाज के स्नेहल साधु की तप साधना के मार्ग ऐसी रूकावटे आएँ।

परोक्ष रूप से ऐसे साधुओं के संपर्क में आने से धार्मिक पुण्यार्जक दान की भावना आहत होती है जब समाज का अर्थ (धन) धार्मिक अनुष्ठानों तंत्र-मंत्र ज्योतिष के नाम से सिद्ध पुरुष द्वारा सहयोग राशि घोषित की जाए अर्थात दान राशि ली जाए। परन्तु क्या किसी के भोजन करने से हमारा स्वयं का पेट भर सकता है ? कदापि नहीं जैन धर्म कर्म सिद्धांत पर आधारित है। जो पुण्य अर्जन होगा वो हमारे स्वयं के द्वारा शुद्ध सात्विक रूप से किये धार्मिक कृत्य से होगा। क्योंकि उसमें हमारी स्वयं की निर्मल भावना होगी जो हमारे उद्देश्य को फलित करेगी।

धर्म को अपनी कमजोरी ना बनने दें अपनी आस्था अपने विश्वास को स्वयं अंजाम दें। जैन ज्योतिष भी आपको कर्म करके पाप कर्म का क्षय कर पुण्य अर्जन की सलाह देता है। क्योंकि सिर्फ पैसे से पुण्य नहीं मिलता।

धर्म में विश्वास करें, अंधविश्वास नहीं। जैन धर्म का महामंत्र णमोकार का शांत चित्त से अंर्न्तध्वनि के साथ उच्चारण आपको शांति और सुख देगा। जो हमारे जीवन को रोमाचिंत करेगा। भक्ताम्बर जी जैसे महान काव्य का अपने स्वयं के मुख के शुद्ध उच्चारण से जो फल मिलेगा। वो उसके एसेसरीज, पेण्डल आदि धारण करने से नहीं मिलेगा।

अतः मेरी सोच है , समाज में अंध श्रद्धा और विश्वास की परिस्थितियाँ निर्मित होने से रोकें जो कि हमारे समाज के पतन का कारण बन सकता है। जैन निष्पक्ष सनातन धर्म है। इसकी नींव को कमजोर होने से रोकना वर्तमान पीढ़ी का कर्तव्य है । यही सच्चा धर्म कहलायेगा।

दान देना हो... तो स्वयं किसी प्राचीन जैन धरोहर की जिम्मेदारी ले लेना, पूजन करना हो तो स्वयं अष्ट द्रव्य से थाल सजाकर बंधुओं को अपने साथ शामिल कर लेना, बड़े-बड़े आयोजन में कभी किसी गरीब को इन्द्र बनने का मौका दे देना स्वयं इन्द्र तुम्हारे सामने नत मस्तक हो जाएंगे। धन तो तुम यूँही लगा सकते हो। बोली में कभी तप की बोली लगाना- भाव निर्मल हो जाएंगे। नग्न दिगम्बर साधु जो अभिमान है कभी रूपये देकर उनको अपने कर्तव्य की इतिश्री मत कर लेना। स्वयं आगे से आगे उनकी व्यवस्थाएँ लगा जैन भाई बस इतना करना हमारे समाज का मान बनाए रखना

कविता

मोह लोभ के अंधयारे में

रचियताः कांति कुमार जैन करुण खिमलासा

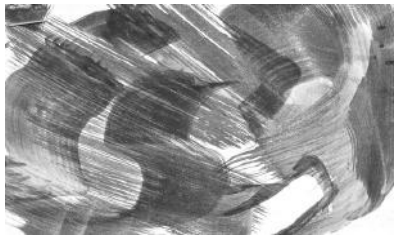

मोह लोभ के अंधयारे में , सम्यक् दीप जलाया।
त्यागें राग द्वेष को बन्धु,सद् गुणभाव बनाना।।
जीवन कितने पाये हमने,
भव वन में भटकाये।
कभी धर्म को ध्याया नाहीं,
कितने दुख उठाये।।

नर भव मिला धर्म से बन्धु, अब इसको अरे ! जगाना।
मोह लोभ के अंधयारे में , सम्यक् दीप जलाना।।
करो प्रभु की भक्ति उर से,
दर्शन पूजन अब करना।
भाव धर्म का छिपा हुआ है,
धर्म पुन्य से है मरना।।

पाया क्षण यह है अमूल्य औ, सुख समता को पाना।
मोह लोभ के अंधयारे में , सम्यक् दीप जलाया।।
पर वस्तु से राग न रखना,
यही धर्म का काम है।
जिसने त्यागा है वैभव को,
मुक्ति पथ का धाम है।।

बढ़ते चले मुक्ति के पथ पर, औं सम्यक् भाव बनाना।
मोह लोभ के अंधयारे में , सम्यक् दीप जलाना।।
कभी निराश न होना चेतन,
दुख आये तो सहना।
प्रभुवर की तुम भक्ति करना,
मोक्ष मार्ग पर चलना।।

एक दिन करूण नहीं होंगे तुम, सुख का पंथ बनाना।
मोह लोभ के अंधयारे में, सम्यक् दीप जलाना।।

विवाह पूर्व फिल्मांकन मर्यादा के विपरीत घ्रणित कार्य।

❊ विजय कुमार जैन (राघौगढ़) ❊

प्राचीन वैदिकि संस्कृति में व्यक्ति के जीवन में सोलह पवित्र संस्कारों का उल्लेख है। इनमें एक प्रमुख वैवाहिक संस्कार है । युवक युवती के शुभ विवाह से पूर्व ग्रह नक्षत्र एवं जन्म कुण्डली के मिलना का नियम है।

हमारी भारतीय परंपरा यह रही है जन्म कुण्डली के मिलना के बाद ही रिश्ते तय होते रहे हैं । पाणिग्रहण संस्कार या शुभ विवाह जिसके नाम में पहले शुभ शब्द लगा है इसमें अनेक विकृतियों अथवा कुप्रथाओं का समावेश हो गया है । जिनके कारण पवित्र भारतीय संस्कृति अथवा संस्कार कलंकित हो रहे हैं।

वर्तमान में आयोजित होने वाले वैवाहिक कार्यक्रमों को जो स्वरूप हम देख रहे है उससे लगता है पवित्र मांगलिक कार्यक्रम का रूप विकृत हो गया है । मांगलिक कार्यक्रमों में बढ रही फूहड़ता से अनेक विघ्न एवं अमंगल हो जाते हैं। वैवाहिक कार्यक्रमों में वैभव प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा में पैसे की बर्बादी तो होती ही है, जिसकी हैसियत वैभावशाली शादी में जेव से पैसा लुटाने की नहीं है वह भी अपने प्रति द्वंद्वी को नीचा दिखाने बाजार से उधार लेकर जोरशोर से शादी कर रहा है।

शुभ विवाह के आयोजन में जो वैभव प्रदर्शन एवं फूहड़ता होती है वह सर्वथा स्वागत योग्य नहीं है। अभी तक शुभ विवाह उपरांत नवयुगल हनीमून मनाने किसी पर्यटन स्थल या हिल स्टेशन पर जाकर रंगरलियां मनाते थे । अब इसमें एक और कड़ी जुड़ गई है। नवयुगल जिनका शुभ विवाह निकट भविष्य में होना है वे शुभ विवाह से कुछ दिन पूर्व किसी पर्यटन स्थल या ज्यादा सम्पन्न है तो विदेश जाते हैं। वहाँ कुद दिन आलीशन होटल में ठहरते हैं। उनके पल पल की गतिविधियों का फिल्मांकन या वीडियो शूटिंग किया जाता है। इस नई नवेली रश्म का नामकरण प्री वैड़िंग शूट दिया गया है।

नवयुगल जो विवाह पूर्व रंगरलियां मनाने जाते हैं उनकी यात्रा लगभग 7 से 10 दिन की होती है। जिस दिन अपने निवास से प्रस्थान कार या हवाई जहाज से करते हैं उसी क्षण से वीडिया शूटिंग प्रारंभ हो जाती है। जिस होटल में नवयुगल एक ही शूट में ठहरते है वहाँ की भी शूटिंग की जाती है। शुभ विवाह के दिन आशीर्वाद समारोह में वैवाहिक स्थल पर बड़ी बड़ी टीवी स्क्रीन लगा कर उक्त विवाह पूर्व फिल्मांकर या प्री वैडिंग शूट को आगन्तुक अतिथियों को प्रमुखता से दिखाया जाता है । इस कार्य को देश के धनाड्य उद्योगपति सम्पन्न वर्ग द्वारा जोर शोर प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

शुभ विवाह जैसे मांगलिक कार्य को भूलकर आज की आधुनिक एवं पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित युवा पीढ़ी लिव एंड रिलेशनशिप, प्रेम विवाह, अन्तर्जातीय विवाह कर रही है। इन सब कार्यों से समाज का नैतिक पतन हो रहा है। जिन परिवारों में शुभ विवाह हो रहे है उनमें युवक युवती विवाह पूर्व फिल्मांकन या प्री वैडिंग शूट पर परिवार जनों की सहमति से जा रहे हैं । प्री वैडिंग शूट में नवयुवक के प्रेमालाप, चुंबन, बैडरूम के अश्लील चित्रों का आशीर्वाद समारोह में टीवी की बड़ी स्क्रीन पर प्रदर्शित कर हम समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं। विवाह पूर्व नवदम्पत्ति को होटल में ठहरकर प्रेमालाप अथवा आलींगन करना उचित है ?

दिगम्बर जैन आचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि पुंगव सुधासागर जी महाराज का कहना हैं युवा पीढ़ी सहशिक्षा एवं परिवार द्वारा उन्हें स्वच्छंदता देने से संस्कार विहीन और पथभ्रष्ट हो रही है। आपका कहना है युवा पीढ़ी को संस्कार विहीन बनाने के लिए अभिभावक सबसे ज्यादा दोषी है। अभिभावक अपने लड़के या लड़की को उच्च शिक्षा लेने एवं नौकरी करने उन्हें स्वच्छंद छोड़ देते हैं।

परिवार का नियंत्रण नही होने के कारण युवा पीढ़ी निरंतर पाश्चात्य संस्कृति की और आकर्षित होकर स्वयं समाज एवं देश का नैतिक पतन कर रही है।

हम मुख्य रूप से विवाह पूर्व फिल्मांकन अथवा प्री वैडिंग शूट की चर्चा कर रहे हैं। अभी चल रही कुप्रथाओं से यह सबसे घ्रणित एवं समाज को कलंकित करने वाली कुप्रथा अपने पैर पसार रही है। इस प्रथा का जितना विरोध किया जाये उतना अच्छा होगा। मध्यप्रदेश में माहेश्वरी समाज ने प्री वैडिंग शूट पर प्रतिबंध लगाया है। माहेश्वरी समाज का यह निर्णय स्वागत योग्य है। देश में संस्कृति की रक्षा एवं संस्कारों का हनन न हो इसलिए आवश्यक है। इसको सभी समाजों को प्राथमिकता से रोकना अति आवश्यक है।

विवाह पूर्व इस कार्य को किसी भी स्थिति में उचित नहीं का जा सकता। इस कुप्रथा को बंद किया ही जाना चाहिए।

क्र.	साधु/साध्वी का नाम–पद	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थल / सम्पर्क
1	एलक श्री विनम्र सागर जी महाराज	मुनि श्री प्रबुद्धसागर जी महाराज	श्री दि. जैन मंदिर बनवार जिला जिला दमोह म.प्र. 470664 मो. देवेन्द्र जैन 9584428321
2	एलक सम्पूर्ण सागर जी महाराज	आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज	श्री मल्लिनाथ दि. जैन मंदिर पमारी तह. टुंडला जिला फिरोजाबाद उ.प्र अनिल जैन 9412516633
3	मुनि आज्ञासागर जी महाराज	आचार्यश्री अभिनंदनसागरजी महाराज	श्री दि. जैन मंदिर सीपुर जिला बांसवाड़ा राजस्थान 8094763836
4	मुनि श्री चिदानन्द सागर जी महाराज	आचार्यश्री सुमतिसागरजी महाराज	श्री दि. जैन मंदिर चांदपुर जहाजपुर जिला ललितपुर उ.प्र.
5	उपाध्याय श्री अभिनंदन सागर जी महा.	आचार्यश्री सन्मतिसागरजी महाराज	श्री पार्श्वनाथ दि. जैन चोबीसी जैन भवन स्कीम नं. 70 अलबर राजस्थान 301001 मो. 9462238545 संजय जैन
6	आर्यिकाश्री संगममति माताजी आर्यिकाश्री सुयोगमति माताजी क्षुल्लिका संयोगमति माताजी क्षुल्लिका सम्पर्कमति माताजी	आचार्यश्री सिद्धांतसागरजी महाराज आचार्यश्री सिद्धांतसागरजी महाराज आचार्यश्री सिद्धांतसागरजी महाराज गणिनी आर्यिका संगममति माताजी	श्री दि. जैन मंदिर नलखेड़ा जिला आगर म.प्र.
7	मुनि श्री सुबंधसागर जी महाराज	आचार्यश्री सुधीरसागरजी महाराज	श्री दि. जैन मंदिर अकोला राजस्थान
	आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज	आचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज	श्री दि. जैन मंदिर सोदती जिला बेलगांव कर्नाटक, बाहुबली जी मो. 8660394256

चलो देखें यात्रा

श्री श्रेयांसगिरी (सिरागिरी)

नाम एवं पता :-श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कला तीर्थ श्रेयांसगिरी ग्राम नचना तहसील गुनौर जिला पन्ना (म.प्र.) सम्पर्क : श्री केवलचंद्र सलेहा मो. 09981586873, श्री राजकुमार जैन अध्यक्ष अजयगढ़ मो. 09981091591, 09425025925

सुविधायें : आवास सुविधा में निरन्तर सुधार हो रहा है। संतशाला है भोजन अनुरोध पर उपलब्ध है।

मागदर्शन: पन्ना सतना मार्ग पर पन्ना सतना से 57 किमी. वाया देवेन्द्र नगर सलेहा नगर से 7 कि.मी नचना ग्राम में यह क्षेत्र है। सतना से आने वाले रानोद होकर नचना पहुंच सकते हैं। सतना एवं पन्ना से बसें उपलब्ध हैं। सतना 60, अमानगंज 50, खजुराहो 70, पन्ना 70, अमानगंज 63, नागोद 65, दमोह 105 किमी. / क्षेत्र मार्ग दुरूल्ह होने से नये यात्री दिन में ही सफर करें।
रास्ता पक्का बन गया है।

महत्व एवं दर्शन: तलहटी में एक मन्दिर है। प्राचीन क्षेत्र है नवीनी करण एवं जीणोद्धार जारी है। आचार्य श्री विरागसागर के सन् 1991 के प्रथम चातुर्मास में क्षेत्र सीरागिरी का नाम बदलकर श्रेयांसगिरी प्रचलित हो गया है। क्षेत्र नचनाग्राम के अन्तिम छोर पर एक पहाड़ी पर स्थित है। लगभग 100 सीढ़ी चढने पर उन्नत मान स्तंभ पर चौबीसी अंकित है। पास में कुछ सीढ़ी चढ़ने पर शिखर बंद श्रेयांसनाथ भगवान का मन्दिर है। लगभग 500 सीढ़ियाँ चढ़ने पर कई गुफाओं में पार्श्वनाथ महावीर आदिनाथ प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। कुछ मूर्तियाँ को तलहटी मन्दिर में स्थापित कर दिया गया है। पुरा क्षेत्र हरियाली से आच्छादित रहता है। और तालाब के किनारे होने से विहंगम दृश्य नजर आता है। सतना 25, नागोद13, जसो 12, गंज 3, क्षेत्र एक एतिहासिक पर्यटक स्थल भी हैं। तालाब के दूसरे किनारे पुरातत्व विभाग के आधीन विशेष विशिष्टता लिये चौमुखा शिव मन्दिर है जो अपने आप में अनूठा है। सम्पूर्ण क्षेत्र दर्शनीय एवं रमणीक है। जीर्णोद्धार की वाट देख रहा है। क्षेत्र एक ऐतिहासिक धरोहर है। जिसे प्रचार प्रसार की आवश्यकता है।

समीपवर्ती स्थल :- पन्ना खजुराहो कुंडलपुर वाया अमानगंज।

विशेष :- आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के 3 चातुर्मास पुर्व में हो चुके है। चौथा चातुर्मास 2014 में सम्पन्न हुआ है। सम्पर्क :- ब्र. मोना दीदी श्रेयांसगिरी 09826651534

आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन मे अकालमृत्यु

❊ एलक सिद्धांत सागर महाराज ❊

मृत्यु जीवन का अटल सत्य है जिस प्राणी का जन्म होता है उस प्राणी की मृत्यु निश्चित होती है। किन्तु मृत्यु दो तरह की होती है। 1. स्वकाल मृत्यु 2. अकाल मृत्यु। मृत्यु आयु कर्म के क्षय का नाम है आगम में जीव और शरीर के वियोग का नाम मरण नहीं कहा गया है बल्कि आयु कर्म के क्षय का नाम ही मरण है। आयु के क्षय का नाम मरण है इस आशय का सन्दर्भ समयसार ग्रन्थ में मिलता है।

आउक्खयेण मरणं जीवाणं जिणवरेहिं पण्णतं।

आउंण हरेसि तुमं कह ते मरणं कदं तेसि।।248।। स.सा. बन्धाधि.

आयुष क्षयस्य मरण हेतुत्वात् ।। ध.ध. पु. 1।1।33।234।2।

भगवती आराधना में भी इसी तरह मरण की परिभाषा दी है।

मरणं विगमो विनाशः विपरिणाम इत्येकोऽर्थः ।।9।।

अथवः प्राणपरित्यागोमरणम्।।13।।

अण्णाउगोदये वा मरदि य पुव्वाउणासे वा।। उदधृत 586

अथवा अनुभूयमानायुः संज्ञक पुद्गल गलनं मरणम्।

मरण, विगम, विनाश, विपरिणाम ये सब शब्द एकार्थ वाचक हैं। प्राणों के परित्याग का नाम मरण है अथवा प्रस्तुत आयु से भिन्न अन्य आयु का उदय आने पर पूर्व आयु का विनाश होना मरण है अथवा अनुभूयमान आयु नामक पुदगल का विनाश होने का नाम मरण है।

जैनाचार्यों ने मृत्यु के सम्बन्ध में दो धारायें स्वीकार की है।

1. औपपादिक जन्म वाले, असंख्यात वर्ष आयु वाले जीवों के तथा चरमोत्तम शरीर वाले जीवों के आयु का क्षय अकाल में नही होता है।

2. इन जीवों के सिवाय अन्य जीवों के आयु का अप्रवर्तन हो जाता है। अकाल मृत्यु किसे कहते हैं ? आयु कर्म के अक्रम रूप से एक साथ क्षय हो जाने का नाम अकाल मृत्यु है।

परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज कहते हैं कि गैस सिलेण्डर की तरह आयु कर्म के निषेक जीव में होते हैं और गैस सिलेण्डर के नोजल खराब होने पर एक साथ पूरी गैस निकल जाती है और एक माह चलने वाला गैस सिलेण्डर पांच मिनिट में खाली हो जाता है। इसी तरह जीव का आयुकर्म विष, वेदना, रक्तक्षय, तीव्र भय से शस्त्रघात से, संक्लेश की अधिकता से, आहार और श्वासोच्छवास के रूक जाने से आयु का क्षय हो जाता है इसे ही कदलीघात अथावा अकालमृत्यु कहते हैं। भावपाहुड में गाथा

विसवेयणरत्तक्खय भयसत्थग्गहण संकिलिस्साणं।

आहारूस्सासाणं णिरोहजा खिणए आऊ।।12।। भा. पाहुड

इसी आशय की गा. आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने गो. कर्मकाण्ड के अन्तर्गत भी सृजित करके अकाल मृत्यु का लक्षण और उसके कारणों को स्पष्ट किया है- गा. अवलोकनीय है।

विसवेयणरत्तक्खयभयसत्थग्गह ण संकिले सेहिं।

उस्सासाहाराणं णिरोहदो छिज्जदे आऊ।।57।। गो. क.।।

इसके अतिरिक्त वास अनुप्रेक्षा में

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने गा. तथा स्वामी कीर्तिकेय अनुप्रेक्षा में गा. में भी इन्ही कारणों से अकाल मृत्यु का होना सिद्ध किया है।

अकाल मृत्यु अवश्य होती इस सम्बन्ध में आचार्य वीरसेन , अकलंक देव, विद्यानन्दि जी तथा आ. अपराजित ने एक स्वर में अकाल मृत्यु का अस्तित्त्व अवश्य होता है। इसे सिद्ध किया है। तथा अकाल मृत्यु को सिद्ध करने के लिए आचार्य अकलंक देव ने राजवार्तिक के द्वितीय अध्याय 53वें सूत्र के अन्तर्गत वार्तिक 11-12 में अपने अकाटय तर्क प्रस्तुत किये हैं । उन्होंने कहा है अकालमृत्यु को रोकने के लिए आयुर्वेद में अनेक प्रकार के रसायनों का उपदेश दिया गया है। यदि अकला मृत्यु न हो तो आयुर्वेद का यह उपदेश व्यर्थ हो जाएगा । उसे केवल दुःख निवृत्ति का हेतु कहना युक्त नहीं है । क्योंकि उसमें दोनों ही फल देखे जाते हैं।

अकालमृत्यु व्युदासार्थं रसायनं चोप दिशति, अन्यथा रसायनोप देशस्य वैयर्थ्यम् ।। न चादोऽस्ति । अत आयुर्वेद सामर्थ्यादस्त्यकाल मृत्युः । दुःखप्रतीकारार्थ इति चेत नः उभयथा दर्शनात् ।।12।। कृत प्रणाश प्रसंग इति चेन नः दत्त्वैव फलं निवृत्ते ।।113।। विततार्द्र पटशोषव्रत अयथाकालनिर्वृत्तः पाक इत्ययं विशेषः।

आचार्य विद्यानन्दि जी ने अपने श्लोकवार्तिक में प्रश्न उत्पन्न करते हुए कहा है कि प्राप्तकाल ही खड्गादि के द्वारा मरण होता है । इस शंका का समाधान देते हुए आचार्य कहते है यहाँ काल प्राप्ति से आपका क्या तात्पर्य है ? मृत्यु के काल की प्राप्ति या अपमृत्यु के काल की प्राप्ति। यहाँ दूसरा पक्ष तो माना नहीं जा सकता क्योंकि वह तो हमारा श्री साध्य है और पहला पक्ष मानने पर खड्ग आदि प्रहार से निरपेक्ष मृत्यु का प्रसंग आ जाता है। कहा है- **प्राप्तकालस्यैव तस्य तथा दर्शनमिति चेत् कः पुनरसौ कालं प्राप्तोऽपमृत्युकालं वा, द्वितीय पक्षे सिद्ध साध्यता प्रथमपक्षे खड्गप्रहारादि निरपेक्षत्व प्रसंग ।। (श्लोक वा. 512/53/2/261/16)**

पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज अकालमृत्यु को सिद्ध करने के लिए अनेक तर्क और दृष्टान्त देते हैं उनमें से यह महत्वपूर्ण है- जैसे नल की टंकी का पानी पाइप के माध्यम से जब आता है तब टंकी को खाली होने में 48 घंटे लग जाते हैं और यदि टंकी पर कोई प्रहार कर दे तो टंकी फट जाने पर एक मिनिट में पूरी टंकी खाली हो जाती सिर्फ पाइप में पानी रह जाता है। इसी तरह से अकालमृत्यु होती है एकान्त पक्ष वाले लोगों के द्वारा अकालमृत्यु स्वीकार न करने पर उनसे आचार्य श्री कहते हैं कि कर्म की उदीरणा होती है और आयुकर्म को उदीरणा से बाहर नहीं रखा जा सकता है जब कोई कहता है कि आचार्य श्री व्यवहार से तो अकालमृत्यु होती है किन्तु निश्चय से अकालमृत्यु नहीं होती है। तब आचार्य श्री विनोद पूर्ण ढंग से कहते हैं कि निश्चय से तो मृत्यु ही नहीं होती है भैया। तथा अपनी वे चिर परिचित शैली में अकाल मृत्यु को सिद्ध करने में सफल हो जाते हैं। उनके द्वारा दिये गये अनेक आगम कें प्रमाण और तर्क के सामने एकान्त पक्ष वाले लोग अन्ततः अकाल मृत्यु को स्वीकार कर ही लेते हैं।

अतः जैन सिद्धान्त ग्रन्थों में अकालमृत्यु अन्वय और व्यतिरेक का अनुसरण करने वाले टंकी के आधार पर अकालमृत्यु सिद्ध होती है।

आगम दर्शन

समयसार में निर्मल आत्म चिंतन

भद्रबाहु स्वामी की परम्परा में गुणधर नामक मुनि हुए । तद्उपरांत नागस्ती फिर यतिनायके हुए। तद्उपरांत आचार्य कुंदकुंद देव एक अध्यात्म सिद्धांत और दर्शन के महान आचार्य हुए । आंधप्रदेश के कौण्ड-कुण्डम आचार्य कुन्दकुन्द का जन्म स्थान है। आचार्य कुंदकुंद देव का उल्लेख शिलालेखों एवं ग्रंथों की प्रशस्तियों में एवं पाण्डुलिपियों में प्राप्त होता है। आचार्य कुंदकुंद स्वामी के बारे में अनेक किम्बवदंतियाँ हैं। उनमें एक आचार्य श्री की विदेह क्षेत्र जाने वाली भी प्रसिद्ध किम्बदंती है। यह कहा जाता है कि आचार्य कुंदकुंद देव अपने रिद्धि के बल पर सीमधंर तीर्थंकर के समोवशरण में गये थे। और उनकी देशना सुनकर उन्होंने परमागम ग्रंथों का सृजन किया। उनके सृजन में समयसार ग्रंथ अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं अध्यात्म चिन्तन में अग्रणी है।

प्रस्तुत ग्रंथ में कुल 415 गाथाएँ हैं तथा आचार्य जयसेन की टीका में यह संख्या अधिक तक हो जाती है। प्रथम इस ग्रंथ की पीठिका 14 गाथाओं में है। मंगलाचरण से प्रारंभ करके स्व समय, परसमय का स्वरूप तथा समय की एकत्व निश्चभगत में बंद कथा को विषमवाद का कारण एवं एकत्व की दुर्लभता बताते हुए एकत्व सप्रमाण देने के प्रयास के साथ आचार्य कुंदकुंद देव कहते हैं कि यदि मैं चूक जाऊँ तो छल ग्रहण नहीं करना। निर्मल शुद्ध आत्मा का स्वरूप बताते हुए शुद्ध आत्मा कौन है इस प्रश्न के उत्तर में दर्शन ज्ञान चारित्र को धर्म कहा है। परमार्थ का ही उपदेश देना चाहिये। किन्तु यह परमार्थ का उपदेश व्यवहारनय के बिना संभव नहीं है। व्यवहार नय को परमार्थ का प्रतिपादक सिद्ध करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि परमार्थ का आश्रय लेने वाला ही सम्यक् दृष्टि होता है । किन्तु व्यवहारनय किसी को किसी काल में प्रयोजनभूत होता है । अतः इसका सर्वथा निषेध नही किया जा सकता है। सात तत्त्व का सिद्धांत सम्यक्त्व का कारण है। इस पीठिका को आगे बढ़ते हुए आचार्य श्री ने शुद्ध नय से आत्मा का स्वरूप बताने के लिए दो गाथाओं का प्रयोग किया है। तथा दर्शन ज्ञान चरित्र को साधक भाव रूप कहा है।

आत्मा को प्रमाणनय से भेद अभेद रूप कहा है। आत्मा के अप्रतिबुद्ध होने के कारण एवं अप्रतिबुद्ध के पहचान के चिन्ह तथा अप्रतिबुद्ध को समझने के लिए सूत्र गथा देते हुए अप्रतिबुद्ध जीव का कथन प्रस्तुत किया है। अप्रतिबुद्ध नय विभाग को नहीं जानता है। कि शरीर और आत्मा में अंतर क्या है। शरीर और आत्मा का अंतर समझे बिना निश्चय स्थिति नहीं होती है। शरीर को ही आत्मा मानने वाले अप्रतिबुद्धों का निराकरण किया गया है । भाव्य भावक का भेद विवेक ज्ञेयभाव भेद तथा आत्मा के स्वरूप को एक शुद्ध ज्ञान दर्शनमय बताया है।

जीव अजीव अधिकार प्रस्तुत ग्रंथ का पहला अधिकार है। जीव और अजीव का भेद बताने के लिए अनेक प्रकार के बिन्दु दिए हुए हैं। पुद्गल से भिन्न आत्मा की उपलब्धि का विरोध करने वाले पुरुष को उपदेश देते हुए कहा है कि आत्मा गुणस्थान, मार्गणा स्थान तक स्पर्श रस गंध वर्ण कर्म नोकर्म से रहित आत्मा बताया है। वर्ण आदि भाव जीव के नहीं हैं। वर्ण आदि के साथ जीव का तादत्म संबंध नहीं है। रागादि भाव भी जीव के नहीं हैं।

राग,द्वेष, मोह, प्रत्यय, कर्म, नोकर्म, वर्ग, वर्गणा, स्पर्धक, अध्यात्म स्थान, अनुभाग स्थान, योगस्थान, बन्धस्थान, उदयस्थान, मार्गरणास्थान, स्थितिबन्ध स्थान, संक्लेश स्थान, विशुद्धि स्थान और संयमलब्धि स्थान भी पुदगल कर्म-पूर्वक होते होने से सदा ही अचेतन होने से पुदगल ही हैं। इस तरह से जीव अजीव अधिकार 39 गाथा से लेकर 60 गाथा तक निबद्ध हैं। कर्ता कर्म अधिकार समयसार का विशिष्ट अधिकार है । इस अधिकार के अंतगर्त आत्मा अपने परिणामों का कर्ता होता है। पर का कर्ता नहीं होता। जब रागद्वेष की परिणति समाप्त हो जाती है तब आत्मा ज्ञान मात्र से ही आर्शव करता है। ज्ञानी आत्मा की पहचान कैसे होती है इसे बताते हुए जीव के साथ पुदगल कर्ता कर्म भाव कैसे होता है ? अर्थात नहीं होता है। जीव और पुदगल कर्ता तो नहीं होते हैं किन्तु एक दूसरे के निमित्त मात्र होते हैं। अनेक प्रमाण और नयों के माध्यम से विक्रिया वादी मत का खण्डन किया है। तथा मिथ्यादर्शन, क्रोध, मान, माया, लोभ अज्ञान आदि को आत्मा का विकार बताया है। ज्ञान ही ज्ञान का कर्ता होता है। परभावों का कर्ता नहीं होता है। पुदगल कर्म का कर्ता कौन होता है इस प्रश्न का जवाव देते हुए आचार्य श्री ने निमित्त नैमितिक संबंध बताया है । प्रकृति पुरुष अपरिणामीवाद सांख्य मत का खण्डन किया है। ज्ञानी ज्ञान और अज्ञानी अज्ञानमय होता है। ज्ञानी के समस्त भाव ज्ञानमय होते हैं। जीव से पुदगल का परिणाम पृथक होता है। नय पक्षपात से दूर साधक ही समयसार का अनुनव करता है।

पुण्य और पाप अधिकार में पुण्य पाप का स्वरूप तथा इनमें स्वभान की एकता दोनों को लोहे और सोने की बेड़ी कहा है। मोक्ष के हेतु और कर्म के हेतु बताते हुये राग को बन्ध का कारण और वैराग्य भाव को मोक्ष का कारण बताया है। कर्म बन्ध के कारणों और मोक्ष के कारणों पद परमार्थ से भी विचार किया है। पुण्य मोक्ष का हेतु नहीं है किन्तु सम्यक दर्शन सम्यकज्ञान सम्यक चारित्र मोक्ष का कारण है । तदुपरान्त 17 गाथाओं में आस्त्रव अधिकार का वर्णन किया है। आस्त्रव का स्वरूप ज्ञानी के आस्त्रव का अभाव बताते हुए राग द्वेष मोह को ही आस्त्रव कहा है। संवर अधिकार में 12 गाथायें हैं । कर्म संवर का उपाय भेद विज्ञान बताया है। भेद विज्ञान से ही शुद्धात्मा और संवर की प्राप्ति होती है। संवर होने का क्रम भी बताया है। निर्जरा अधिकार में 44 गाथायें हैं। द्रव्य और भाव निर्जरा का स्वरूप बताते हुये ज्ञान और वैराग्य की सामर्थ को बताया है। सम्यकदृष्टि जीव स्व और पर को जानता है। रागी जीव सम्यक दृष्टि नहीं हो सकता है। ज्ञानी पर का ग्रहण नहीं करता है। ज्ञानी के धर्म का परिग्रह नहीं होता है। ज्ञानी का आहार पानी आदि का परिग्रह नहीं होता है ज्ञानी कर्म उदय उपभोग की वांछा नहीं करता है। अनेक दृष्टान्तों से अपनी बात को पुष्ट करते हुये आचार्य श्री ने सम्यकदर्शन के आठ अंगो का गम्भीर वर्णन किया है। निर्जरा अधिकार के बाद 51 गाथाओं में बन्ध अधिकार का वर्णन किया है। बन्ध के कारण मिथ्यात्व अज्ञान कषाय और योग को माना है और एकमात्र राग को ही बंध का कारण माना है । हिंसा और अहिंसा की सूक्ष्मता और अध्यवसान का स्वरूप तथा अज्ञान को अध्यवसान का कारण माना है। बाह्य वस्तु बन्ध का कारण नहीं है। अध्यवसान परिणाम स्वयं अपना कार्यकरता है। जिनके अध्यवसान नहीं होता हे। उनके बन्ध नहीं होता है । व्यवहार निश्चय के प्रतिसेद्य प्रतिसेधक भाव कहा है। आत्मा के रागादि परिणाम अकारक ही होते हैं। द्रव्य और

भाव बन्ध निमित्त नैमित्क सम्बन्ध होते हैं। समयसार के उपरांत मोक्ष अधिकार में 20 गाथाओं के माध्यम से आत्मा और बंधक को अलग अलग करने का नाम मोक्ष है। बंध छेदन ही मोक्ष का स्वरूप है। आत्मा को प्रज्ञा से ग्रहण किया जाता है। आत्मा शुद्ध चेतन भाव से ग्रहण होता है। अपराध क्या है। अपराध का स्वरूप बताते हुए प्रतिक्रमण आदि को विषकुंभ और अमृतकुंभ कहा है। समयसार ग्रंथ का अंतिम अधिकार सर्वविशुद्ध ज्ञान अधिकार है। प्रस्तुत अधिकार में आत्मा को अकर्ता सिद्ध करने के लिए सात गाथाओं का प्रयोग किया गया है। और आत्मा भोक्ता नहीं है इसे सिद्ध करने के लिए आचार्य श्री ने अपने तर्क दिए हैं। अज्ञानी ही भोक्ता होता है ज्ञानी नहीं / इस विषय को स्पष्ट करने के लिए सात गाथाओं का प्रयोग किया है। जो आत्मा को परद्रव्य का कर्ता मानते हैं। वे मिथ्यादृष्टि होते हैं। स्वाद्वाद की दृष्टि से आत्मा भाव कर्म का कर्ता होता है। आत्मा सर्वथा अकर्ता नहीं है। इसे सिद्ध करने के लिए आचार्य श्री ने ग्यारह गाथाओं का प्रयोग किया है। अनेकांत के माध्यम से क्षणिकवाद का निषेध किया है। इक्कीस गाथाओं के माध्यम से प्रस्तुत विषय का विषद विवेचन किया है। ज्ञान और ज्ञेय सर्वथा भिन्न है। आत्मा के ही दर्शन, ज्ञान, चारित्र होता है। परद्रव्यों के नहीं। स्पर्श रस गंध वर्ण और शब्द ये पुद्गल की परिणति है आत्मा की नहीं / प्रतिक्रमण प्रात्याख्यान और आलोचना प्रवर्तमान आत्मा का चारित्र है। ज्ञान चेतना और अज्ञान चेतना का फल बताया है। ज्ञान को कर्तृत्व से भिन्न बताया है। शरीर में चिन्ह मोक्ष का कारण नहीं है। मोक्ष का कारण तो सम्यक दर्शन, सम्यकज्ञान सम्यक चारित्र है। अंत में व्यवहारनय लिंग को मोक्षमार्ग कहता है। समयसार पढ़ने का फल उत्तम सुख बताया है। इस तरह नौ अधिकार और 415 गाथाओं में अध्यात्म से परिपूर्ण समयसार ग्रंथ आचार्य कुंदकुंद के द्वारा दिया गया अनमोल रत्न है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकतेहैं ।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया,संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 8989121008

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

कविता

अरिहंत प्रभो, अरिहंत प्रभो

❊ सुभाषचंद्र सरल (अशोकनगर)❊

अरिहंत प्रभो, अरिहंत प्रभो, तुम मेरे मन की पीर हरो
संसार भाव में अटका हूँ, भव बन्धन की जंजीर हरो
अरिहंत प्रभो, अरिहंत प्रभो.....

संसार मार्ग में उलझा मन,
रोज ठोकरें खाता है
नहीं चलूँगा इस रस्ते,
फिर लौट वहीं पर जाता है

तारणहार हो तुम जग के, अब मेरा भी उद्धार करो।
अरिहंत प्रभो, अरिहंत प्रभो.....

यह लोभी है, यह कामी है
यह रोगी है, अभिमानी है
यह मैं-मैं, मैं ही करता है
बस मरने से ही डरता है

इस निन्दक नालायक मन में, निजानंद आनन्द भरो।
अरिहंत प्रभो, अरिहंत प्रभो.....

मैं जान गया, मैं समझ गया
निज आतम, शुद्ध मानकर उलझ गया
आभार नहीं ,तेरा माना,
प्रभो तुमको भी नहीं पहचाना

इस मूरख अज्ञानी मन में, सत् ज्ञान सरल संचार करो।
अरिहंत प्रभो, अरिहंत प्रभो.....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अगस्त 2018

जो अकाम निर्जरा करें

प्रथम-
सन्त बने अरु तप करते हैं
पर मन को मार नहीं पाते हैं
आत्म देह का बोध न उनको
जो अकाम निर्जरा करें

श्रीमति रजनी जैन (राहतगढ़)

द्वितीय-
पल-पल कर्म झरा करते
पर उससे ज्यादा वापस आते
उल्टा तप तन से करें
मूरखजन जो अकामनिर्जरा करें।

श्रीमति निकिता जैन (गुना)

तृतीय-
दुनिया को मोहित करने
निज नये उपाय सदा करते
अग्नि और धुआँ को सहते
फिर भी बाहर बाहर रहते
तपोसाधना मनमानी है
फिर भी कर्म न एक झरे
अज्ञानी जन बाहर लड़ते
जो अकाम निर्जरा करें।

श्रीमति रूचि जैन (सागर)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
जुलाई 2018 के विजेता

प्रथम : सौ. सरला रमेशराव कस्तुरे (चंद्रपुर)
द्वितीय : श्रीमति शशि प्रभा लुहाडिया (इन्दौर)
तृतीय : श्रीमति अंशु शाह (सागर)

वर्ग पहेली क्र. 225
जुलाई 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमति रजनी सेठी (सागर)
द्वितीय : सौ. रजनी विमलचंद जराले (महाराष्ट्र)
तृतीय : श्रीमति शकुन्तला जैन (देवास)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : अगस्त 2018 का हल

01. 30 जून 1968
02. 22 नवम्बर 1972
03. नसीराबाद राजस्थान
04. आचार्य ज्ञानसागर जी
05. आर्यिका पूर्णमति जी
06. आर्यिका अन्तरमति जी
07. मुनि प्रणम्य सागर जी
08. मुनि उत्तम सागर जी
09. आर्यिका पूर्णमति जी
10. आर्यिका पूर्णमति जी
11. मुनि अजित सागर जी
12. मुनि चन्द्रसागर जी
13. मुनि चन्द्रसागर जी
14. मुनि कुन्थुसागर जी
15. मुनि श्री प्रसाद सागर जी
16. मुनि श्री कुन्थु सागर जी
17. आर्यिका श्री मृदु मति माताजी
18. आर्यिका पूर्णमति माताजी
19. आर्यिका पूर्णमति माताजी
20. आर्यिका पूर्णमति माताजी
21. चौदह
22. आंकलन
23. द्रोणागिरी
24. सागर
25. द्रोणागिरी
26. नैनागिर
27. कुण्डलपुर
28. नरसिंहपुर
29. कुण्डलपुर
30. जबलपुर
31. श्रवणबेलगोल कर्नाटक
32. 9 से 11 जुलाई 2018
33. ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर
34. करणानुयोग विद्याविशारद
35. श्री महावीर अष्टगे
36. शांता स्वर्णा
37. दीक्षा गुरु महिमा विशेषांक
38. शोध साहित्य विशेषांक
39. वर्षायोग विशेषांक
40. प्रवचन विशिष्ट विशेषांक
41. परिवार दर्शन विशेषांक
42. सामाजिक राष्टीय शैक्षणिक अर्थ चिंतन विशेषांक
43. सिद्धांत न्याय चिंतन विशेषांक
44. नजर नजरिया विशेषांक
45. साधना/चर्या वेशिष्ट्य विशेषांक
46. मूकमाटी विमर्श विशेषांक
47. तीर्थ संरक्षण संवर्धन विशेषांक
48. आयोजन समायोजन विशेषांक
49. चेतन कृति विशेषांक
50. पचास

पुराण प्रेरणा

आत्मकल्याण का अभिलाषी पंडित

प्रायः श्रेयोऽर्थिनो बुधाः
प्रायः पण्डितजन आत्म कल्याण के अभिलाषी हुआ ही करते हैं।

धिगेनां संसृतिस्थितिम्।
संसार की इस स्थिति को धिक्कार हो।

समाधये हि सर्वेषां परिष्पन्दो हितार्थिनाम्।
हितैषी पुरुषों की सम्पूर्ण चेष्टायें समाधि अर्थात दूसरों के विघ्न दूर करने के लिए ही होती हैं ।

निर्द्वन्द्ववृत्ति तामाप्ताः शमुशतीह देहिनाम्।
तत्कुतस्त्यं सरागाणां द्वन्द्वोप हत चेतसाम्।।
चूंकि इस संसार में जिनेन्द्र देव ने आकुलता रहित वृत्ति को ही सुख कहा है इसलिए वह सुख उन सरागी जीवों में कैसे हो सकता है जिनके कि चित्त अनेक प्रकार की आकुलताओं से व्याकुल हो रहें हैं।

स्त्रीभोगो न सुखं चेतः संमोहात् गात्रसादनात्।
तृष्णानुबन्धात्संतापरूपत्वाच्च यथा ज्वरः।।
जिस प्रकार चित्त में मोह उत्पन्न करने से शरीर में शिथिलता लाने से, तृष्णा (व्यास) बढ़ाने से और संताप रूप होने से ज्वर सुखरूप नहीं होता उसी प्रकार चित्त में मोह, शरीर में शिथिलता, लालसा और संताप बढ़ाने का कारण होने से स्त्री संभोग भी सुख रूप नहीं हो सकता।

(आदि पुराण से)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. अ ई अ आ ल् च म् प् आ र् प् र् अ द् मू
2. .अ र आ च ल् आ र् प् र् अ द् मू
3. अ उ म् अ व् अ य् स् त् र ओ त् स
4. अ ऐ अ र् त् ए श् अ व् म् अ व् भ
5. अ भ म् र् र् त् न् क् आ र् ध

परिणाम :
अगस्त 2018: (1) मुनि श्री समय सागर जी (2) मुनि श्री विद्या सागर जी (3) मुनि श्री योग सागर जी (4) मुनि श्री मल्लि सागर जी (5) मुनि श्री कुन्थु सागर जी

पर्यटन में कैरियर कमाई का साधन

केरियर

पर्यटन- पर्यटन उद्योग देश में सर्वाधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला उद्योग है। भारत की समृद्ध विविधता तथा पर्यटन क्षमता के कारण हम पर्यटकों को अनेक अवसर तथा मनमोहक दर्शनीय स्थल उपलब्ध करा सकते हैं।

पर्यटन उद्योग का सबसे महत्वपूर्ण लाभ है कि यह अन्य मेजबान उद्योगों को भी परस्पर आच्छादित कर रही है जैसे मेजबानी, आराम, थल परिवहन, नागरिक उड्डयन तथा संचार।

परिवहन तथा संचार व्यवस्था में आए सुधार के कारण यात्रा करने वालों की संख्या में कई गुणा वृद्धि हो गई हे अतः पर्यटकों की सूची में भी वृद्धि हो रही है।

विश्वभर में भारतीय गंतव्यों के प्रति बढ़ते रूझान तथा पर्यटन उद्योग को सरकार द्वारा दिए जा रहे प्रोत्साहन से उम्मीद है कि आने वाले कुछ वर्षों में पर्यटन उद्योग में व्यापक वृद्धि व सुधार आएगा। पर्यटक उद्योग के विशेषज्ञ इसे 21वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण गतिविधियों में से एक मानते हैं।

इस उद्योग को दो क्षेत्रों में विभक्त किया जा सकता है। निजी क्षेत्र व सार्वजनिक क्षेत्र निजी क्षेत्र में होकर संरचनात्मक कार्य तथा वे क्षेत्र शामिल होते हैं जो भारी मात्रा में वित्त एकत्रित करते हैं।

निजी क्षेत्रों में टेवल एजेंट मुख्य होते हैं जो पर्यटकों की मार्केटिंग पर ध्यान देते हैं, यह समूह बनाकर पर्यटकों को वायु, रेल, समुद्र तथा सड़कमार्ग से यात्रा का प्रबंध करते हैं, होटल, आवास कार तथा कोच की सुविधा प्रदान करते हैं, सभी टेवल एजेंट घरेलू व अंतराष्टीय दोनों प्रकार की बुकिंग करते हैं।

इसी तरह टूर आपरेटर भी पैकेज बनाकर देश व विदेश के पर्यटको को समस्त सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं।

गाइड पेशेबरों को भी एक समूह है जो पर्यटकों को स्थल ऐतिहासिकता, एवं प्रासंगिकता की व्याख्या करके उनके आने के उद्देश्य को सार्धक बना देते हैं । मान्यता प्राप्त गाइडों को सरकार द्वारा लाइसेंस भी प्रदान किए जा रहे हैं।

राष्टीय एवं अंतराष्टीय पर्यटकों की रूचि को देखते हुए राष्टीय एवं राज्यकीय पर्यटक विभागों द्वारा नियंत्रण, विकास, प्रचार-प्रसार सुविधाओं आदि के द्वारा विकास की ओर अग्रसर किया जा रहा हैं।

कार्य सरंचना - पर्यटन उद्योग मेंकार्य करने हेतु लगातार जनता के संपर्क में रहना, आर्कषक एवं विनम्र व्यक्तित्व, पासपोर्ट हेतु बीजा अधिकारियों से संपर्क तथा समन्वय आपूर्तिकताओं, होटलकर्मियों तथा विभिन्न एजेन्टो से संपर्क रखना शामिल है।

रोजगार के अवसर- इस उद्योग में तीव्र विकास के टेवल एजेंसी के कार्य से प्रारंभ होकर कार्पोरेट क्षेत्र में चला जाता है। टेवल एजेंसी, टूर ऑपरेटर, राष्टीय व अंतराष्टीय एयर लाइन्स, होटल, परिवहन, तथा कार्गो कंपनियाँ व सरकारी पर्यटन विभाग जिसमें केन्द्रीय व राजरु पर्यटन विभाग सम्मलित है रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

शैक्षिक कार्यक्रम- 1. गतंव्य प्रबंधन में डिप्लोमा पाठयक्रम :- इसका उद्देश्य अभ्यर्थियों को उद्योग की सरंचनात्मक तथा निष्पाद प्रक्रिया की वृहत समझ प्रदान करना, इतिहास एवं संस्कृति के प्रति जागरूकता, संचार तथा प्रस्तुति, कमप्यूटर व्यवहार तथा प्राथमिक चिकित्सा, एवं विदेशी भाषा जानकारी आदि सम्मिलित हैं ।

2. पर्यटन प्रबंधन में स्नातकोत्तर :- प्रबंधकों को उद्योग का विस्तृत अध्ययन एवं पर्यटन से संबधित सभी पक्षों का अध्ययन सम्मिलित हैं।

संस्थान :- 1. कुरूक्षेत्र,विद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालय, जीवाजी विश्व विद्यालय, ग्वालियर, अनंत विश्वविद्यालय, मराठवाड़ा विश्वविद्यालय औरंगाबाद मास्टर ऑफ टूरिज्य एडमिनिस्ट्रेशन-2 वर्ष।

■ 1 जुलाई

- दिल्ली के बुराडी में सुबह एक परिवार के 11 सदस्य संदिग्ध हालात में घर में मृत मिले। 10 शव हॉल में लगे लोहे के जाल से फंदे पर लटके थे।

- जम्मूकश्मीर में किश्तवाड़ जिला प्रशासन ने वाट्सएप ग्रुप या फेसबुक पेज बनाने के लिए पुलिस की मंजूरी को अनिवार्य कर दिया।

- उत्तराखंड में पौड़ी गढ़वाल जिले के धूमा कोट इलाके में एक ओवरलोडेड बस करीब 200 फीट गहरी खाई में गिर गई। हादसे में 47 लोगों की मौत हो गई, जबकि 11 लोगों की हालात गंभीर है।

■ 2 जुलाई

- खुशबु का चयन जूनियर हॉकी इंडिया की अंडर 23टीम में हुआ।

- मैक्सिको के 90 साल के इतिहास में पहली बार नेशनल रिजेनरेशन मूवमेंट पार्टी के नेता ओब्राडोर ने 53 फीसदी मतों के साथ चुनाव जीता

- वाट्सएप में ग्रुप एडमिन रोक सकेगा सदस्यों के मैसेज को।

■ 3 जुलाई

- सतना : दुष्कर्म की शिकार चार साल की बच्ची को बेहतर इलाज के लिए एयर एंबुलेस से दिल्ली स्थिति एम्स भेजा गया।

- गोवा की आजादी और भारत-पाकिस्तान युद्ध में अहम भूमिका निभाने वाले नौ सेना के पूर्व प्रमुख एडमिरल जे जी नादकर्णी (86) का मुंबई में निधन हो गया।

- विजय रूपाणी सरकार में कुंवर जी बावलिया के रूप में नए कैबिनेट मंत्री शामिल हुए।

■ 4 जुलाई

- भोपाल रेल्वे स्टेशन पर बुधवार को संदिग्ध (बाबा) साधु के साथ सेना की डेस में घूम रहे पांच बच्चों को रेल्वे चाइल्ड लाइन ने पकड़ा

- वाशिंगटन- अमेरिका में एरिजोना राज्रु की 92 साल की महिला ने वृद्धाश्रम जाने से बचने के लिए अपने बेटे की गोली मारकर हत्या कर दी।

- तेलंगाना में एक पटाखा फैक्टी में आग लगने से 8 लोगों की मौत हो गई।

■ 5 जुलाई

- दिल्ली के अफसरों ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का आदेश मानने से इनकार कर दिया।

- केरल की टीवी अभिनेत्री सूर्या शिशकुमार उनकी मां और बहन को नकली नोट छापने के आरोप में गिरफ्तार किया गया।

- पाकिस्तान बारिश से अब तक 14 मौते लाहौर में सड़क पर 20 फीट गहरा सिंकहोल उभरा।

■ 6 जुलाई

- भ्रष्टाचार के एक मामले में पाकिस्तान की राष्टीय जबाबदेही ब्यूरो कोर्ट ने शरीफ को दस साल एवं उनकी बेटी मरयम को सात साल कैद की सजा सुनाई।

- जाकिर नाईक को भारत भेजे जाने की खबरों के बीच मलेशिया के प्रधानमंत्री

महाथिर मोहम्मद ने उसके प्रत्यर्पण से इनकार कर दिया।

- मानव तस्करी की सूचना पर जी. आर. पी. ने अवध एक्सप्रेस से आगरा जा रहीं 26 लड़कियों को गोरखपुर जक्शन पर उतार लिया।

■ 7 जुलाई

- रहली (सागर) दो माह पहले सात वर्षीय बच्ची के साथ हुए दुष्कर्म के मामले में न्यायाधीश सुधांशु सक्सेना की अदालत ने दोषी को फांसी की सजा सुनाई।

- राज्यपाल आनन्दी बेन पटेल के प्रमुख सचिव एम मोहनराव को राज्य सरकार ने हटा दिया।

- देश की पहली डबल स्टैक इवार्क कंटेनर टेन राजकोट रेल्वे स्टेशन से रवाना हुई।

■ 8 जुलाई

- जापान में लगातार तीसरे दिन भारी बारिश का कहर जारी है। अब तक 69 लोगों की मौत हो चुकी है और 850 लोग विभिन्न स्थानों पर फंसे हुए है।

- थाइलैंड की थाम लुआंग गुफा में 23 जून से फंसे 12 बच्चों में से 6 को निकाल लिया गया।

- कर्नाटक में चित्रदुर्ग जिला एवं सत्र न्यायालय ने पत्नी की हत्या करने वाले 75 वर्षीय एक शख्स को घटना के महज 11 दिन बाद ही उम्र कैद की सजा सुनाई।

■ 9 जुलाई

- ब्रिटेन के बेक्जिट मंत्री डेविड डेविस ने योरपीय संघ से बाहर आने की योजना पर प्रधानमंत्री थेरेसा के साथ मतभेदों के चलते अपने पद से त्याग पत्र दिया।

- नई दिल्ली : जस्टिश आदर्श कुमार गोयल ने नेशनल ग्रीन टिब्यूनल (एनजीटी) के चेयर पर्सन के रूप में कार्यभार संभाल लिया।

उ.प्र. की बागपत जेल में माफिया सरगना प्रकाश सिंह उर्फ मुन्ना बजरंगी की एक अन्य गैंगस्टर सुनील राठी ने गोली मारकर हत्या कर दी।

■ 10 जुलाई

- थाईलैंड के नेवी सील्स कमांडो ने थाम लुआंग गुफा में फंसे सभी 12 बच्चों और उनके कोच को सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

- जम्मू -कश्मीर के शोपियां में सुरक्षाबलों के साथ हुई मुठभेड़ में एक पाकिस्तानी समेत जैशए मोहम्मद के दो आतंकी मारे गए।

- नोबेल शांति पुरस्कार विजेता लीशा ओबो की विधवा ली जिया ने चीन छोड़ दिया।

■ 11 जुलाई

- ताजमहल के रख रखाव में लापरवाही पर सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार को जमकर फटकार लगाई है।

- श्रीनगर : ग्रेनेड को खिलौना समझकर खेलने के दौरान हुए विस्फोट में 6 साल के बच्चे सलीक इकबाल शेख की मौत हो गई।

- फ्रांस ने सेंट पीटर्स बर्ग स्टेडियम में खेले गये पहले सेमीफाइनल मैच में रोमांचक मुकाबले में बल्जियम को 1-0 से मात देकर फीका विश्वकप के फाइनल में जगह बना ली।

■ 12 जुलाई

- आध्यात्मिक गुरु दादा जे पी वा सवानी का निधन हुआ वे 99 वर्ष के थे

- सुप्रीम कोर्ट ने सहारा ए बी बैली टाउनशिप की कोई खरीददार न मिलने से नीलामी निरस्त की।

- फीफा वर्ल्डकप में इग्लेंड को क्रो एशिया दूसरे फाइनल में पहुँचा।

■ 13 जुलाई

- शिया वक्फ बोर्ड ने कहा अयोध्या में

जमीन का एक हिस्सा हमारा है हम उसे राम मंदिर के लिए दान देंगे।

- दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग में आतंकियों ने सी.आर. पी. एफ. के गश्ती दल पर हमला किया दो जवान शहीद हुए।

- स्वदेश लौटते ही पाक के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ एवं उनकी बेटी गरिटाम को गिरफ्तार किया गया।

■ 14 जुलाई

- राष्टपति रामनाथ कोविंद ने शास्त्रीय नृत्यागना सोनल मानसिंह मूर्तिमकार रघुनाथ महापात्रा पूर्व सांसद रामशकल और संघ विचारक राकेश सिन्हा को राज्यसभा के लिए मनोनित किया।

- श्योपुर जिला पंचायत अध्यक्ष कविता मीणा के बीती रात को चड्डी बनियान गरोह ने वारदात को अंजाम दिया।

- प्रोफेशनल एग्जामिनेशन बोर्ड (पी ई बी) ने 30 जून को हुई नायब तहसीलदार की पदोन्नित परीक्षा निरस्त की।

■ 15 जुलाई

- झारखण्ड के हजारीबाग जिले के बेडोम बाजार इलाके में एक ही परिवार के छह लोग घर में मृत मिले।

आठ बार माउंट एवरेस्ट की चढ़ाई चढ़ने वाले पेबा शेरपा कारा कोरम मे लापता हो गए।

- बच्चा चोर के शक में कर्नाटक में बीदर जिले के एक गांव में भीड़ ने हैदराबाद निवासी और गूगल में कार्यरत सॉफ्टवेयर इंजीनियर मोहम्मद आजम (उस्मान साहब) 28 की हत्या करी दी।

■ 16 जुलाई

- विश्व की सबसे तेज सुपर सोनिक क्रूल मिसाइल ब्रह्मोस का सोमवार सुबह ओडिशा के बालासोर स्थित सैन्य अड्डे से सफल परीक्षण किया गया।

- पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की रैली में एक अस्थायी टेंट गिरने से 67 लोग घायल हो गये। घायलों में 13 महिलाएं भी शामिल हैं।

- लाखों की संख्या में फ्रांश के प्रशंसकों ने अपनी टीम के फीफा विश्वकप जीतने का जश्न पेरिस से लेकर मॉस्को तक मनाया।

■ 17 जुलाई

- झारखण्ड के पाकुड में स्वामी अग्निवेश पर भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने हमला कर उन्हें लात घूसों से बुरी तरह पीटा और कपड़े तक फाड़ डाले।

- टीवी धारावाहिकों और फिल्मों में अक्सर मां का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री रीता भादुड़ी 62 का निधन हो गया।

- एंटी टेररिस्ट फ्रंट इंडिया के राष्टीय अध्यक्ष वीरेश शांडिल्य ने जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती के खिलाफ देशद्रोह का मामला दर्ज कराया।

■ 18 फरवरी

- हिमाचल प्रदेश में भारतीय वायुसेना का मिंग-21 लड़ाकू विमान दुर्घटना ग्रस्त हो गया हादसे में पायलट मीत कुमार की मौत हो गई।

- वरिष्ठ भाजना नेता चंदन मित्रा ने पार्टी छोड़ दी।

- सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की संवैधानिक पीठ ने केरल के सबरीमाला मंदिर में 10 साल से 50 साल की महिलाओं के प्रवेश पर लगी रोक पर ऐतराज जताया।

■ 19 जुलाई

- उत्तराखण्ड की टेहरी में सरकारी बस गहरी खाई में जा गिरी 14 लोगों की मौत हो गई 17 अन्य घायल हो गये।

- हिन्दी साहित्यकार शिक्षक और कवि एवं फिल्मो के गीत लेखक गोपालदास नीरज

का निधन हो गया वे 93 वर्ष के थे।

- अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य में आर्मी वेस केटेंट पर हेलिकाप्टर गिर जाने से 22 लोग घायल हो गये।

■ 20 जुलाई

- एकाउंटेंटस ऑफ इंडिया ने सी.ए.सी पीटी परीक्षा के नतीजे घाषित किए घाषित नतीजों में भोपाल जिले के बैरसिया निवासी पलाश माहेश्वरी ने ऑल इंडिया में 20वीं रैंक के साथ प्रदेश में पहला स्थान हासिल किया।

- पीपुल्स लिबरेशन आर्मी की विशेष टुकड़ी ने तिब्बत युद्धाभ्यास किया।

- दक्षिण कोरियाई समुद्र में 1400 फीट की गहराई पर 113 साल पहले डूबा एक जहाज मिला है माना जाता है कि यह जहाज करीब 200 टन स्वर्ण छड़ो ओर सिक्कों से लदा है।

■ 21 जुलाई

- अलवर के रामगढ़ के लालवंडी गांव में उन्मादी भीड़ ने हरियाणा के अकबर खान को मार मारकर घायल कर दिया।

- केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति से लौटे आई.ए.एस अनुराग जैन को राज्यशासन ने वित्त विभाग में प्रमुख सचिव बनाया।

- अमेरिका में बड़े पैमाने पर हुए कॉल सेंटर घोटाले में भारतीय मूल के 21 लोगों को 4 साल से लेकर 20 साल तक जेल की सजा सुनाई गई है।

■ 22 जुलाई

- गोकलपुरी से आम आदमी पार्टी के विधायक फतेह सिंह के खिलाफ पुलिस ने फर्जी डिग्री के आरोप में एफ आई आर दर्ज की।

- पाकिस्तान हाइकोर्ट के जज शौकत सिद्धीकी ने आइ. एस. आई. पर आरोप लगाया कि एजेंसी न्यायाधीश और अन्य जजों पर दबाव बना रही है।

- रावलपिंडी स्थित सेना मुख्यालय के बाहर शनिवार रात लोगों ने आइ. एस. आइ के विरोध में प्रदर्शन किया।

■ 23 जुलाई

- एयरसेल मैक्सिस केस में पूर्व वित्तमंत्री पी चिंदबरम को 7 अगस्त तक पटियाला हाउस कोर्ट ने गिरफ्तारी से राहत दे दी।

- भोपाल से जन्मदिन का जश्न मनाने आ रहें 6 युवक कार सहित कोलार डैम में डूब गये।

-मुजफ्फरपुरः शहर के बालिका गृह में 30 बच्चियों से बलात्कार का मामला सामने आया है इस मामले में 11 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

■ 24 जुलाई

- पूर्वी ग्रीस के जंगलों में लगी भीषण आग ने पर्यटकों के बीच मशूहर गांव को आग की चपेट में ले लिया।

- फिल्मों व सोशल मीडिया पर सिंख धर्म की परम्पराओं व मर्यादा को कायम रखने के लिए श्री अकाल तख्त साहिब ने अपना सेंसर बोर्ड गठित कर दिया।

- दक्षिण पूर्व लाओस में निर्माणाधीन हाइडो पावन बांध ठहने के बाद से सैकड़ो लोग लापता है।

■ 25 जुलाई

- उमरेठ थाना क्षेत्र की जमुनिया जेठ गांव में डायल 100 के ए एस आई देवचंद नागले पर आरोपित के परिजनों और रिश्तेदारों ने कुल्हाड़ी लाठियों से हमलाकर हत्या कर दी।

- पाकिस्तान में नई सरकार चुनने के लिए मतदाताओं ने भारी सुरक्षा बंदोबस्त के बीच वोट डाले

- चेन्नई (एंजेसी) मद्रास हाइकोर्ट ने पूर्व संचार मंत्री दयानिधि मारान एवं अन्य को बरी करने के सीबी आई अदालत का आदेश निरस्त

कर दिया।

■ 26 जुलाई

- खानियाधाना किले के 300 साल पुराने रामजानकी मंदिर का 51 किलो वजनी सोने का कलश चोरी हो गया है।

- पाकिस्तान में नेशनल असेंबली के चुनाव में पूर्व क्रिकेटर इमरानखान की पार्टी (पीटीआई) अकेली सबसे पाट के रूप में उभरी है।

- हाईकोट न्यायाधीशों के पदों के लिए सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम की सिफारिश को केन्द्र सरकार ने लौटा दिया।

■ 27 जुलाई

- ग्वालियर दुष्कर्म कर हत्या के दो मामलों मे दो दाषियों को फांसी की सजा सुनाई गई है। कटनी में पाँच साल की बच्ची से दुष्कर्म के मामले में महज 5 दिन में सजा सुनाई गई ग्वालियर में 6 साल की मासूम से दुष्कर्म के बाद हत्या कर दी गई थी।

- अमेरिका के एक खगोलविंद ने दावा किया है कि हमारी आकाशगंगा में बीस हजार करोड़ तारे हैं।

- जामिया मिलिया इस्लामियों के कुलप ति प्रोफेसर तलत अहमद को कश्मीर विश्वविद्यालय (के यु) का कुलपति नियुक्त किया गया।

■ 28 जुलाई

- श्री धूनीवाले दादाजी दरबार में रामेश्वर दयाल द्वारा किये जा रहे हवन के दौरान घूनीमाई का तापमान 65 डिग्री तक पहुँच गया आग पकड़ ली।

- महाराष्ट्र के पहाड़ी पर्यटन स्थल महाबलेश्वर जा रही बस रायगढ़ जिले में गहरी खाई में गिर, जिसमें 33 यात्री मारे गये।

- पटनाः बिहार के अनैठा गांव में वर्ष 2012 में जहरीली शराब पीने से 21 लोगों की मौत के मामले में कोट ने 14 दोषियों को उम्र कैद की सजा सुनाई है।

■ 29 जुलाई

- देश में भीड़ की हिंसा का ताजा शिकार गुजरात के दाहोद जिले का एक व्यक्ति बना है। उसे संदिग्ध डकैत मानकर पीट-पीटकर मार डाला गया।

- ब्लाडी वोस्टक (रूस) एजेंसी : पूर्व चैम्पियन मध्यप्रदेश के धार निवासी सौरभ वर्मा ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए ओपन टूर सुपर 100 बैडमिंटन टूर्नामेंट का पुरुष एकल खिताब अपने नाम किया।

- राजस्थान में श्री गंगानगर जिले के पदमपुर में एक बड़े हादसे में 8 लोगों की मौत हो गई और करीब 200 लोग घायल हो गये।

■ 30 जुलाई

- बालाघाट : पिकनिक मनाने आए एक ग्रुप की दो लड़कियों की सेल्फी में जान चली गई

- भोपाल : राज्य कैबिनेट ने अपर कलेक्टर और संयुक्त कलेक्टर को दाडिंक अधिकारी (मजिस्टेट) नियुक्त करने का प्रस्ताव टाल दिया।

- मुंबई : महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण की मांग को लेकर हिसां की घटनाएँ हुई। एक आंदोलन समर्थक ने टेन के सामने कूदकर खुदखुशी की।

■ 31 जुलाई

- महात्मा गांधी के प्रपौत्र गोपालकृष्ण गाँधी को 24 राजीव गाँधी राष्ट्रीय गाँधी सदभावना पुरस्कार देने की घोषणा हुई।

- संसद में दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता का दूसरा संशोधन विधेयक पारित हुआ।

- मराठा आरक्षण की माँग को लेकर नाँदेह जिले के काचरू ने आत्महत्या कर ली सोसाइंड नोट में आरक्षण समर्थन के लिए कहा गया।

इसे भी जानिये

1857 के क्रांतिकारी

क्र.	केन्द्र	भारतीय नायक	विद्रोह तिथि	ब्रिटिश नायक विद्रोह दवाने वाला	तिथि विद्रोह दबाने का
1.	दिल्ली	बहादुरशाह जफर बख्त खाँ (सैन्य नेतृत्व)	11,12 मई 1857	निकलसन एवं हडसन	21 सितम्बर 1857
2.	कानपुर	नाना साहब (धुन्ध पंत)तात्या टोपे (सैन्य नेतृत्व)	5 जून 1857	कैपषल	6 सितम्बर 1857 ई.
3.	लखनऊ	बेगम हजरत महल	4 जून 1857ई.	कैपषल	मार्च 1857
4.	झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	जून 1857	ह्यूरोज	3 अप्रैल 1858 ई.
5.	इलाहबाद	लियाकत अली	1857 ई.	कर्नल नील	1858 ई.
6.	जगदीशपुर	कुँअर सिंह	अगस्त 1857	विलियम टेलर एवं विसेंट आयर	1858 ई.
7.	बरेली	खान बहादुर खाँ	1857 ई.	.....	1850 ई.
8.	फैजाबाद	मौलवी अहमद उल्ला	1857 ई.	.....	1857 ई.

कविता

कर्म डुबाये तेरी नैया

कर्म का फल निश्चित मिलता है , कर्म पुण्य अरु पाप में खिलता है
जैसा बोयें वैसा पायें, कर्म भूमि पर फल उग आये
कर्म चक्र नित प्रति चलता है, इसका सुख दुख फल मिलता है
चक्रवर्ती तीर्थंकर को भी, इन्द्र धरणेन्द्र जीव सभी
कर्म वेदना से न बच पायें, चतुराई कितनी कर जायें
जब तक पुण्य का उदय रहेगा, तबतक औगुन माफ रहेगा
अरे कर्म से डर रे भैया, यही डुबाये तेरी नैया

दिशा बोध

बुद्धि

1. बुद्धि समस्त आकस्मिक आक्रमणों को रोकने वाला कवच है। वह ऐसा दुर्ग है, जिसे शत्रु भी घेरकर नहीं जीत सकते।
2. यह बुद्धि ही है, जो इन्द्रियों को इधर-उधर भटकने से रोकती है, उन्हें बुराई से दूर रखती है और शुभकर्म की ओर प्रेरित करती है।
3. यह बुद्धि का काम है कि हर एक बात में झूठ को सत्य से पृथक् कर दे, फिर उस बात को कहने वाला कोई भी क्यों न हो।
4. बुद्धिमान् मनुष्य जोकुछ कहता है, इस तरह से कहता है कि उसे प्रत्येक व्यक्ति समझ सके। और दूसरों के मुख से निकलेहुए शब्दों के आन्तरिक भाव को भी वह शीघ्र समझ लेता है।
5. बुद्धिमान् मनुष्य सबके साथ मिलन सारी से रहता है। उसकी प्रकृति सदा एक-सी रहती है, उसकी मित्रता न तो पहले अधिक बढ़ जाती है और न एक दम घट जाती है।
6. यह भी बुद्धिमानी का एक काम है कि मनुष्य लोकरीति के अनुसार व्यवहार करे।
7. समझदार आदमी पहले से जान जाता है 'क्या होने वाला है ?'परन्तु मूर्ख आगे आने वाली बात (आपत्ति) को नहीं देख सकता।
8. संकट के स्थान में सहसा दौड़ पड़ना मूर्खता है। बुद्धिमानों का यह भी कहना है कि 'जिससे डरना चाहिए, उससे डरता ही रहे।'
9. जो दूरदर्शी आदमी हर एक विपत्ति के लिए पहले से ही सचेत रहता है, वह उस वार से भी बचा रहेगा, जो अति भयंकर है।
10. जिसके पास बुद्धि है, उसके पास सब कुछ है, परन्तु मूर्ख के पास सब कुछ होने पर भी कुछ नहीं है। अर्थात बुद्धि की सम्पूर्ण कुशलता को प्राप्त कराने वाला साधकतम कारण है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में मुनिराजों की भूमिका

❊ पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन (रजवाँस सागर) ❊

मुनि द्वारा ही सूरिमंत्र क्यों ? -

''जिन प्रतिमा'' निर्ग्रन्थ दिगम्बर वीतरागी जिनेन्द्र भगवान का प्रतिबिम्ब होता है। जिनेन्द्र भगवान और उनकी प्रतिमा में एक रूपता होती है। अन्तर मात्र जीव और निर्जीवता का होता है। किन्तु वीतरागता की दृष्टि से समानता होती है। ''जिन प्रतिमा'' की प्रतिष्ठा मुनि के द्वारा की जाती है क्योंकि आचार्य कुन्द कुनद स्वामी ने साधु को भी प्रतिमा कहा है।

चेइय बंधं मोक्खं दुक्खं सुक्खं च अप्पय तस्स।।
चेइ हरं तिण मग्गे छक्काय हियं करं भणियं।।9।। बोधपाहुड़

जिसके बन्ध और मोक्ष तथा सुख और दुःख हो उस आत्मा को चैत्य कहते हैं । अर्थात जिनके स्वरूप में हों उसे चैत्य कहते हैं, क्योंकि जो चेतना स्वरूप हो उसी के बंध, मोक्ष, सुख, दुःख संभव हैं । ऐसे चैत्य का जो गृह हो उसे चैत्यगृह कहते हैं। जिनमार्ग में ऐसा चैत्यगृह छहकाय का हित करने वाले मुनि हैं।

सपरा जंगम देहा दंसण णाणेव सुद्धचरणाणं।।
णिग्गं थवीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिमा।।10।।बोधपाहुड़

दर्शन, ज्ञान से शुद्ध निर्मल है चारित्र जिनका उनकी स्वपरा अर्थात अपनी और पर की हितैषी जो चलती हुई देह है, अथवा स्वपर अर्थात आत्मा से पर अर्थात भिन्न ऐसी जो देह है सो जिनमार्ग में प्रतिमा है। अन्य कल्पित हैं और धातु, पाषाण आदि से निर्मित जो दिगम्बर स्वरूप प्रतिमा कही जाती हैं सो व्यवहार है, वह भी यदि बाह्य आकृति ऐसी ही हो तो व्यवहार में मान्य हैं।

जं चरदि सुद्धचरणं जाणइपिच्छेद सुद्धसम्मतं।।
सा होइ वंदणीया णिग्गंथा संजदा पडिता।।1।। बोधपाहुड

जो निरतिचार चारित्र का पालन करते हैं, जिन श्रुत को जानते हैं, अपने योग्य वस्तु को देखते हैं तथा जिनका सम्यक्त्व शुद्ध है, ऐसे मुनियों का निर्ग्रन्थ शरीर प्रतिमा है। साधु को जंगम प्रतिमा कहा है।

दिगम्बर निर्ग्रन्थ मुनि रत्नत्रय से सहित होते हैं, वहजिन प्रतिमा है। अपने-अपने भेदों से अनन्त भेद रूप रत्नत्रय ही देव है अतएव रत्नत्रय से युक्त जीव भी देव है, अर्थात आचार्यादिक भी रत्नत्रय के यथायोग्य धारक होने से देव हैं क्योंकि अरिहन्तादिक से आचार्यदिक में रत्नत्रय के सदभाव की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं है, इसलिए आंशिक रत्नत्रय की अपेक्षा इनमें भी देवपना बन जाता है। साधुओं को जहाँ देवत्व प्राप्त है वहीं वे जिन स्वरूप होने के कारण जिनबिम्ब भी हैं।

जिण बिम्बं णाणमयं संजमसुद्धं सुवीयरायं च।।
जं देइ दिक्ख सिक्खा कम्मक्खय कारणे सुद्धा।।14।। बोधपाहुड

जो ज्ञानमय है, संयम से शुद्ध है, अत्यन्त वीतराग है तथा कर्मक्षय में कारणभूत शुद्ध दीक्षा

देते हें ऐसे आचार्य परमेष्ठि जिन बिम्ब हैं।

तव वयगुणेहिं सुद्धो जाणदि पिच्छेइ सुद्धसम्मतं।।
अरहंतमुद्द एसा दायारी दिक्ख सिक्खा य।।18।। बोधपाहुड

जो तप व्रत और गुण से शुद्ध हैं, वस्तु स्वरूप को जानते हैं तथा शुद्ध सम्यक्तव के स्वरूप को देखते हैं, ऐसे आचार्य ही अरहन्त मुद्रा अर्थात जिनबिम्ब हैं। यह अरहन्त मुद्रा दीक्षा और शिक्षा देने वाली है।

दढ संजममुद्दाए इंदियमुद्दा कसाय दढ मुद्दा।।
मुद्दा इह णाणाए जिणमुद्दा एरिसा भणिया।।19।। बोधपाहुड

जो संयम की दृढ़ मुद्रा से सहित हैं, जिनने इन्द्रियों को संकोच कर लिया है ऐसी इन्द्रिय दृढ़मुद्रा वाले, एवं जिनमें कषाय की प्रवृत्ति नहीं है ऐसे कषायदृढ़ मुद्रा वाले जो सम्यग्ज्ञान से सहित हैं ऐसी मुनिमुद्रा ही जिनमुद्रा है। जिनशासन में यही जिन मुद्रा कही गयी है।

आचार्यदिक स्वयं जिनमुद्रा हैं, जिनबिम्ब हैं, इनके द्वारा जिन प्रतिमा की प्रतिष्ठा होती है। अजंगम प्रतिमा निर्ग्रन्थ साधु के द्वारा प्रतिष्ठित होने पर ही वन्दनीय होती है।

विक्रम संवत् प्रथम में आचार्य अर्हदवली स्वामी ने संगठन की दृष्टि सिंहसंघ, नन्दिसंघ, सेनसंघ और देवसंघ इन श्रेष्ठ संघो की स्थापना की। इन संघों से अनेक गण, गच्द उत्पन्न हुए इनमें दीक्षा आदि क्रियाओं में कोई भेद नहीं है। इसके पश्चात गोपुच्छ, श्वेताम्बर, द्राविड़, यापनीय, निपिच्द एवं काष्ठासंघ आदि अनेक जैनाभासी संघ हुए। आचार्य इन्द्रनन्दि स्वामी ने जैनाभासियों के द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमाओं को वन्दनीय नहीं कहा है।

चतुः संघ संहिताया जैनं विम्बं प्रतिष्ठितम्।।
नमेन्नापर संघीयं यतो न्यास विपर्ययः।।14।। इन्द्रनन्दि नीतिसार

चतुर्विध संघ द्वारा प्रतिष्ठापित जिन प्रतिमा को ही नमन करें । विपरीत संघो द्वारा प्रतिष्ठापित प्रतिमा को नमन नहीं करें। आचार्य इन्द्रनन्दि स्वामी के इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रतिष्ठा आचार्य या साधु सान्निध्य में ही होना चाहिए। वृहद संहिता में प्रतिमा प्रतिष्ठा के अधिकारी का कथन करते हुए लिखा है कि-

विष्णेर्भागवतान भगांश्च सवितुः शम्भो शम्मोः,
समस्म द्विजान् मातृणा मपि मण्डलक्रम विदो विप्रान् विदर्ब्रह्मणः
शक्यान् सर्वहितस्य शान्त मनसो नग्ननान जिनानां बिदुः र्ये यं देव
मुपाश्रिताः स्वविधिना तैस्तस्य कार्या क्रिया।।19।।

विष्णु की प्रतिष्ठा वैष्णव, सूर्य की प्रतिष्ठा मग ब्राह्मण, शिव की प्रतिष्ठा भस्म लगाने वाले ब्राह्मण मातृकाओं की प्रतिष्ठा मण्डल क्रम जानने वाले ब्राह्मण, ब्रह्मा की प्रतिष्ठा ब्राह्मण, जिनेन्द्रीय बुद्ध की प्रतिष्ठा रक्तवस्त्रधारी, और जिन की प्रतिष्ठा दिगम्बर श्रमण करें । जो मनुष्य जिस देवता का परम उपासक हो वह देवता की क्रिया करे। ऐसा कथन ग्रंथो में किया गया है।

जिस आराध्य की प्रतिमा प्रतिष्ठा होना हो, उसके आराधक तदनुकूल चर्या करने वालों

द्वारा ही उनकी प्रतिष्ठा चाहिए। जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठा निर्ग्रनथ दिगम्बर मुनिराज के द्वारा ही होती है। प्राप्त प्रतिष्ठा ग्रन्थों में इसके अनेक प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

साधु सान्निध्य की अनिवार्यता-

प्रतिष्ठापाठ श्री जयसेनाचार्य जी ने लिखा है प्रतिष्ठा में इतने मनुष्य अवश्य अधिकारी चाहिए।

आचार्यो मघवा कर्ता तत्पत्नी पूजकस्तथा
पञ्चैते यज्ञ ने तारो मुख्या व्रत समन्विता।।52।।

1. आचार्य सूरिमंत्र 2. इन्द्र क्रियाकर्ता 3. यज्ञकर्ता यजमान 4. यजमान पत्नी 5. पूजन का कर्ता यह पाँच यज्ञ के कर्ता व्रतधारी जानना।

सामग्री सम्पत्तिकरा मंत्रिणोऽध्यापकाबुधाः, श्री ह्यादि कन्यका लौकान्तिक कल्पा अधिस्मृताः ।।53।।

1. सामग्री संपादन करने वाला 2. मंत्री सभासद 3.अध्यापक पाठवक्ता 4. पण्डित विधि का जानने वाला 5. श्री ह्री आदि कन्या 6. लौकान्तिक देव भी आवश्यक हैं। इतने पात्र आवश्यक हैं यह सब व्रत पालन करने वाले होना चाहिए। इन पाँचों में सूरिमंत्र दाता आचार्य लिखा हैं यह ध्यान देना चाहिए।

प्रतिष्ठा के शास्त्रों का अध्ययन करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि प्रतिष्ठा में साधु सान्निध्य अनिवार्य है अतः प्रयत्न पूर्वक साधुओं को आमंत्रित करें।

आचारादि गुणाधारो रागद्वेष विवर्जितः
यशवातो जिझतः शान्तः साधुवर्गाग्रणी र्गणी।8।
अशेष शास्त्र विच्चक्षु प्रव्यक्तं लौकिक स्थितिः,
गम्भीरो मृदुभाषीच सः सूरि परिकीर्तितः।9।

आचारादि गुणसहित, रागद्वेष रहित, निष्पक्ष, शान्त, शास्त्रों के ज्ञाता, गम्भीर, मृदुभाषी आचार्य हैं उनका सान्निध्य प्राप्त हो।

एदं युगीन श्रुत धद्धुरीणो गण पालकः। पंचाचार परोदीक्षा प्रवेशाय तयोर्गुरूः।7।।

दीक्षा देने वाले आचार्य का स्वरूप, व्यवहार शास्त्र को जानने वाला श्रुत ज्ञानियों में मुख्य साधु संघ का मानने वाला दर्शनाचत् आदिक पांचों आचारों के पालने में लीन ऐसा आचार्य यजमान और प्रतिष्ठाचार्य को प्रतिष्ठा कराने की दीक्षा देने वाला गुरु कहा गया है।

गुर्वाज्ञा लंभन विधि-

प्रातर्गृहीत्वा गुरु पूजनार्घ्यं वादित्र नादोल्वण पात्रया सः।
गुरुप कण्ठे नतमस्तकेन भूमिं स्पर्शन् वाक्य मुपाचरेत सत्।।

यजमान प्रभात समय गुरु पूजन निमित्त अर्घ्य पात्र में लेकर नाना प्रकार वादित्रों को बजाय यात्राकरि मुनिसमीप मस्तक नवाय पृथ्वी को स्पर्श करता विनती करें हैं। हम प्रतिष्ठा कराना चाहते हैं हमें उपदेश दीजिए।

चैत्यादि भक्तिभिः स्तुत्वा देवं शेषं समुद्धहन्
धर्माचार्य समभ्यर्च्य नत्वा विज्ञापये दिदम्।।17।।

ऐदं युगीनाखिल शास्त्रदृष्टे त्वं पंच भेदाचर णैकतान्
आचार्यवर्यागम देशितां नो निरूपयौ पासक कार्यपूजाम्।।18।।
यष्ट याज्ञक यो र्लक्ष्म यज्ञ दीक्षोचितं व्रतम्
भवतः श्रोतु मिच्छामि भगवन् भव्यं बांधव।।19।।
त्वत्प्रसादात् प्रवुध्या र्हत्पूजादि र्लक्षणं स्फुटम्
जिन प्रतिष्ठा मिच्छामः कर्तुमेतेऽद्य वालिशाः ।।20।।

चैत्यभक्ति पढ़कर जिनेश्वर की स्तुति करें और शेषाक्षत धारण करने धर्माचार्य के पास जाकर उनकी पूजा करें और नमोस्तु करके निम्नलिखित प्रार्थना करें कि धर्माचार्य जो कुन्दकुन्दादिक अर्वाचीन आचार्य हुए हैं उनके द्वारा लिखित जो शास्त्र हैं ये ही अपने लिए नेत्र स्वरूप हैं। आप पाँच प्रकार आचार पालन करने में निमग्र रहते हैं। श्रावकाचार में जिनका वर्णन किया है ऐसे श्रावक का आचरण व पूजा का स्वरूप हमें समझाइए।

हे भगवन् आप सभी भव्य जीवों के अकारण मित्र हैं इसलिए यज्ञनायक तथा प्रतिष्ठाचार्य के लक्षण और प्रतिष्ठा विधि करने के लिए जिस यज्ञ दीक्षा लेने पर दोनों को व्रत पालन करना पड़ते हैं उसका वितरण सुनने की हम इच्छा प्रगट करते हैं। आचार्य देव हम आपसे पूजाओं का स्वरूप पूर्वक समझना चाहते हैं क्योंकि हम मन्दबुद्धि वाले जिन प्रतिष्ठा कराने के इच्छुक हैं।

इस प्रकार प्रार्थना करे तब आचार्य देव समस्त विधि समझाते हैं। इन प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है कि जिन बिम्ब प्रतिष्ठा में मुनिराजों का सान्निध्य अवश्य ही होना चाहिए।

इन श्लोकों में प्रतिष्ठा हेतु सूरि या दिगम्बर गुरु का आशीर्वाद व आज्ञा ली जाती है। उसके उपदेशानुसार याजक, इन्द्र प्रतिष्ठाचार्य कार्य करते हैं। इनमें जो सूरि शब्द है वह दिगम्बर आचार्य या साधु का है। प्रतिष्ठा में धर्माचार्य दिगम्बर साधु होते हैं। सूरिमंत्र से सूरि द्वारा दिया गया मंत्र यह अर्थ निकलता है। जयसेन प्रतिष्ठा पाठ में अधिवासना मंत्र संस्कार के समय से अष्ट द्रव्य से प्रतिमा की पूजा की जाती है। वहीं पं. आशाधर प्रतिष्ठा पाठ पत्र 108 में तिलक दान के बाद अर्थात् अधिवासना के साथ अन्य मंत्रों के समय प्रतिमा को नमस्कार करना बतलाया है। इसी समय जयसेन प्रतिष्ठा पाठ पृष्ठ 282 में

अधिवासनां निष्ठाप्य सर्वान् जनानपसृत्य दिगम्बरत्वावगत आचार्यः स्वस्त्ययनं पठेत्।

अर्थात् अधिवासना पूरी कर वहाँ उपस्थित सम्पूर्ण लोगों को अलग कर दिगम्बरत्व रूप में प्रतिष्ठा शास्त्र के पूर्व श्लोकों में जो यहाँ दिये गये हैं उनेक अनुसार अर्थात् पूर्व जाने हुए सूरि सदगुरु दिगम्बराचार्य स्वस्त्ययन विधि पढ़ें। श्री मुखोद्घाटन प्राण प्रतिष्ठा, सूरिमंत्र और नेत्रोन्मीलन विधि सही सूरि अर्थात् दिगम्बराचार्य देते हैं। यही सप्तम गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक ही विधि है। यहीं द्वितीय शुक्लध्यान के उपान्त समय में दिगम्बर मुनि अर्थात् प्रतिमा को अर्घ्य दिया गया है।

उक्त दिगम्बरत्वावगत शब्द को लेकर ही विवद हो सकता है। इसी पर से कहा जाता है कि प्रतिष्ठाचार्य दिगम्बर होकर सूरिमंत्र दे सकता है। इसके समाधान में हमें यह जानना है कि

अधिवासना के साथ की विधि से जो प्रतिमा में पूज्यता आती है वह क्यों ? वह इसलिए कि प्रतिमा में सातवें गुणस्थान की वीतरागता की विधि से पूज्यपना आता है। यहीं प्रतिष्ठा शास्त्र में प्राण प्रतिष्ठा के साथ सूरिमंत्र दिया जाता है। जो वीतराग दिगम्बरत्व की दीक्षा है और गुप्तरूप से दिया जाता है। इसलिए यहाँ पर इसका उल्लेख प्रतिष्ठा शास्त्र में नहीं मिलता, यह गुरु मंत्र है यहाँ गुप्तं भाष्यन्ते इति मंत्रः जो गुप्त रूप से कहा जाता है। वह मंत्र कहलाता है।

दिगम्बर वीतराग मुनि की दीक्षा, मंत्र संस्कार दिगम्बर मुनि, सूरि जो आचार्य कहलाता है वही दे सकता है। कोई गृहस्थ चाहे वह नग्न भी हो जाये तो क्या मुनि दीक्षा दे सकता है ? यह सभी जानते हैं। इसका संकेत जयसेन प्रतिष्ठा पाठ श्लोक 378-379 में है जो दिगम्बर आचार्य द्वारा किया जाता है।

आचार्येण सदा कार्यः क्रियां पश्चात्समाचरेत्।
श्री मुखोद्घाटने नेत्रेन्मीलने कंकणोझने ।।378।।
सूरिमंत्र प्रयोगे चाधिवासने च मुख्यतः।
कृत्वैव मातृकान्यासं विदध्या द्विधिमुत्तमं ।।379।। प्रतिष्ठापाठ पृष्ठ 117

आचार्य को न्यास सदा ही करना योग्य है, पश्चात मुखोदघाटन नेत्रीन्मीलन, कंकणमोचन, सूरिमंत्र तथा अधिवासना मुख्यता पूर्वक करके मातृकान्यास की उत्तम विधि करें।

प्रतिष्ठा विधि में मूलक्रिया आचार्य या मुनिराजों के द्वारा होती है। इसमें प्रतिमा को सूरिमंत्र प्रदान किया जाता है, इसे साधु विशुद्धभावों से मंत्र को स्मरण करते हुए स्थापन करते हैं। सूरिमंत्र प्रदान करते समय साधु के भावों की विशुद्धि स्थिरता एवं श्रद्धाभक्ति प्रतिमा को ऊर्जावान और पूज्य बनाती है। प्रतिमा में कितनी भी क्रियाएँ की जावें किन्तु सूरिमंत्र के बिना वे सभी क्रियाएँ कार्यकारी नहीं हो पाती हैं। सूरिमंत्र से ही प्रतिष्ठा करने का उल्लेख किया गया है।

प्रतिष्ठा वीतरागस्य जिनशासन मार्गतः। नवकारैः सूरिमंत्रैश्च सिद्धकेवलिभाषितैः ।।88।।

वीतरागदेव की प्रतिष्ठा जैन शासन में बतलाई हुई विधि के अनुसार सिद्ध हुए केवलज्ञानियों ने कहे हुए नवकार मंत्र और सूरिमंत्रों के उच्चारण पूर्वक करना चाहिए।

प्रतिष्ठा विधि में सूरिमंत्र प्रदान करने की विधि आचार्यों ने अनेक प्रकार से कही है, सूरिमंत्र प्रदान करने वाला निर्ग्रन्थ साधु होना चाहिए। सूरिमंत्र की तरह सूर्यकला, चन्द्रकला मंत्र भी साधु के द्वारा प्रदान किया जाता है। इन मंत्रों से मूर्ति में सूर्य एवं चन्द्रमा की तरह तेज प्रकट होता है, जो दर्शक प्रभावित कर अपनी भावनाओं को विशुद्ध करता है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का अभिमत-

रामटेक 1992 में मोक्ष पाहुड की 104 गाथा पढ़ाते समय आचार्य श्री ने सूरिमंत्र की चर्चा करते हुए कहा था कि दीक्षा देने वाले स्वयं आचरण करते हैं और दूसरों को आचरण कराने में प्रवीण हैं। मंत्र के आगे सूरि आदि लगाने की क्या आवश्यकता थी ? यहाँ पर प्रांसगिक क्या था ? आचरण और आचार दोनों आ गये थे। सूरि के द्वारा जो मंत्र दिया जाये वह सूरि मंत्र। स्वयं दीक्षा लेता है शिक्षा ग्रहण करता है तो अपनी आत्मा को लगाकर के करता है। इससे यह सिद्ध

आओ सीखे : जैन न्याय

प्रसिद्धार्थ ख्यातिवाद विपर्यय का विचार विमर्श

सांख्य मत विपर्यय ज्ञान में प्रसिद्ध अर्थ ख्याति वाद को मानता है। इस वाद की मूल अवधारण है कि विपर्यय ज्ञान में प्रतीति सिद्ध अर्थ का ही प्रतिभास होता है। विपर्यय ज्ञान में प्रतिभासित अर्थ प्रतीति से अबाधित होता है। अतः जो अर्थ प्रतीति सिद्ध हो उसका विचार ही अयुक्त है।

उनका तर्क है। वह प्रतीति विपर्यय ज्ञान के विषय में भी है। मरीचिका में जल का प्रतिभास होने पर ज्ञाता जब वहां पहुंचता है तब वहां जल नहीं मिलता है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जिस समयजल का ज्ञान हुआ उस समय जल है ही यदि बाद में उस अर्थ का अभाव होने पर प्रतिभास में अभाव माना जायेगा तो ऐसी स्थिति में बिजली का भी अपने ज्ञान काल ये भी अभाव सिद्ध होगा क्योंकि बिजली एक बार चमक कर लुप्त हो जाती है। इसलिये यह प्रसिद्धार्थ ख्याति ही सिद्ध है जैन आचार्य सांख्य के इस मत को विचार शून्य मानते हैं। क्योंकि ऐसा मानने से भ्रान्त अभ्रान्त प्रतीति का व्यवहार नष्ट हो जाएगा भ्रान्त अभ्रान्त की व्यवस्था बिना हेतु के कैसे बन पाएगी ऐसा मानने से स्वेच्छाचार कहलाएगा। यदि मरिचीका प्रतिभास में जल था और बाद में जल नहीं रहा तो उसके चिन्ह जमीन का गीला होना अवश्य ही मिलना चाहिए क्यों कि बिजली की तरह जल का भी तत्काल निरन्वय विनाश नहीं देखा जाता निष्कर्ष अतः प्रसिद्ध अर्थख्याति वाद का पक्ष अनुचित सिद्ध होता है।

हमारे गौरव

जैन शासक कीर्तिवर्मन प्रथम

पुलकेशी प्र. का पुत्र एवं उत्तराधिकारी कीर्तिवर्मन प्रथम था। उसने भी अपने पराक्रम से राज्य विस्तार में वृद्धि की थी। उसके राज्यकाल (सम्भवतथा 567 ई.) में दोण एल. आर. आदि कई ग्राम प्रमुखों ने एक जिनालय बनावाया था। जिसके लिये सिन्दरस के पुत्र पाण्डीपुर-नरेश माघवत्तियरस की अनुमति से परलूगण के आचार्य विनयनन्दी के प्रशिष्य और वासुदेव गुरु के शिष्य प्रभातचन्द्र मुनि को दान दिया था। दान भगवान की पूजा के लिए (अक्षत अखण्डित चावल) गन्ध (धूप) पुष्प आदि की व्यवस्था के लिए था और कर्म्मगलूर की पश्चिम दिशा में स्थित धान के खेतों के राजकीय माप से आठ मत्तल चावलों का था। प्रायः इसी काल में जैन पंण्डित रविकीर्ति ने एहोल के निकट में गुत्ती में एक सुन्दर जिनमन्दिर बनवाया था और वहाँ विद्यापीठ की स्थापना की थी। स्वयं ऐहोल एक बड़ा जैन गुहा मंदिर था जिसमें भगवान पार्श्वनाथ की सहस्त्रफणी प्रतिमा स्थापित थी। कीर्ति वर्मन के पश्चात उसका छोटा भाई मंगलीश राजा रहा।

कहानी

इस जाल में कैसे फंसे

21 जून सन् 1984 की बारात और बात आज भी याद आती है तब मुझे लगता है कि वो चाँदनी रात और मेघों की आवक जावक और कभी कभी सफेद बंगलों की उड़ान तीतरों की आवाज क्योंकि बर्री गाँव से चलकर आया था। विदिशा के किले मंदिर के अन्दर कभी धूप तेज भी तो कभी मिली थी गर्म हवा तो कभी कभी हो गया शरीर पसीने से तर बतर कभी छांव की खोज में व्याकुल हो गया था थोड़ी सी मिल जाए छाँव तो मैं निकाल दूंगा थकान और मिलेगी चैन फिर चल पढ़ूगा मंजिल की ओर आशा निराशा के झूले में झूलता रहा पर हिम्मत न हारी। 7 बजे मंजिल पाली। मालूम था पहले से ही यह किला मंदिर विदिशा है। यहाँ संयम और संयमी का आदर कम ही होता है पर रास्ता कही और से नहीं थी विदिशा जाना ही था सोच यही बना लिया था। संयम और चारित्र ही है धर्म इस सच के लिए विदिशा वासियों की बताने की मन में उमंग थी।

एक भव्य जिनालय के द्वार पर पहुँच गया पीतल के कमण्डल से अपने पैरों को धोया पैरों को धोते ही थकान कम हो गयी और जिनालय के अन्दर जाकर अब जिनेन्द्र देव के दर्शन किए तो मानसिक थकान पूर्ण रूपेण दूर हो गयी। भगवान के सामने कुछ देर बैठा, पाठ किया। सोचता रहा क्या बात है जिनेन्द्र देव के अनेकान्त दर्शन में अमृत भरा है। फिर भी लोगों को एकान्तवाद क्यों पसन्द आता है ? क्या इसे कलिकाल का दोष कहें या फिर मनुष्य के कलुषता पूर्ण चिंतन का दोष कहें या कहें हम कि श्रावकों के अन्दर पैदा हुई अवसर वादिता का दोष या कहे कुछ कर्म का ऐसा ही उदय यह जब मैं चिंतन कर रहा था तभी एक रतनचंद नाम के व्यक्ति हमारे पास आये उन्होंने कहा ब्रह्मचारी जी आप कहां से पधारें हैं मैंने कहा अभी तो मैं बर्री से आ रहा हूँ उन्होंने आगे पूछा कि आपके ठहरने की व्यवस्था हो गई कि नहीं मैंने कहा हो जायेगी वे बोले हो जायेगी नहीं यहाँ कोई ध्यान देने वाला नहीं यहाँ सिर्फ टोपी छाप पंडितों को बोलबाला है त्यागी और व्रती संयमी को अनादर की दृष्टि से देखा जाता है। उनकी अपेक्षा की जाती है यहाँ कुछ ऐसी परिस्थति पैदा की जाती है जिसमें त्यागी व्रती यहाँ ठहर नहीं पाता है। चलो आप मेरे साथ। मैं आपको रूकने का स्थान बता देता हूँ। रतनचंद्र जी के बताये हुए स्थान पर उनकी दी हुई चटाई लेकर मैं सामायिक करने बैठ गया। सामायिक पूर्ण होने के बाद मैं थोड़ा विश्राम करने का मन बना ही रहा था इतनें में एक सज्जन आये। वे बोले ब्रह्मचारी जी पंडित जी के प्रवचन हो रहे हैं। चलें आप। और मैं पंडित जी के प्रवचन सुनने चला गया पंडित जी ने अपनी विद्वता का परिचय दिया उनके प्रवचन सुनकर मैं अवसर न देख कर मौन रहा क्योंकि 4-6 महिलायें ही

उनके प्रवचन में थी। मैंने सोचा इन लोगों के सामने अपनी बात रखने का उचित अवसर नहीं है एक बार तो पंडित जी यूँ ही बोले कि ब्रह्मचारी जी मैं गलत तो नहीं बोल रहा ? गलत बोलूँ तो बता देना। मैंने कहा पंडित जी अभी तो मैं थका हुआ हूँ हाँ लेकिन कल बैठकर चर्चा करेगें पंडित जी के प्रवचन समाप्त होने उपरांत मैं अपने आवास पर विश्राम करने आ गया लगभग घड़ी के 10 बज रहे थे नींद तो मुझे आ नहीं रही थी हाँ आँखों पर कुछ हल्की हल्की आलस जरूर छा रही थी कि इतने में पंड़ित ब्रह्मचारी संतोष ज्ञायक जी चिल्लाते हुए बोले यहाँ कौन सो रहा है ? मैंने मधुर स्वर मैं कहा मैं हूँ ब्रह्मचारी सुमन/ उन्होंने पूछा कितनी प्रतिमा है ? मैंने कहा दसवी प्रतिमा का पालन करता हूँ। उन्होंने बड़े व्यंग से कहा कि इसलिए तो कांजी स्वामी कहते हैं कि द्रव्यलिंग सदैव भारभूत होता है। मैंने कहा अभी तो अपन सोते हैं फिर कल बात करेंगे।

प्रभात की बेला में अपने आवश्यक करके मैं शौच के लिए जाने लगा तो पंडित संतोष जी ज्ञायक मेरे साथ में हो गये। मैंने पंडित जी से एक प्रश्न पूंछा कि पंडित जी कोई द्रव्यलिंग मुनि बन गया है तो अब उसे सम्यकदर्शन हो सकता है या नहीं अर्थात कोई द्रव्यलिंगी मुनि भावलिंगी हो सकता है या नहीं ? पंडित जी बोले क्यों नहीं, उसे सम्यर्क दर्शन भी हो सकता है व भावलिंगी भी हो सकता है फिर मैंने पंडित जी से कहा कि पंडित जी तो फिर द्रव्यलिंग कितने प्रकार का होता है ? पंडित जी बोले एक ही प्रकार का। मैंने कहा पंडित जी आचार्य जयसेन जी ने तात्पर्यवृत्ति टीका में द्रव्यलिंग के चार प्रकार बतायें हैं प्रथम मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी, द्वितीय असंयत सम्यक् दृष्टि द्रव्यलिंगी, तृतीय संयतासंयत द्रव्यलिंगी, चतुर्थ प्रमत्तसंयत द्रव्यलिंगी और भाव पाहुड में आचार्य कुन्द कुन्द देव ने सबसे पहले बाहुबलि भगवान का द्रव्यलिंगी कहा है जो कि क्षायिक सम्यकदृष्टि थे। इससे यह सिद्ध होता है कि सिर्फ द्रव्यलिंगी का अर्थ मिथ्यादृष्टि। ही नहीं है। इसी अष्टपाहुड ग्रंथ में आचार्य भगवन कुन्दकुन्द देव ने कहा है कि आज भी भरत क्षेत्र में रत्नत्रयधारी भाव लिंगी मुनि होंगे जो ऐसा नहीं मानता है वह मिथ्यादृष्टि है पंडित जी ने कहा मैं तो इन सब बातों को मानता हूँ मैने कहा बहुत अच्छा पंडित जी फिर द्रव्यलिंग भारभूत कैसे हुआ जो आप रात में कह रहे थे ? मेरे इस प्रश्न के सामने संतोष जी मौन हो गये और चर्चा करते करते हमारी मंजिल भी आ गई उन्होंने कहा बाद में चर्चा करेंगे। शौच आदि से निवृत होकर मैं देव वन्दना करने के उपरान्त स्वाध्याय करने बैठ गया कब घड़ी में साढ़े आठ बज गये मुझे पता ही नहीं चला पंडित ज्ञानचंद जी और कुछ श्रेष्ठी जन आकर मेरे सामने खड़े हो गये ब्रह्मचारी जी आपका प्रवचन हो जाये मैंने उनके इस प्रवचन के आग्रह को स्वीकार किया मेरे सामने समयसार ग्रंथ की गाथा 200 सामने आयी पुण्यपाप का विवेचन एवं नयों का विवेचन निमित्त उपादन का विवेचन आगम के परिपेक्ष्य में किया। जिससे सभा बहुत प्रभावित हुई प्रवचन उपरांत मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूँ गायन हुआ। और जिनवाणी स्तुती के बाद मैं अपने कक्ष में बैठ गया तभी मेरे पास पंडित ज्ञानचंद जी आकर खड़े हो गये बोले ब्रह्मचारी जी आपका प्रवचन ने तो गजब ढा दिया सौ फीसदी आपका तत्व निर्णय आगम के अनुकूल हैं और आप ने जो कुछ भी कहा वो आचार्य कुन्दकुन्द देव की भाषा है उनके अभिप्रायों को आपने बखुबी समझा है पर मुझे ये बात समझ नहीं आ रही है कि आपके गु रु कौन से हैं ? मैंने उनसे कहा मेरे गुरु पूज्य

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज है। चर्चायें आगे बढ़ी पंडित जी ने मुझ से पूछा कि ब्रह्मचारी जी आत्मा की अनुभूति के बिना सम्यकदर्शन तो होता नहीं है जिसे सम्यकदर्शन प्राप्त हो जाता है उसे आत्मानुभूति नियम से होती है।

मैंने कहा पंडित जी आत्मानुभूति और सम्यकदर्शन की समव्याप्ति नहीं है जहाँ जहाँ सम्यकदर्शन हो वहाँ वहाँ आत्मानुभूति हो ऐसा नियम नहीं है किन्तु जहाँ जहाँ आत्मानुभूति होती है वहाँ- वहाँ सम्यकदर्शन अवश्य होता है। जहाँ शुद्धोपयोग होता है वहाँ संयम अनिवार्य होता है क्योंकि प्रवचनसार चौदहवीं गाथा यह बात कह देती है कि जिसने तत्व ज्ञान को अच्छी तरह से जाना है तो संयम से युक्त है ऐसे श्रमणों के शुद्धोपयोग होता है पंडित जी ने मेरी बात पर मौन हो गये। फिर पंडित जी ने अपना विषय बदलते हुए कहा आप कितनी प्रतिमाओं का पालन कर रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि पंडित जी में दसवीं प्रतिमा की साधना कर रहा हूँ। उन्होंने मुझसे यह जानना चाहा कि यह प्रतिमा का क्या स्वरूप है मैने कहा प्रतिमा श्रावक के संयम विकास का नाम प्रतिमा है पूर्व-पूर्व की प्रतिमाओं का पालन करते हुए उत्तर प्रतिमाओं का पालन किया जाता है। प्रति और माँ शब्द से प्रतिमा बना है अर्थात जिनेन्द्र देव की जिस पर जिनेन्द्र देव के प्रतिपादक श्रावक धर्म की प्रतिछाया पड़ती है उसे प्रतिमा कहते हैं। पंड़ित जी बोले ब्रह्मचारी जी मैंने प्रतिमा की आज तक व्याख्या नहीं सुनी आपने बहुत सुन्दर व्याख्या की परन्तु ये सब चारित्र जो सम्यकदर्शन होने के बाद तो स्वतः ही हो जाता हे शील व्रत संयम आदि तो सब आस्रव के कारण है। मैं ने कहा पंडित जी मूल में भूल तो यहीं है। उपादान होने के बाद निमित्त अपने आप नहीं मिलता है अपितु उसे मिलाना पड़ता है जिस तरीके से बोरी में भरे हुये बीज में अंकुरण होने की योग्यता होती है किन्तु जब तक उन बीजों को खेत भूमि में नहीं डाला जाता है। तब तक उनमें अंकुरण नहीं होता है उसी प्रकार सम्यकदर्शन होने के बाद चारित्र अपने आप नहीं होता है। अपितु चारित्र के लिए पुरुषार्थ किया जाता है पंडित जी ने कहा श्रावक चारित्र तो संसार बढ़ाने वाला है और यह आश्रव बंध कराता है। तब उन्होंने एक बात और कही आपका इतना अच्छा ज्ञान और अध्ययन फिर आप इस जाल में कैसे फँस गये ? मैंने कहा कौन सा जाल ? पंडित जी बोले ये प्रतिमा के जाल में। मैंने कहां पंडित जी आपने अभी कहा था कि आपका ज्ञान सौ फीसदी आगम के अनुसार है तब तो मेरा ज्ञान सम्यकज्ञान हुआ। पंडित ज्ञानचंद जी ने कहा हाँ क्यों नहीं मैने कहा आप तो छहढ़ाला के अधिकृत विद्वान है और छहढ़ाला की चौथी ढाल में लिखा है कि **सम्यकज्ञानी होय बहुरि दृढ़ चारित्र लीजे एक देश अरू शकलदेश तसु भेद कहीजे** इस का तात्पर्य तो आप स्वयं ही समझते होंगे कि जो भी सम्यकज्ञानी हो उसे दृढ़ चारित्र ग्रहण करना चाहिये। यदि आप इसे जाल मानते हैं तो क्या संयम और प्रतिमा का संकल्प छोड़ दूँ। पंडित जी एक दम घबराते हुए बोले नहीं नहीं मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ। मैंने कहा पंडित जी आपको एक संशोधन और करना होगा वह यह कि सराग चारित्र सर्वथा आश्रव बंध कारण नहीं है। अपितु वह तो सराग चारित्र तो परम्परा से मोक्ष का कारण है चारित्र कभी हेय नहीं होता है। अपितु जो कषाय का परिणाम है वह हेय होता है इसलिए पंडित जी मैं किसी प्रकार के जाल में नहीं फंसा हूँ अपितु मैं तो जाल काट रहा हूँ। इसलिए आप मेरे से यह न पूछे कि ब्रह्मचारी जी आप इस जाल में कैसे फंसे यह संयम तो जाल नहीं मोक्ष का मार्ग है।

वाजपेयीजी को अलविदा नहीं कहा जा सकता

❊ ललित गर्ग (नई दिल्ली) ❊

भारतीय राजनीति का महानायक, भारतीय जनता पार्टी के 93 वर्षीय दिग्गज नेता, प्रखर कवि, वक्ता और पत्रकार श्री अटल विहारी वाजपेयी मौत से जंग करते हुए इस संसार से विदा हो गये हैं। उनका निधन न केवल भारत की राजनीति की बल्कि राष्टीयता की अपूरणीय क्षति है। पूरा राष्ट अपने महानायक से जुदा होकर आहत है, सन्न है। उनके निधन को एक युग की समाप्ति कहा जायेगी। इस समाप्ति को राजनैतिक जीवन में सिद्धांतों पर अडिग रहकर न झुकने, न समझौता करने की समाप्ति समझा जायेगा। उन्होंने न केवल देश के लोगों का दिल जीता है, बल्कि विरोधियों के दिल में भी जगह बनाई है।

हो सकता है ऐसे कई व्यक्ति अभी भी क्षेत्रों में कार्य कर रहें हों। पर वे रोशनी में नही आ पाते। ऐसे व्यक्ति जब भी रोशनी में आते हैं तो जगजाहिर है- शोर उठता है। अटल विहारी वाजपेयी ने पांच दशक तक सक्रिय राजनीति की, अनेक पदों पर रहें, केन्द्रीय विदेश मंत्री व प्रधानमंत्री पर वे सदा दूसरों से भिन्न रहे, अनूठे रहे। घाल-मेल से दूर। भ्रष्ट राजनीति में बेदाग। विचारों में निडर। टूटते मूल्यों में अडिग। घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। भारत सरकार ने सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से उनको अलंकृत किया, देश के सर्वोच्च सम्मान में जिसे सम्मानित किया जाये तो वह उस व्यक्ति की श्रेष्ठता का शिखर होता है। नेहरू गांधी परिवार के प्रधानमंत्रियों के बाद अटल बिहारी वाजपेयी का नाम भारत के इतिहास में उन चुनिंदा नेताओं में शामिल है, जिन्होंने सिर्फ अपने नाम, व्यक्तित्व और करिश्मे के बूते पर न केवल सरकार बनाई बल्कि एक नयी सोच की राजनीति को पनपाया, सुदृढ़ किया। उनके प्रभावी एवं बेवाक व्यक्तित्व से पूर्व प्रधानमंत्री नेहरू भी प्रभावित थे और उन्होंने कहा था कि अटलजी एक दिन भारत के प्रधानमंत्री जरूर बनेंगे। आज भारतीय जनता पार्टी की मजबूती का जो धरातल बना है, वह उन्ही की देन है। सन् 1980 से 1986 तक वे बीजेपी के अध्यक्ष रहे और इस दौरान वे बीजेपी संसदीय दल नेता भी रहे। वर्ष 1942 स्वाधीनता के आंदोलन के दौरान वे कुछ समय के लिए जेल में रहे। वे सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी सक्रिय रहे है। पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव सहित अनेक दिग्गज नेता उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते थे।

अटल बिहारी वाजपेयी 1951 में भारती जन संघ के संस्थापक सदस्य थे। अपनी कुशल वक्तृत्व शैली से राजनीति के शुरूआती दिनों में ही उन्होंने रंग जमा दिया। 1957 में जनसंघ ने उन्हें लोकसभा से चुनाव लड़ाया, बलरामपुर से चुना जीतकर वे दूसरी लोकसभा में पहुंचे। अगले पाँच दशकों के उनके संसदीय कैरियर की यह शुरुआत थी। 1968 से 1973 तक वे भारतीय जन संघ अध्यक्ष रहे। विपक्षी पाटियों के अपने दूसरे साथियों की तरह उन्हें भी आपातकाल के दौरान संयुक्त राष्ट संघ के अधिवेशन में उन्होंने हिन्दी में भाषण दिया और वे इसे अपने जीवन का सबसे सुखद क्षण बताते थे। 1980 में वे बीजेपी के संस्थापक सदस्य रहे।वे नौ बार लोकसभा के लिये चुने गये हैं दूसरी लोकसभा से तेरहवीं लोकसभा तक। 1962 से 1967 और 1986 में वे राज्यसभा के सदस्य भी रहे। वे संसद में बहुत प्रभावशाली वक्ता के रूप में

जाने जाते रहे हैं और महत्वपूर्ण मुद्दे पर उनके भाषण खास गौर से सुने जाते हैं, जो भारत के संसदीय इतिहास की अमूल्य धरोहर है।

अटल विहारी वाजपेयी 16 मई 1996 को पहली बार प्रधानमंत्री बने, लेकिन लोकसभा में बहुमत साबित न कर पाने की वजह से 31 मई 1996 को उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। इसके बाद 1997 तक वे लोकसभा में विपक्ष के नेता रहे। 1998 के आमचुनावों में सहयोगी पार्टियों के साथ उन्हों ने लोकसभा में अपने गठबंधन का बहुमत सिद्ध किया और इस तरह एक बार फिर प्रधानमंत्री बने। लेकिन ए.आई. ए. डी. एम . के द्वारा गठबंधन से समर्थन वापस ले लेने के बाद उनकी सरकार गिर गई और एक बार फिर आम चुनाव हुए। 1999 में हुए चुनाव राष्टीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के साझा घोषणापत्र पर लड़े गए और इन चुनावों में वाजपेयी के नेतृत्व को एक प्रमुख मुद्दा बनाया गया। गठबंधन को बहुमत हासिल हुआ और वाजपेयी ने एक बार फिर प्रधानमंत्री की कुर्सी संभाली। एनडीए का नेतृत्व करते हुए मार्च 1998 से मई 2004 तक, छह साल भारत के प्रधानमंत्री रहे।

इस दोरान उनकी सरकार ने 11 और 13 मई 1998 को पोखरण में पाँच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट करके भारत को परमाणु शक्ति संपन्न देश घोषित कर दिया। इस कदम से उन्होंने भारत को निर्विवाद रूप से विश्व मानचित्र पर एक सुदृढ़ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया। यह सब इतनी गोपनियता से किया गया कि अति विकसित जासूसी उपग्रहों व तकनीकी से संपन्न पश्चिमी देशों को इसकी भनक तक नहीं लगी। यही नहीं इसके बाद पश्चिमी देशों द्वारा भरत पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए लेकिन वाजपेयी सरकार ने सबका दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए आर्थिक विकास की ऊचाईयों को छुआ। उन्होंने पड़ौसी देश पाकिस्तान के साथ रिश्तों का सौहार्दपूर्ण बनाने की दृष्टि से भी अनेक उपक्रम किये। 19 फरवरी 1999 को सदा-ए-सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा शुरू की गई। इस सेवा का उद्घाटन करते हुए प्रथम यात्री के रूप में उन्होंने पाकिस्तान की यात्रा करके नवाज शरीफ से मुलाकात की और आपसी संबंधों में एक नयी शुरुआत की। कुछ ही समय पश्चात् पाकिस्तान ने तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ की शह पर पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी-चोटियों पर कब्जा कर लिया। अटल सरकार ने पाकिस्तान की सीमा का उल्लघंन न करने की अंतराष्टीय सलाह का सम्मान करते हुए धैर्यपूर्वक किंतु ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया।

अटल विहारी वाजपयी चाहे प्रधानमंत्री के पद पर रहों हो या नेता प्रतिपक्ष-बेशक देश की बात हो या क्रान्तिकारियों की, या फिर उनकी अपनी ही कविताओं की, नपी-तुली और बेवाक टिप्पणी करने में अटल जी कभी नहीं चूके। भारत को लेकर उनकी स्वतंत्र सोच एवं दृष्टि रही है-ऐसा भारत जो भूख, भय, निरक्षरता और अभाव से मुक्त हो। उनकी कविता जंग का ऐलान है, पराजय की प्रस्तावना नहीं। वह हारे हुए सिपाही का नैराश्य-निनाद नहीं, जूझते योद्धा का जय-संकल्प है। वह निराशा का स्वर नहीं, आत्मविश्वास का जयघोष है। उन्होंने विज्ञान की शकित को बढ़ावा देने के लिए लाल बहादुर शास्त्री के नारे जय जवान जय किसान में बदलाव किया और

जय जवान जय किसान, जय विज्ञान का नारा दिया।

एक स्कूल शिक्षक के घर में पैदा हुए वाजपेयी के लिए शुरुआती सफर जरा भी आसान न था। 25 दिसम्बर 1924 को ग्वालियर के ही विक्टोरिया (अब लक्ष्मीबाई) कॉलेज और कानपुर के डीएवी कॉलेज में हुई। उन्होंने राजनीतिक विज्ञान में स्नातकोत्तर किया और पत्रकारिता में अपना कैरियर शुरु किया। उन्होंने राष्टधर्म, पांञ्जन्य और वीर अर्जुन का संपादन किया। उन्होंने एक इंटरव्यू के दौरान बताया था कि वह हमेशा से एक पत्रकार बनना चाहते थे, लेकिन गलती से वह राजनीति में पहुंच गये।

इस शताब्दी के भारत के महान सपूतों की सूची में कुछ नाम जो अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं । अटल विहारी वाजपेयी का नाम प्रथम पंक्ति में होगा। वाजपेयी को अलविदा नहीं कहा जा सकता, उन्हें खुदा हाफिज भी नहीं जा सकता, उन्हें श्रद्धांजलि भी नहीं दी जा सकती। ऐसे व्यक्ति मरते नहीं। वे हमें अनेक मोड़ों पर नैतिकता का संदेश देते रहेंगे कि घोल-मेल से अलग रहकर भी जीवन जिया जा सकता है। निडरता से, शुद्धता से, स्वाभिमान से, साहस ले, मौलिकता से।

मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे वाजपेयी से मिलने के अनेक अवसर मिले, रायसीना हिल पर अणुव्रत आन्दोलन एवं आचार्य तुलसी के कार्यक्रमों के सिलसिले में अनेक बार मिला। प्रधानमंत्री रहते 7 रेडक्रोस रोड पर तीन-चार मुलाकातें हुई। इस वर्ष उनके जन्मदिन पर कृष्ण मेनन मार्ग पर भी उनके दर्शनों का दुर्लभ अवसर मिला। उनमें गजब का अल्हड़पन एवं फक्कड़पन था। वे हमेशा बेपरवाह और निश्चित दिखाई पड़ते थे, प्रायः लोगों से घिरे रहते थे और हंसते-हंसाते रहते थे। उनके जीवन के सारे सिद्धांत मानवीयता एवं राष्टीयता की गहराई ये जुड़े थे और उस पर वे अटल भी रहते थे। किन्तु किसी भी प्रकार की रूढ़ि या पूर्वाग्रह उन्हें छू तक नहीं पाता। वे हर प्रकार से मुक्त स्वभाव के थे और यह मुक्त स्वरूप भीतर की मुक्ति का प्रकट रूप है।

भारतीय राजनीति की बड़ी विडम्बना रही है कि आदर्श की बात सबकी जुबान पर है, पर मन में नहीं। उड़ने के लिए आकाश दिखाते हैं पर खड़े होने के लिये जमीन नहीं । दर्पण आज भी सच बोलता है पर सबने मुखौटे लगा रखे हैं। ऐसी निराशा, गिरावट व अनिश्चितता की स्थिति में वाजपेयी ने राष्टीय चरित्र, उन्नत जीवन शैली और स्वस्थ राजनीति प्रणाली के लिए बाराबर प्रयास किया। यह व्यक्ति नहीं है, यह नेता नहीं है यह विचार है, एक मिशन है। और 93 वर्ष के लंबे सफर का पगडंडियों, राजमार्गों, गांवो, महानगरों, झोपड़ियों और भवनों का अनुभव अपने में समेटे वह व्यक्ति, समाज एवं राष्ट के बदलाव की सोचता रहा है, साइनिंग इंडिया-उदय भारत के सपने को आकार देता रहा। राष्ट को उन्नत राष्ट बनाने के लिए रात-दिन परिश्रम करता रहा है। उनका समूचा जीवन राष्ट को समर्पित एक जीवन यात्रा का नाम है, आशा को अर्थ देने की यात्रा, ढलान से ऊंचाई की यात्रा, गिरावट से उठने की यात्रा, मजबूरी से मनोबल की यात्रा, सीमा से असीम होने की यात्रा, जीवन के चक्रव्यूओं से बाहर निकलने की यात्रा। मन बार-बार उनकी तड़प को प्रणाम करता है। उस महापुरुष के मनोबल को प्रणाम करता है।

श्रद्धांजलि लेख : आदरणीय प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी के स्वर्गवास पर

''एक सूर्य जो अस्त हो गया''

❊ डॉ. सुनील जैन संचय ❊

जो इस दुनिया में आया है, वह जाएगा अवश्य। यह सृष्टि का अटल सिद्धांत है। जो मित्र, परिचित, आदरणीय, गुरुजन या निकट संबंधी सदा के लिये जाता है, उसके जाने से दुःख होता ही है, पर कुछ लोगों का जाना हृदय पर अमिट पीड़ा छोड़ जाता है। जब हम अपने जीवन में इस तरह के एक विशेष व्यक्ति को खो देते हैं, समय रूकता प्रतीत होता है।

लोग अच्छे हैं बहुत दिल में उतर जाते हैं।
इक बुराई है तो बस ये है कि मर जाते हैं।।

यह खबर सुनकर मैं विश्वास ही नहीं कर पा रहा था कि अभूतपूर्व प्रतिभा के धनी, जैन जगत के विद्वत शिरोमणि, जैन विद्या के गहन अध्येता, परम आदरणीय प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन फिरोजाबाद अब हमारे बीच नहीं रहे हैं। अभी 2 अगस्त को ही फोन पर उनसे उनके स्वास्थ्य का हाल-चाल जाना था। उनसे उनके स्वास्थ्य के बारे में पूंछा तो वे बोले मैं बिल्कुल स्वास्थ्य हूँ, फिर आयु के जिस पड़ाव पर हूँ, उसमें कभी कुछ कहा नहीं जा सकता। उनसे सम-सामयिक ज्वलंत विषयों पर लम्बी चर्चा हुई। जैन समाज में घटित हो रहीं कुछ ज्वलंत घटनाओं पर उन्होंने गहरी चिंता जतायी। इसके दो दिन बाद पता चला कि उनका स्वास्थ्य खराब होने के कारण अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा है, अभी और दो दिन बीते थे कि 8 अगस्त को जब पता चला कि विद्वानों की गौरवशाली परंपरा के संवाहक अब हमारे बीच नहीं रहे यह खबर सुनकर स्तब्ध रह गया। अंतिम समय में उन्हें परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का सम्बोधन प्राप्त हुआ। उनके जीवन मे आज जैसी सुविधाओं के आडंबर नहीं थे। शरीर से भी वे अधिक स्वस्थ थे क्योंकि विचारों और रहन-सहन का स्वास्थ्य से सीधा संबंध है। सरल व्यक्ति स्वाभाविक रूप से अधिक स्वस्थ और सम्पन्न होता है।

एक सूरज था कि तारों के घराने से उठा।
आँख हैरान हे क्या शख्य जमाने से उठा।।

प्राचार्य जी ने जैन जगत की जो सेवा की है उस शब्दों में व्यक्त करना सूरज को दीपक दिखाना होगा। उनकी लेखनी व विचार सदैव अमर रहेंगे । उनका जाना समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। सिंह गर्जना के साथ जिनागम के गूढ़ रहस्य को सरल सैली में बताने वाले विद्वत सूर्य अस्त हो गया है, वे निर्भीक वक्ता के रूप में जाने जाते थे। वे अपनी बात बेबाक, स्पष्ट और निष्पक्ष रूप से पूरी निष्ठा और निर्भीकता से रखते थे। जब वह बोलते थे तो उनकी ओजपूर्ण धाराप्रवाह वाणी सुनकर सभी मंत्रमुग्ध हो जाते थे। बोलने में वे जितने स्पष्टवादी थे उतनी ही लिखने में। उनकी पैनी कलम से लिखे गए आलेख जनसामान्य के साथ विद्वान, साधुगण भी बड़ी ही ध्यान से रूचिपूर्वक पढ़ते थे। आपके आलेखों की हमेशा मांग

रही। आपने लिखने और बोलने में कभी भी समझौता नहीं किया। आपके आलेखों में प्रयुक्त मुक्तक शानदार और असरदार होते थे। सरल भाषा मे जनसामान्य तक आप अपनी बात पहुँचाने में माहिर थे। आपके आलेखों में प्रयुक्त मुक्तकों का तो मैं अपनी मुक्तक की डायरी में हमेशा संकलन भी करता था। जब भी उनकी कोई नई कृति प्रकाशित होती थी, एक प्रति मुझे डाक से अवश्य प्राप्त होती थी। पिछले दिनों संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी के फिरोजाबाद चातुर्मास की स्मृतियों को समेटे उनकी महत्वपूर्ण कृति प्राप्त हुयी थी। आदरणीय प्राचार्य जी हमारे आदर्श रहे हैं । सभी साधु चाहे वे किसी भी संघ के हों , प्राचार्य जी की विद्वता की प्रशंसा करते थे। सभी विद्वान भी उनकी मुक्तकंठ से प्रशंसा और आदर-सम्मान करते थे। ऐसे बेमिशाल व्यक्तित्व का हमारे बीच में से चले जाना निश्चित ही दुःखदायी है। उनके जाने से विद्वत जगत में जो रिक्तता हुई है उसकी पूर्ति संभव नहीं है। आपने जैन जगत को जो दिशा निर्देश दिए वह हमेशा जीवंत रहेंगे तथा सभी आपके ऋणी रहेंगे। समाज की ज्वलन्त समस्याओं पर आपने हमेशा अपनी राय देकर समाज को दिशा देने का कार्य किया।

प्राचार्य जी हमेशा कहा करते थे कि सादा जीवन उच्च विचार, संतोष ही सुख की खान है। सादा जीवन से ही हमारे अन्दर मानवीयता का समावेश होता है। ऐसे जीवन ओर आचरण मे जो आनन्द, सुख, संतोष, सरलता और पवित्रता है, वह कृत्रिम, ऐश्वर्यशाली और उलझन भरे जीवन में कहा। उन्होंने इसको अपने जीवन में भी जिया।

जैन समाज ने प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी के रूप मे एक बड़ा स्तंभ खो दिया। वे हमेशा याद आएंगे। अच्छे लोग कभी नहीं मरते वो अपनी माद्दी जिस्मानी सूरत से तो आजाद हो जाते हैं लेकिन उनकी यादें दिलों में हमेशा घर किए रहती हैं। प्राचार्य जी हमेशा स्मृति पटल पर जीवंत रहेंगे।

उनकी आत्मा की शांति की कामना करते हैं। पूरी विद्वत समाज में भी शोक व्याप्त है। और उनकी आत्मा शांति हेतु श्रद्धा सुमन अर्पित करती है। हम ऐसे विद्वत श्रेष्ठ श्री नरेन्द्र प्रकाश जी फिरोजाबाद वालों के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। हमारे आदर्श आदरणीय प्राचार्य जी को कोटि-कोटि नमन के साथ अश्रुपूरित श्रद्धांजलि-

करता हूँ अर्पित मैं श्रद्धांजलि आपको, परमात्मा में विलीन रहे आत्मा आपकी।
मोक्ष हो, मोह-माया का अंश भी न हो, नश्वर जग से सुदूर रहे जीवात्मा आपकी।।

शव वाहन उपलब्ध

इन्दौर स्मार्ट सिटि परवार जैन पारमार्थिक टस्ट द्वारा
शव वाहन संचालित किया जा रहा है।
वाहन हेतु फोन:- 0731-2547300 **पर सम्पर्क कर सकते हैं ।**

आचार्य श्री विद्यासागर जी के शीतलधाम की परिकल्पना

❊ ब्र. दिलीप भैया (विदिशा) ❊

आचार्य श्री जी की दृष्टि में शीतल धाम तीर्थ क्षेत्र निर्माण की परिकल्पना का जन्म कैसे हुआ इस बात को जानने के लिए हमें सर्वप्रथम उस क्षेत्र के इतिहास के बारे में जानना अनिवार्य होगा कि यह क्षेत्र कौनसा है ? कहां है ? क्यों तीर्थक्षेत्र हैं ? निर्माण की आवश्यकता क्यों पड़ी ? आदि आदि अनेकों प्रश्नों का समाधान इतिहास से ही स्पष्ट होगा।

अनादि कालीन इस कालचक्र के प्रवाह में वर्तमान अवसर्पिणी काल के चतुर्थ दुष्मा सुष्मा काल में भरत क्षेत्र में तीर्थंकरों में दशम तीर्थंकर 1008 भगवान श्री शीतलनाथ स्वामी हुए। जिनका जन्म भरत क्षेत्र के मलय देश के भ्रदपुर नामक नगर में इक्ष्वाकु वंशी महाराजधिराज दृढ़रथ की महारानी सुनंदा के गर्भ से हुआ था । जो कि आज विदिशा मध्यप्रदेश के नाम से जाना जाता है । आदिपुराण, उत्तरपुरण, हरिवंश पुराण, आदि जैन पुराणों में एवं महाभारत रामायण आदि वैदिक पुराणों में भी भगवान श्री शीतलनाथ स्वामी के चरणों से पवित्र भूमि विदिशा जिसका प्राचीन नाम भद्रिलपुर, भद्दलपुर, भेलसा का विभिन्न संदर्भों में उल्लेख मिलता है। इस विषय में विदिशा नगर के पुरावेत्ता श्री राजमहल जी मड़वैया द्वारा लिखित विदिशा वैभव पुस्तक और स्वर्गीय श्री गुलाबचंद जी जैन राजकमल द्वारा लिखित जैन संस्कृति के आलोक में तीर्थंकर शीतलनाथ के गर्भ जन्म व तप तीन कल्याणकों की पावन भूमि विदिशा मध्यप्रदेश भी लिखी गई जो कि अवलोकनीय है। दोनों विद्वानों ने इस विषय पर बहुत शोध के उपरांत लेख व पुस्तक प्रकाशित किए हैं। जिनमें से कुछ यहां संदर्भित किए जा रहे हैं।

आदि तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ने 52 जनपदों की रचना की थी । उनमें मालव व दशारण जनपदों का नाम आया है, जो एक दूसरें से लगे हुए थे । उत्तरपुराण के अनुसार दशार्ण विंध्याचल पर्वतमाला के उत्तर में स्थित था। महाभारत में दशार्ण का दो भागों में उल्लेख किया गया है, एक पश्चिमी दशार्ण जिस पर पांडव पुत्र नकुल ने विजय प्राप्त की थी दूसरा पूर्वी दशार्ण जिसमें मालवा सम्मिलित था व उसकी राजधानी विदिशा थी।

अनेक दार्शनिक एवं साहित्य विद्वानों की यह जन्मभूमि रही है । आदि कवि वाल्मीकी, महाकवि वाण महर्षि पंतजलि, कवि कालिदास सभी का विदिशा से घनिष्ठ संबंध रहा है।

जैन आगम में विदिशा के भद्रिलपुर, भद्दिलपुर, भद्रालिसा, भद्रपुर, भद्रावती आदि कई नाम प्राप्त होते हैं । पाली ग्रंथो में से वेसनगर, चैत्यनगर या वैश्य नगर आदि नामों से संबोधित किया गया है । प्राचीन संस्कृत साहित्य में विदिशा का वैदिश, वेदिशा, वेदिशपुर लिखा है। विदिशा नगर में प्राप्त कुछ प्राचीन शिलालेखें में इसका भद्रावती या भद्रपुर नाम उत्कीर्णित है । डॉक्टर पन्नालाल जी जैन उत्तर पुराण की टीका में लिखते हैं, भद्रपुर मालवा का एक प्रदेश था, जिसे कुछ लोग भद्दिलपुर, भेलसा, विदिशा मानते हैं । इसी के अंत के परिशिष्ट में भी भद्दिलपुर के लिए विदिशा का संकेत किया है । कुछ शब्दकोशों में विदिशा को भद्रपुर या भद्दिलपुर का पर्यायवाची माना गया है।

विदिशा एवं एसके समीपवर्ती प्रदेश को वैदिश कहा जाता था।

विदिशा दशाग्र प्रदेश की राजधानी थी व उसका वर्तमान नाम भिलसा है।

स्वामी समंतभद्र लेखक श्री जुगल किशोर मुख्तियार पृ. 30

दशार्ण का जैन आर्य क्षेत्रों में नाम है भेलसा वर्तमान नाम विदिशा के समीपवर्ती प्रदेश को दशार्ण माना जाता है।

भारत के प्राचीन जैन तीर्थ लेखक डॉ. जगदीश चंद्र जैन अनेक ऐतिहासिक विद्वानों का कथन है कि विदिशा ही प्राचीन भद्दिलपुर है। विदिशा ईसा पूर्व छठी शताब्दी भगवान महावीर के काल से ही विस्तार पाने लगा था। देश मध्य स्थित होने कारण उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम जाने वाले सभी राजमार्ग विदिशा से होकर के ही जाते थे । विदिशा लेखक महेश्वर दयाल खरे

भद्रिकावती (मध्यप्रदेश का भेलसा-विदिशा नाम से चिन्हित नगर) दसवें तीर्थंकर शीतलनाथ की जन्मभूमि है । निकटवर्ती उदयगिरी पहाड़ी में गुप्तकालीन जैन गुफा मंदिर है।

तीर्थंकरों का सर्वोदय मार्ग लेखक डॉ ज्योति प्रसाद जैन ईसा के 364 वे वर्ष में आचार्य भद्रबाहु अपने मुनि संघ सहित विदिशा पधारे थे । उन्होंने सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय जो उस समय यही थे उपदेश दिया था।

महाराजाधिराज चंद्रगुप्त अपने मंत्री साव वीरसेन के साथ विदिशा पधारे थे तथा उन्हीं के आदेश पर वीरसेन ने उदयगिरि पर गुफाओं का निर्माण कराया था।

भित्ति लेख, गुफा नंबर 7, उदयगिरि

विस्तार के भय से इस विषय में और भी अन्य अनेकों प्रमाण होने पर भी यहां उद्धत नहीं कर रहा हूँ। अंत में मात्र शासकीय दस्तावेजों का प्रमाण दे रहा हूँ।

विदिशा जैन धर्म की पीठ रही है। दसवें तीर्थंकर शीतलनाथ का यहां जन्म हुआ था।

मध्यप्रदेश गजेटियर

विदिशा में जैन मत का सबसे अहम उल्लेख मिलता है। यहां के एक जैन श्रावक भद्रबाहु जो भद्लपुर- विदिशा छोड़कर उज्जैन चले गये थे । वहां अकाल पड़ने पर पुनः विदिशा लौट आए। यह घटना ईसा पूर्व 53 से 150 वर्ष के मध्य की है।

ग्वालियर स्टेट गजेटियर पृ. 266

पश्चिम मध्य रेलवे की सूची में विदिशा को आज भी पूर्व नाम भेलसा के नाम से ही जाना जाता है । जिसका संक्षिप्त नाम बी.एच.एस अंकित होता है।

उक्त समस्त प्रमाण के आधार पर ही भगवान शीतलनाथ स्वामी की कल्याण भूमि विदिशा को मानकर यहां विगत कई वर्षों से भगवान श्री शीतलनाथ स्वामी जी का जन्म कल्याणक महोत्सव अति उत्साह पूर्वक समाज मनाती आ रही है एवं भगवान के मोक्ष कल्याणक पर तो विगत 50 वर्षों से उदयगिरि पर्वत की तलहटी में वृहद मेले का आयोजन पुरातत्व विभाग के सहयोग से समाज द्वारा लगया जाता है।

गुरुदेव आचार्य श्री का बुंदेलखण्ड आगमन एवं कल्याण भूमि का जानकारी

गुरुदेव आचार्य श्री का आगमन जब लगभग 1976 के आसपास बुंदेलखंड में हुआ तो सारे बुंदेलखंड के जैन समाज में एक ही बात चलने लगी कि वर्तमान में चतुर्थकालीन चर्या वाले मुनिराज किसी को देखना हो तो आचार्य श्री विद्यासागर जी के दर्शन कर लो। बस फिर क्या था हमारे नगर के विद्वान पंडित सागरमल जी जैन जो कि परमानंद दिगम्बर जैन मंदिर किरी मोहल्ला में

प्रवचन, स्वाध्याय एवं भगवान श्री शीतलनाथ स्वामी के जन्म उत्सव के कार्यक्रम किया करते थे, प्रतिवर्ष समाज के लोगों को बस के माध्यम से आचार्य श्री के दर्शन हेतु ले जाने लगे । वह चूंकि विद्वत परिषद एवं शास्त्री परिषद् के अध्यक्ष आदि पदों पर आसीन रहे इसलिए आचार्य श्री से भी आपकी काफी निकटता हो गई थी। पंडित जी के द्वारा आचार्य श्री को विदिशा क्षेत्र की जानकारी दी गई और समाज के द्वारा विदिशा पधारने का आमंत्रण श्रीफल भेंट करके किया जाने लगा। लगातार अनेक वर्षों तक आचार्य श्री जी को विदिशा हेतु श्रीफल भेंट करते रहने के बाद 3 जनवरी सन् 1991 में आचार्य श्री जी के परम प्रभावक शिष्य क्षु. श्री ध्यान सागर जी महाराज विदिशा नगर पधारे और निश्चय पक्ष के कहे जाने वाले विद्वानों के बीच किला अंदर दिगम्बर जैन मंदिर में धर्म की महति प्रभावना की। फलस्वरूप आचार्य श्री जी ने अपनी सुयोग्य शिष्या आर्यिका 105 दृढ़मति माताजी आदि 11 माताओं के संघ को महावीर जयंती महोत्सव एवं ग्रीष्मकालीन वाचना हेतु इसी वर्ष 1991 विदिशा भेजा और आपके द्वारा भी उसी जिनालय किला अंदर मंदिर में श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार की वाचना की गई। जिससे सारे नगर में बहुत प्रभावना एवं मूकमाटी पर संगाष्ठी का अयोजन हुआ।

कल्याण भूमि के उद्धार का बीजवपन :- आचार्य श्री जी कि आशीष कृपा भगवान श्री शीतलनाथ स्वामी की भूमि पर इस प्रकार सतत जारी रही और इसी क्रम में गुरु जी ने सन् 1992 में महावीर जयंती एवं ग्रीष्मकाली वाचना हेतु मुनि श्री क्षमासागर जी, मुनि श्री समता सागर जी, मुनि श्री प्रमाण सागर जी, ऐलक श्री उदारसागर जी, एवं क्षु. श्री प्रसन्न सागर जी को विदिशा आने की आज्ञा प्रदान की । ग्रीष्मकालीन समय में ही यहां के तत्कालीन कलेक्टर महोदय श्री सुरेश जी जैन आई ए एस के साथ समाज जनों ने मिलकर उदयगिरि पहाड़ी के पीछे लगभग 54 बीघा जमीन क्रय की एवं श्री सुरेश जी जैन की अध्यक्षता में श्री दिगम्बर जैन शीतल विहार न्यास का भी गठन कर दिया गया । इसको संयोग ही कहें कि चातुर्मास के पूर्व संघ के गमन का समय आया तो मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज अत्यंत अस्वस्थ हो गए, फलित इस नगरी को मुनि संघ का चातुर्मास भी प्राप्त हो गया। फिर क्या था इसी चातुर्मास में क्षेत्र का सर्वे किया गया और समवशरण की रूपरेखा तैयार की गई।

आचार्य श्री को कल्याणकभूमि पर लाने की तैयारियाँ :- सन् 1995 में पुनः मुनि श्री समता सागर जी , मुनि श्री प्रमाण सागर जी एवं ऐलक श्री निश्चय सागर जी महाराज महावीर जयंती एवं ग्रीष्मकालीन हेतु नगर पधारे और गुरु जी की आगवानी की योजना समाज में बनाई जाने लगी। अचानक गुरु जी ने यहां न आकर सागर नगर में भाग्योदय तीर्थ के निर्माण का उदय कर दिया । अपने विदिशा ना आ पाने की भरपाई गुरु जी ने सागर की कुछ बूंदें स्वरूप ज्येष्ठ आर्यिका 105 गुरुमति माताजी, आर्यिका 105 उज्जवलमति माताजी, आर्यिका 105 चिंतनमति जी के चातुर्मास हेतु आज्ञा प्रदान की।

विदिशा आगमन से पूर्व समाज को संगठित करने की बात :- सन् 1995 मे विदिशा में आर्यिका माता का चातुर्मास चल रहा था तभी एक घटना हमारे नगर में घटी

इसके बाद जब सभी लोग आचार्य श्री के पास श्रीफल भेंट करने गए तब आचार्य श्री जी ने समाज के संगठित होने की बात कही। इसी क्रम में जब आचार्य श्री के पास सन् 1998 में विदिशा के लोग भाग्योदय पहुंचे तो आचार्य श्री ने कहा कि मैं क्या करूं आना तो बहुत चाहता हूँ लेकिन संयोग ही नहीं बन पाते इस शब्द को सुनकर ही हम सभी लोग बहुत खुश हुए कि आचार्य श्री का आने का मन तो रहता ही है। आचार्य श्री जी ने आशीर्वाद के रूप में ब्रह्मचारी अशोक भैया और ब्र. अभय भैया को वर्षायोग 2 माह के लिए विदिशा भेजा और समाज के संगठन के गठन की बात कही। भैया द्वय के आने पर यहां 16 दिवसीय श्री शांतिनाथ महामंडल विधान का कार्यक्रम हुआ और उसके समापन पर विशाल प्रभावना जुलूस निकाला गया, जो कि समाज में पहली बार इतने विशाल रूप में निकला था एवं सकल दिगम्बर जैन समाज की एक अस्थाई तदर्थ समिति बनाई गई । जिसके अध्यक्ष श्रीमान हृदयमोहन जी जैन साहब को बनाया गया। सकल दिगम्बर जैन समाज के गठन हो जाने के बाद जनवरी 2000 में मुनि श्री समता सागर जी, मुनि श्री प्रमाण सागर जी एवं ऐलक निश्चय सागर जी का पुनः विदिशा आगमन हुआ।

शीतकालीन वाचना, ग्रीष्मकाली वाचना सम्पन्न हुई, इस इंतजार में कि आचार्य श्री जी विदिशा नगर में शीघ्र अति शीघ्र आने वाले हैं ौर इसी के साथ उदयगिरी के पीछे जो भूमि क्रय की गई थी उस पर निर्माण कार्य भी प्रारंभ हो गया जिसमें 2 बड़े हॉल और लगभग 18 कमरों का निर्माण भी संपन्न हुआ। आचार्य श्री जी के आगमन का इंतजार मात्र शेष था, इस वर्ष आचार्य श्री जी के आने तक के लिए कई लोगों ने अपनी प्रिय वस्तुओं का भी त्याग कर दिया था। समाज का उत्साह देखने लायक था लेकिन आचार्य श्री जी फिर नहीं आ सके। आचार्य श्री जी उस समय अमरकंटक में विराजमान थे मैं उनके दर्शन हेतु अमरकंटन गया था वहां से लौटकर जैसे ही आया, स्टेशन पर ही कुछ लोग मेरे पास पहुंचे और कहा कि आपको मुनि श्री समतासागर जी ने बुलाया है और पहुंचने पर पता चला कि मुझे चातुर्मास की स्वीकृति लेने के लिए पत्र ले करके पुनः अमरकंटक आज ही जाना है । परिणामतः आचार्य श्री जी का आशीर्वाद इस बार उदयगिरि क्षेत्र पर चातुर्मास करने हेतु प्राप्त हो गया और क्षेत्र वाकई में तीर्थक्षेत्र बन गया।

अनेदेखे आदिनाथ भगवान का अलौकिक आकर्षण :- इसी चातुर्मास में आचार्य श्री जी को जानकारी मिली कि विदिशा नगर में लगभग 30किमी. दूर लेकिन उदयगिरि पर्वत के पीछे से लगभग 15 किमी. दूर बर्रो ग्राम में 22 फरवरी सन् 1981 को भूगर्भ से एक विशाल लगभग 5 फुट पद्मासन के आदिनाथ भगवान की प्रतिमा प्रकट हुई थी और वह आज भी उसी ग्राम में जिसके घर से प्राप्त हुई थी उस व्यक्ति के अधीन किन्तु समाज द्वारा निर्मित स्थान पर पूजित होकर विराजमान है। फिर क्या था गुरु जी ने कहा कि उन भगवान की प्रतिमा को तीर्थ क्षेत्र पर लाया जावे । प्रतिमा जी को लाने के लिए समाज के कई वरिष्ठ लोगों द्वारा और मुनि द्वय प्रयास किया गया लेकिन कुछ राजनीतिक व स्थानीय, सामाजिक कारणों से प्रतिमा जी को नहीं लाया ला सका। इसी चातुर्मास में कुंडलपुर के बड़े बाबा आदिनाथ भगवान के महामस्तकाभिषेक की ऐतिहासिक योजना मुनि द्वय के सान्निध्य में तीर्थक्षेत्र पर ही बनी थी।

अंतोगत्वा 26 वर्षो के निरंतर चल रहे

दीर्घ इंतजार की घड़ियां समाप्त हुई और दिनांक 28 मार्च 2002 को जब फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा होलिका दहन का दिन था, आचार्य श्री विद्यासागर जी गुरुदेव इस पावन पुनीत धरा पर पधारें। इस आगवानी में सारा विदिशा शहर जैन हो या जैनेत्तर सभी आर्यिका 105 अनंतमति माताजी के संघ के साथ शहर से 3 कि.मी दूर पोल फैक्टी पर आगवानी हेतु पहुंचे । सारा शासन-प्रशासन, सामाजिक व्यवस्थाएं ध्वस्त हो गई जनसैलाब के आगे। चारों और जय जय कार के नारे, शहर दुल्हन की तरह सजा-धजा किसी को कोई होश-हवास नहीं , जहां जगह मिलती वहीं से दौड़ता भागता चला रहा था और यह सब नजारा देख गुरु जी केा कहना पड़ा कि- हमें पहली बार होली पर दीपावली का नजारा देखने को मिला ऐसे शब्दों को सुनकर सारा जनसमूह तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। गुरु जी इस प्रवास में विदिशा 18 दिन रहे, उदयगिरी तीर्थक्षेत्र पर गए, क्षेत्र का निरीक्षण करने के उपरांत कुछ विचार किया और तीर्थ क्षेत्र व समाज की दूरी अधिक होने के कारण क्षेत्र का निर्माण शहर के निकट करने का भाव समाज के बीच में रखा । विदिशा नगर दिल्ली- मुंबई रेलवे मार्ग पर होने के कारण, विश्व प्रसिद्ध सांची के अति निकट 10 कि.मी होने के कारण, समोशरण का निर्माण रेलवे टेक के निकट जैन कॉलेज के पीछे हरिपुरा क्षेत्र में करने का निर्णय लिया गया। गुरुजी ने कहा-यहां से प्रतिदिन सैकड़ों यात्री टेनों के माध्यम से निकलेंगे, भगवान के दर्शन का लाभ लाखों लोगों को यहां से होगा। इस व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर के ही स्थान परिवर्तित कर दिया गया।

इसी वर्ष 2002 कार्तिक मास की अष्टान्हिका में मुनि श्री अजितसागर जी एवं ऐलक श्री निर्भयसागर जी महाराज नगर पधारे। उनके सान्निध्य में उस नवीन भूमि पर निर्माण कार्य प्रारंभ करने के लिए सैकड़ों जोड़ों के साथ श्री शांतिनाथ महामंडल विधान किया गया। वह शुभ दिन था।

आचार्य श्री जी का आचार्य पदारोहण दिवस जो की तिथि और दिनांक 30 वर्षों के अंतराल बाद पुनः आया था वह दिन था, 22 नंवम्बर 2002 मगसिर कृष्णा दोज।

निर्माण कार्य प्रारंभ :- सन् 2005 में मुनि श्री अजितसागर जी महाराज का पुनः सानिध्य प्राप्त हुआ और इसी चातुर्मास के अंत में क्षेत्र पर निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया। आचार्य श्री जी के द्वारा समाज के बीच भावना रखी गई कि क्षेत्र पर पाठशालाओं के द्वारा कुएँ का निर्माण हो तो अच्छा रहेगा। संयोजक होने के नाते भावना हो हम तक पहुंचाया गया और नगर की पाठशालाओं ने कुएं के निर्माण में भरपूर सहयोग दिया । कुऐं का निर्माण पाठशालाओं द्वारा करके आचार्य श्री जी भावना को हम सभी ने पूर्ण किया।

आचार्य श्री द्वारा क्षेत्र पर भगवान श्री आदिनाथ जी को लाने की भावना व्यक्ति करना :- सन् 2008 में आचार्य श्री के सानिध्य में गंजबासौदा पंचकल्याणक चल रहा था। तभी विदिशा नगर की सकल दिगम्बर जैन समाज के लोग अपने साथ सैकड़ो जैन, जैनेत्तर मित्र बंधुओं के साथ गुरु जी के श्री चरणों में दर्शन हेतु पहुंचे और सभी ने मंच से आचार्य श्री जी से विदिशा आगमन के लिए विशेष अनुरोध किया। मंच से आचार्य श्री जी ने कुछ नहीं कहा और ऊपर हॉल में पहुंचकर विदिशा के लोगों के बीच में अपनी पुरानी बात दोहराई की उन बर्रो वाले भगवान श्री

आदिनाथ स्वामी को लाने का कार्य पहले सम्पन्न करो। समाज के अध्यक्ष श्री हृदय मोहन जी साहब ने कहा कि आचार्य श्री बहुत प्रयास कर चुके हैं लेकिन वह व्यक्ति जिसके घर से प्रतिमा निकली है वह मानने को तैयार नहीं होता। तभी मैंने खड़े होकर आचार्य श्री जी से विनम्र निवेदन किया कि गुरु जी जैसी मेरी जानकारी में है उस व्यक्ति के पास पहले बहुत लोग जाया करते थे, प्रयास करते थे लेकिन उसे अन्य लोगों ने प्रतिमा जी को ना देने के भड़का रखा था इसलिए वह प्रतिमा देने को तैयार नहीं होता था। लेकिन अब गत कई वर्षों से कोई भी व्यक्ति उसके पास नहीं जाता है। यदि कोई एक व्यक्ति, सिर्फ एक व्यक्ति को इसकी जिम्मेदारी सौंपी जाए तो शायद काम बन सकता है तो समाज के अध्यक्ष श्री हृदयमोहन जी जैन साहब के मुख से निकला कि दिलीप भैया जी आप ही जिम्मेदारी को ले लें। ऐसे शब्द सुनकर मैं स्तब्ध रह गया इतना बड़ा कार्य और मैं इतना छोटा, लेकिन आचार्य श्री जी के आशीर्वाद ने मुझमें साहस भरा और मैंने स्वीकृति में अपनी गर्दन हिला दी यह कहकर कि यदि आचार्य श्री जी का आशीर्वाद होगा तो शायद मैं इस काम को संपन्न कर संकूगा ।

यहां यह विचारणीय है कि आचार्य श्री की इच्छा और उनके आशीर्वाद मात्र से यह कार्य कितनी जल्दी संपन्न हो गया। मुझे जैसे ही इस कार्य को करने का कार्यभार सौंपा गया तुरन्त विदिशा के ही एक व्यक्ति इंजीनियरिंग ऐ.के. जैन मेरे पास आए और कहा कि भैया जी मुझे भी इस कार्य से अवश्य जोड़ लेना मुझसे जो भी सहयोग बने अवश्य मेरा सहयोग लेने मेरा ऐसा आपसे निवेदन है । मैंने यह खुशखबरी फोन के माध्यम से अपने बड़े भाई श्री मनोज जैन को दी क्योंकि वही मेरे परिवार से यदाकदा बर्रो ग्राम जाते रहते थे। भगवान के दर्शन करने एवं पर्युषण पर्व के समय वार्षिक द्रव्य दान देने के लिए। विदिशा पहुंच कर अपने भाई से पूरी बात कही तो उन्हों ने कहा कि वह व्यक्ति कुछ लोभी प्रवृत्ति का था लेकिन कई वर्षों से कोई उससे नहीं मिला तो उसकी प्रवृत्ति कुछ कम अवश्य हुई है और उसने कुछ दिन पूर्व मुझसे कहा भी था कि अब तो कोई भगवान को ले जाने की बात भी नहीं करता। बड़े भाई से समस्त जानकारी लेकर मैं एवं इंजी. ऐ.के. जैन आचार्य श्री जी के पास पहुंचे। आचार्य श्री ने कहा उसे खुश करके आना किसी प्रकार से वह अप्रसन्न न रहे। बस इसी मूलमंत्र को लेकर कार्य किया गया। भगवान को विदिशा लाने की बात और उसकी इच्छा के अनुसार उसे राशि देने की बात की गई, उसे मनाया गया और आचार्य श्री के आशीर्वाद फलस्वरूप वह मान गया । राजनीतिक व प्रशासनिक व्यवस्था की जिम्मेदारी सकल दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष श्रीमान हृदयमोहन जी एवं श्री दिगम्बर जैन शीतल विहार न्यास के अध्यक्ष श्री अनिल कुमार जी जैन एडवोकेट को सौंपी गई। जिस कार्य को आप दोनों महानुभावो ने बहुत ही निपुणता के साथ पूर्ण किया। हम स्टाम्प पेपर पर लिखित अनुमति का कार्य सम्पन्न कराकर वे दस्तावेज जैसे ही गुरुजी के पास लेकर पहुंचे तो उनके हर्ष का ठिकाना ना रहा। उन दस्तावेजों को हमने आज भी सुरक्षित रखा है। आचार्य श्री जी ने तुरंत ब्र. प्रदीप भैया अशोकनगर को बुलाया और कहा कि तुरंत भगवान को लाने का मूहूर्त निकालो और कार्य सम्पन्न कराओ। बस फिर क्या था, वह शुभ दिन 21 फरवरी 2008 गुरुवार का दिन जय किया गया। भगवान को

विधि पूर्वक लाने को ब्रह्मचारी प्रदीप भैया के साथ ओर भी अनेक ब्रह्मचारी भाई उनके साथ आए, विदिशा के भी कई लोग उस विशेष अनुष्ठान में शामिल होने के लिए पहुंचे। अनुष्ठान के उपरांत जैसे ही भगवान को विदिशा लाने के लिए उठाना गया तो चारों ओर जय जयकार के नारे लगने लगे ओर भगवान को विदिशा लाना प्रारंभ किया कि तुरंत फोन के माध्यम से समाचार आया कि आचार्य श्री जी ने भी गंजबासौदा से विदिशा के लिए गमन कर दिया है। मनों गुरुजी कहना था कि पहले भगवान का गमन हो तो हम तो स्वयं ही आ जाएंगे। धन्य वह दिवस 21 फरवरी 2008 जिस दिन भगवान ने विदिशा के लिए गमन किया संयोग देखें कि पूरे 27 वर्ष पूरे आप श्री आदिनाथ भगवान स्वामी जी 22 फरवरी सन् 1981 को ही भूगर्भ से प्रकट हुए थे।

बस फिर क्या था भगवान विदिशा पधारे और 2 दिन पश्चात 23 फरवरी सन् 2008 को गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महाराज का मंगल प्रवेश विदिशा नगरी में हुआ और उसी प्रथम प्रवेश के दिन ही 2 कि.मी दूर चल करके आचार्य श्री जी ने मेरे परिवार को आहार का सौभाग्य प्रदान किया और धन्य किया मुझे और मेरे परिवार को।

इसी प्रवास के दूसरे रविवार के दिन आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में इस क्षेत्र को नया नाम दिया शीतलधाम। बस फिर क्या था शीतल विहार न्यास के सभी टस्टी गणों ने गुरुजी के समक्ष समोशरण की रूपरेखा प्रस्तुत की। इधर अरिहंत विहार कॉलोनी में बनने वाले श्री पार्श्वनाथ जिनालय के पंचकल्याण की भूमिका भी बनाए जाने लगी। आप गुरुजी के हृदय में क्षेत्र के प्रति बहुमान का अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि आचार्य श्री जी ने श्री शीतलनाथ भगवान के 4-4 कल्याणकों से सुशोभित भूमि शीतल धाम विदिशा क्षेत्र पर बनने वाले समवशरण का शिलान्यास श्री आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक के साथ सम्पन्न किया।

आचार्य श्री जी ने कहा कि जिस मंदिर का शिलान्यास पंचकल्याणक करके किया जा रहा है उस मंदिर के निर्माण पर क्या होगा कहा नहीं जा सकता।

इस क्षेत्र को लेकर आचार्य श्री के जी के मन में जो परिकल्पना है वह यह कि यह स्थान रेलवे लाइन से लगकर है सारे देश के लोग इसे देख सकेंगे। प्रत्येक दिन यहां से सैकड़ों टेनों के द्वारा हजारों यात्री गुजरेंगे और भगवान के दर्शन का लाभ लोगों को यहां से होगा। इस व्यापंक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर की इस स्थान का चयन किया गया है। इस मंदिर के निर्माण में मात्र पाषाण का ही उपयोग किया जा रहा है, जिससे कि यह हजारों हजारों वर्ष तक स्थापित रहे। समोशरण के निर्माण के लिए भूमि से लगभग 28 फुट की गहराई से इसकी नींव बनाई गई है। यह 117 फुट ऊंचाई का जिनालय होगा। यह जिनालय 160 फुट ब्यास विस्तार वाला है। भूकंप से सुरक्षित रखने हेतु रिएक्टर पैमाने पर 8 की तीव्रता को ध्यान में रखकर यह जिनालय बनाया जा रहा है। 40 फुट तक तो स्टोन कॉलम से निर्मित इसकी फाउंडेशन तैयार की गई है।

आचार्य श्री जी के शब्दों में कहे तो- सारे देश में यही एक स्थान ऐसा है जो भगवान की कल्याण भूमि होकर मध्यप्रदेश में स्थित है, शेष सभी तीर्थंकरों के कल्याणक उत्तर प्रदेश और बिहार में ही हुए हैं। आप सभी को इस बात का बहुमान होना चाहिए।

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति

सुरेश जैन

जैन व्यक्तित्व

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक विक्रम अम्बालाल साराभाई (जैन)

जैन जगत के चमकते सितारे जिन पर समूचे जैन समाज को ही नहीं अपितु भारत वर्ष के हर प्राणी को गर्व है। संसार के प्रमुख एवं प्रसिद्ध अणु एवं अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई का जन्म एक बड़े ही समृद्ध एवं देश भक्त जैन परिवार में 12 अगस्त 1919 को अहमदाबाद में हुआ। इन के पिता श्री अम्बालाल साराभाई कई मिलों के मालिक थे। धनाण्य होने के साथ साथ इन के परिवार ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। पिता महात्मा गांधी के बहुत बड़े भक्त थे तथा हर प्रकार से उनको योगदान देते थे। माता सरला देवा साराभाई ने 1930 में गांधी जी के ढांडी यात्रा के समय महिलाओं को नेतृत्व किया था। (महिलाएं और स्वराज्य) लेखिका- आशरानी व्होरा -पुष्ठ 177) विक्रम साराभाई की बहिन मृदुला बेन साराभाई उस समय की प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थी, अभी जवानी में उन्होंने कदम भी नहीं रखा था कि महात्मा गांधी से प्रभावित होकर अपना घर छोड़कर गांधी जी के नमक सत्याग्रह में शामिल हो गई। उस समय देश के सभी प्रमुख नेता अहमदाबाद में इनके घर पर ठहरा करते थे उन में से प्रमुख गुरुदेव रविन्द्र नाथ टेगौर, मोती लाल नेहरू, सी.वी रमण इत्यादि बहुत से अन्य नेता हैं। एक समय महात्मा गांधी जब गम्भीर बीमारी से ग्रस्थ थे उस समय स्वास्थ लाभ लेने के लिए कुछ दिन इन के घर ठहरे थे। गांधी जी शब्दों में सेठ अम्बालाल अपनी नेक पत्नी के साथ नडियाड आये और बड़ी सावधानी पूर्वक मुझे अपने मिर्जापुर बंगला अहमदाबाद ले गये, वहाँ उन्होंने मेरी गम्भीर बीमारी की स्थिति में बड़े प्रेम पूर्वक तथा निःस्वार्थ भाव से बड़ी सेवा की, ऐसी सेवा मिलनी मेरा परम सौभाग्य था (महात्मा गांधी की आत्म कथा अध्याय XXVIII मृत्यु द्वार के समीप पृष्ठ 415) देश के प्रमुख नेताओं का अम्बालाल जी के घर आने के कारण बाल्यकाल से ही विक्रम साराभाई पर बड़ा गहरा प्रभाव था।

व्रिकम साराभाई की प्रारम्भिक शिक्षा पारिवारिक स्कूल में हुई। गुजरात कॉलेज से इंटर तक विज्ञान की शिक्षा पूरी करने के बाद 1937 में कैमिब्रज विश्व विद्यालय इग्लैंड के SAINT JOHN COLLEGE में आगे पढ़ने के लिए चले गये। यहाँ से इन्होंने ने 1940 में प्राकृतिक विज्ञान में टाइपोज डिग्री प्राप्त की TRIPOS IN NATURAL SCIENCES द्वितिया विश्व युद्ध होने के कारण वह भारत लौट आये तथा भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर में नौकरी करने लगे जहाँ पर डॉ. सी.वी. रमण के निरिक्षण में कॉसमिकरे COSMIC RAY पर अनुसंधान किया।

शादी एवं परिवार :- 1942 में विक्रम सारा भाई की शादी जानी मानी कथक डाँसर मृणालिनी के साथ मद्रास में हुई। महात्मा गांधी के चलाये हुए भारत छोड़ो आन्दोलन में पूरा परिवार व्यस्त होने के कारण इन की शादी में किसी परिवार जन ने भाग नहीं लिया। इन की दो संतान हुई बेटी मल्लिका साराभाई जो बड़ी होकर भारतनाट्टय तथा कुची पुड्डी की प्रसिद्ध नृत्यांगना बनी। इसे 2010 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया तथा बेटा कार्तिकेय जो देश को

पर्यावरण क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दे रहा है, इन्हें 26 जनवरी 2012 को पद्म श्री से सम्मानित किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध समाप्ति के बाद 1945 में वह कॉसमिक रे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में अपनी डाकटेट पूरी करने के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय इंग्लैड लौट गये तथा 1947 में COSMIC RAY INVESTIGATION IN TROPICAL LATITUDES पर अपने शोध ग्रंथ के लिए उन्हें डाक्टेट की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस के बाद वह भारत लौट आये। अपनी वैज्ञानिक गतिविधियों के साथ-साथ उन्होंने 1947 से 1962 तक कई पारिवारिक मिलों की जिम्मेदारी संभाली, कई नये उद्योग स्थापित किये तथा कई उद्योगों की गुण्वत्ता के लिए कार्य किया। 1962 में डॉ. विक्रम साराभाई को भारत में अंतरिक्ष खोज के लिए अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान का चेयरमैन बनाया गया। इन्होंने अपने ज्ञान को देश की उन्नती के लिए समर्पित कर दिया, इन्होंने रॉकेट छोड़ने तथा अंतरिख का अध्यन करने के लिए THUMBA EQUATORIAL LAUNCHING STATION को बनवाने की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ली तथा यहाँ से अन्तरिक्ष की नई से नई खोज की। इन्होंने FRENCH CENTAURE SOUNDING ROCKETS को भारत में निर्भित करवाने में सब से बड़ा योगदान दिया जिस के परिणाम स्वरूप भारतीय रॉकेट रोहनी तथा मेनका का निर्माण हुआ। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की सफलता इस का प्रमाण है। रॉकेट प्रोधोगिकी को आगे बढ़ाने के साथ देश में अपग्रह टेलीविजन प्रसारण के विकास में भी प्रमुख भूमिका निभाई। इन के निरीक्षण में 19 वैज्ञानिकों ने शोधकार्य करके डाकटेट की उपाधी प्राप्त की। इन्होंने स्वतंत्र रूप से तथा अपने सहयोगियों से मिलकर राष्टीय पत्रिकाओं में 86 अनुसंधान लेख लिखे। डॉ. विक्रम साराभाई को भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का पितामाह कहा जाता है। महान भारतीय अनु वैज्ञानिक डॉ. होमी भाभा की अकस्मात हवाई हादसे में मृत्यु के बाद डॉ. विक्रम साराभाई को मई 1966 में ATOMIC ENERGY COMMISSION का चेयरमेन बनाया गया। वह दिन में बीस घंटे काम किया करते थे तथा नींद को भोगविलास की वस्तु समझते थे। वह सदा अपनी गतिविधियों तथा ढेर सारी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए हर समय तत्पर रहते थे। वह देश में विज्ञान की शिक्षा के बारे में बहुत चिन्तित रहते थे, उस में सुधार लाने के लिए उन्होंने सामुदायिक विज्ञान केन्द्रों की स्थापना की, उन में कुछ संस्थाओं के नाम इस प्रकार है। कम्युनिटी सांइस सेन्टर (CSC) अहमदाबाद, थुम्बा इकवेटोरियम रॉकेट लाउचिंग सटेशन (TERLS) तिरूवनतपुरम, स्पेश सांईस एण्ड टैकनालनोजिक सेन्टर (SSTC) तिरूवनतंपुरम, सेटलाई कम्युनिकेशन अर्थ स्टेशन (SCES), युरेनियम कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (UCIL) जादुगुडा (बिहार), वैरीऐबल एनर्जी साईकलोटोन प्रोजेकट (VECP) कोलकाता, फास्टर ब्रीडर रिएकटर (FBT) कलपक्कम, टैक्सटाईल इन्डस्टी रिसर्च एसो (ATIRA) अहमदाबाद, फिजिकल रिसर्च लेब्रोटरी (PRL) अहमदाबाद इन्डियन इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेंट (IIM) अहमदाबाद तथा अन्य अनेक संस्थाए बनवाई। विक्रम साराभाई बड़े मृदभाषी व्यक्ति थे जिन के मन में दूसरों के प्रति आसाधरण सहानुभूमि थी, जो भी उनके संपर्क में आता वह उनसे प्रभावित हुए बिना न रहता। स्वभाव से वह कला प्रेमी थे, संगीत, फोटोग्राफी, ललित कलाओ में उनकी रूची थी। अपनी पत्नी मृणालिनी के साथ मिलकर उन्होंने मंथन कलाओं की संस्था दर्पण अकादमी फार परफार्मिंग आर्टस 1949 में अहमदाबाद में बनवाई थी।

अंतरिक्ष की दुनिया में भारत को बुलन्दियों पर पहुँचाने वाले महान वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई की असमय मृत्यु केवल 52 वर्ष की आयु में 30 दिसम्बर 1971 को HYLCYON CASTLE कोव्वलम (केरल) में रात को सोते हुए हो गई जो कि आज तक एक रहस्य बना हुआ है। जबकि उन्हें दिल की कोई बिमारी नहीं थी। देश ने एक प्रतिभाशाली तथा महान दूरदर्शी वैज्ञानिक को खो दिया इन की उत्कृष्ट सेवाओं के इन को शांति स्वरूप भट्टनागर अर्वाड 1962 में पद्मभूषण 1966 में तथा पद्मविभूषण (मरणोपरांत) 1972 में दिया गया। इन की मृत्यु के बाद CSC का नाम विक्रम साराभाई कम्युनिटी सांईस सेन्टर अहमदाबाद रखा गया , TERLS तथा SCES इन दोनों संस्थाओं को मिलाकर एक संस्था बना दी गई । तथा उसका नाम ब्रिकमसाराभाई स्पेस सेन्टर तिरूवनतपुरम रखा गया। SCES का नाम विक्रम अर्थ स्टेशन रखा गया, यह इस महान सपूत को देश की श्रद्धाँजली थी।

1974 मे सिडनी में अंतराष्टीय खगोल विज्ञान संघ ने इन का एक अदभुत सम्मान किया जो उन्हीं शब्दों में लिखा जा रहा है।

A uniqur honour was bestowed on the late Vikram Sarabhai when a recent meeting of the international Astronomical union in Sydney decied to name a moon crater after him. Now crater Bassel (Longitude 21.0, Latitude 24.7) in the sea of serenity would be known as SARABHAI CRATER (SKY and TELESCOPE JOURNAL MARCH) 1974. इस का अर्थ यह है कि चाँद के इस भाग का नाम अब साराभाई क्रेटर के नाम से जाना जायेगा।

Our ex-president Dr. A.P.J. Abdul Kalam wrote in his Autobiography Wings of Fire page 63. I consider Prof. Sarabhai as he Mahatma Gandhi of Indian Science- generating leadership qualities in his prof Sarabhai can use errors ad opportunity to Promote innovation and the development of new ideas.

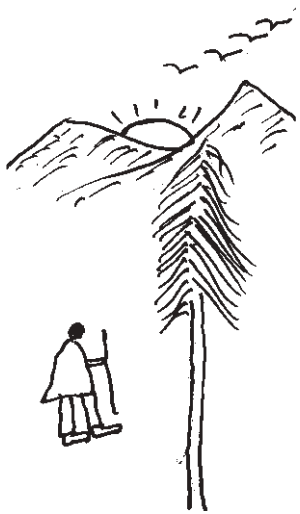

कविता

सुबह की तलाश में गजल

✻ प.पू. ऐलक श्री 105 सम्यक्तव सागर जी (बण्डा) ✻

सुबह की तलाश में ही शाम हो गई
कोड़ियों में जिन्दगी नीलाम हो गई
आरजू के परदों में अब रहा जाता नहीं
राज की बातें सभी खुले आम हो गई ।
किस-किस को दूँ मैं अमन की नसीहतें
खून की होली में वह कत्ले आम हो गई
डूबती सांसो पर क्या भरोसा में करूँ
गुजरती हर साँस मौत का अंजाम हो गई
इबादत की मय कोई यहाँ कैसे पिये
जिन्दगी तन्हाई में ही तमाम हो गई ।

हास्य तरंग

1. प्राचार्य- बच्चे के पिता से- हमारे स्कूल का नियम है सभी चीजें स्कूल से ही लेना पड़ेगी जैसे यूनिफार्म, टाई, जूते, मोजे, बेल्ट, बैग, स्कूल आने के लिये बस। पिता जी सर ठीक है और पढ़ाई के लिये ? प्राचार्य हाँ उसके लिये आप कोई भी बाहर की अच्छी कोचिंग लगवा सकते हो।

2. पति पत्नी में झगड़ा हो रहा था। पत्नी जब शादी करके मुझे लाये थे तो बड़े प्रेम से मुझे भोजन कराते थे अपने से अधिक भोजन मुझे खिलाया करते थे पर अब ऐसा क्या हो गया है। पति पहिले तुम अच्छा खाना नहीं बनाती थी।

3. भक्त की भक्ति से गणेश भगवान प्रसन्न होकर क्या चाहिये भक्त, भक्त ने कहा प्रभु एक नौकरी, पैसे ही पैसे , सुख की नींद, भगवान ने कहा तथास्तु। भक्त आजकल ए.टी.एम में सुरक्षा गार्ड का काम करता है।

4. सेठी जी देर रात्रि को घर आ रहे थे। अचानक एक लुटेरा पीछे से टूट पड़ा , सेठी जी ने भरपूर उसका मुकाबला किया। कुछ देर बाद उसने सेठी जी को पटक दिया और तलाशी लेने पर सेठी जी की जेब से बीस रूपये निकले। क्यों केवल बीस रूपये के लिये मरने मारने पर उतर आये थे ? लुटेरे ने पूंछा। सेठी जी नही यह बात नही है, मुझे डर था कि तुम कहीं वह दो हजार के नोट न ढूढ़ लो जो मैंने धोती में बांध रखे हैं।

5. टीचर-ग्रामर पढ़ाने के बाद झपकी ले रहे भावित से पूंछते हैं बहुवचन किसे कहते हैं ? भावित झेपते हुए जी बहु के मुँह से निकले वचन बहुवचन कहलाते है।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर)

थायराइड रोग

थायराइड ग्रंथि का मुख्य कार्य भोजन से आयोडीन निकालना और थायरॉक्सिन टी-4 व टराइडो थायरोनि टी-3 जैसे थायराइड हार्मोन में बदलना होता है। आयोडीन का असंतुलन थायरायड की मुख्य बजह होती है । थायराइड ग्रंथि जब कम सक्रिय होती है तो हाइपो थायराइड ग्रंथि अधिक संक्रिय होती है तो हाइपर थायराईड होता है।

हाइपो थायराइड में थायराइड ग्रंथि पर्याप्त मात्रा में हार्मोन का निर्माण नहीं करती जिससे टी-3, टी-4 का सामान्य स्तर बनाये रखने के लिए थायराइड स्टिम्यू लेटिंग हार्मोन टी.एस.एच. का स्तर बढ़ जाने से शरीर में थकान रहना, बजन बढ़ाना, बाल झड़ना, याददाश्त कमजोर, नींद नहीं आना, हाथ पैर ठंडे पड़ना, विटामिन डी की कमी, डिप्रेशन आदि होता है।

हाइपर थायराइड में थायराइड ग्रंथि अधिक सक्रिय होकर अत्याधिक मात्रा में टी-3,टी-4 हार्मोन का निर्माण करती है जिससे थायराइड ग्रंथि में सूजन, जलन, दिल की धड़कन, बढ़ना, भूख अधिक लगना, अचानक वजन कम होना, गर्मी के प्रति संवेदनशील होना आदि

थायराइड रोग प्रमुख्यता महिलाओं में डिलेवरी के दौरान, हार्मोन असंतुलन हो जाता है जो बाद में सावधानी रखने पर ठीक हो जाता है। बाजारों में उपलब्ध आयोडीन नमक भी रोग बढ़ाने में सहायक है अतः प्राकृतिक रूप से प्राप्त सेंधा नमक का उपयोग करना चाहिये थायराइड रोग में अंग्रेजी दवाईयाँ अशुद्ध व हार्ट अटेक को लाता है जो पूर्णतः सिद्ध हो चुका है।

थायराइड के नियंत्रण हेतु सब्जियाँ फलों का सेवन आलिव आयल, नारियल तेल का उपयोग पर्याप्ति नींद, खूब गरम पानी पीना, एक्सरसाईज करना, सर्वो गासन आसन लाभकारी है किन्तु एक्सपर्ट की सलाह व देखरेख में करना चाहिये। पत्ता गोभी जैसी क्रूसी फेरस सब्जियाँ को हमेशा पका कर खायें।

अल्कोहल,स्मोकिंग से बचे, शक्कर का कम उपयोग, आर्टि फिशियल फ्लेवर और स्वीटनर के उपयोग से बचे। सावधानी ही नियंत्रण में सहायक होता है । अति आवश्यक होने पर आयुर्वेदिक चिकित्सा लेना चाहिये।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर)

बाल कहानी

नेपकीन

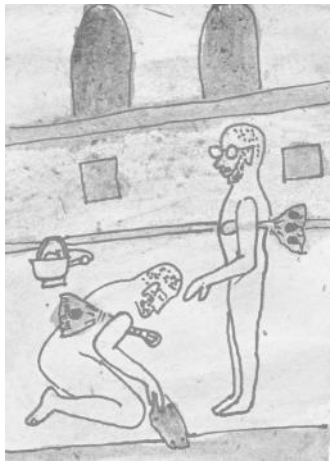

आचार्य ज्ञान सागर महाराज जब बहुत वृद्ध हो चुके थे तो उनकी सेवा करने का सारा का दायित्व आचार्य विद्यासागर ने अपने कन्धे पर ले रखा था। वे उनकी हर चर्या का पूरा ध्यान रखते थे। आचार्य ज्ञानसागर महाराज को साइटिका रोग का खूब प्रभाव था ठंउ के दिनों में वे नौ बजे के पहले वे अपने कमरे से बाहर नहीं निकलते थे कमरे में ही पाठ स्वाध्या किया करते थे इसके बाद भी वे आगम के अनुकू ल ही चर्या करते थे। समाज के लोग आचार्य विद्यासागर के साथ ज्ञानसागर महाराज जी की हर चर्या में और वैयावृत्ति में पूरा पूरा सहयोग करते थे। परंतु आचार्य ज्ञानसागर जी अपने कठोर चर्या के साथ कोई भी समझौता नहीं करते थे।

एक दिन प्रभात के समय आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज लघु शंका के लिए गये कमण्डल का पानी ठंड के कारण बहुत शीतल हो गया था। परन्तु महाराज जी ने अपने कमण्डल का पानी बदला नहीं और वे लघु शंका को चले गये। कुछ देर बाद वे लघु शंका से लौटे इसी बीच में आचार्य विद्यासागर जी उनके आने की प्रतिक्षा कर रहे थे। और वे आधी धूप आधी छाँ व में खड़े होकर यह देख रहे थ कि गुरुदेव कब लौट करके आयें और उनके पैर ठंडे होने से बचा सकें। जैसे ही पूज्य गुरुदेव लौकर आये तब उनके शरीर पर भी धूप छाँव का असर हो रहा था। उनके शरीर के एक-एक रोम खड़े हो रहे थे शरीर काँप रहा था। मुनि विद्यासागर ने कहा गुरुदेव आप इतनी ठंठ में बाहर निकल आये देखो कैसा शरीर काँप रहा है ? आप साइटिका से पीड़ित हैं इतनी ठंड में तो आपकी पीड़ा बड़ सकती है और भावुक होकर मुनि विद्यासागर जी ने एक नेपकिन से पैर पौछना शुरू कर दिया आचार्य ज्ञान सागर जी ने मुनि विद्यासागर जी से कहा। विद्यासागर तुम्हारे हाथ में यह नेपकीन कहां से आ गयी तब मुनि विद्यासागर चुपचाप रह गये और उन्होंने पैर पौछना बन्द कर दिया और ठिठक कर वहीं बैठे रह गये तथा उन्होंने नेपकीन को एक तरफ रख दिया मन ही मन में उन्होंने संकल्प ले लिया आज के बाद में कभी नेपकीन अपने हाथ से नहीं छुऊँगा कि मुनि विद्यासागर आचार्य विद्यासागर बन गये और उन्होने कभी भी नेपकीन को नहीं छुआ अपने गुरु की ऐसी सीख अपनायी कि वे नेपकीन ग्रहण नहीं करने को आदर्श बना चुके।

संस्कार गीत

देवता से कम नहीं माता पिता

1.
ये है माता पिता तेरे
नहीं कम देवताओं से
तूँ क्यों ये भूल जाता हे
नहीं आया तूँ रस्तों से

2.
इन्होंने प्रार्थना की थी
मिला जब लाडला बेटा
कलेजे का बना टुकड़ा
तूँ था जब अरे छोटा
झेले हैं कष्ट इनने सब
तेरी धड़कन के रिस्तों से

3.
माँगी थी इनने पुत्र-पुत्री
कोई तो काम में आये
यही था पुण्य जो उनका
तुम्हारा जन्म शुभ पाये
करो सेवा सदा उनकी
लगो स्वर्ग के रस्तों से

बाल कविता

मिलके रहना

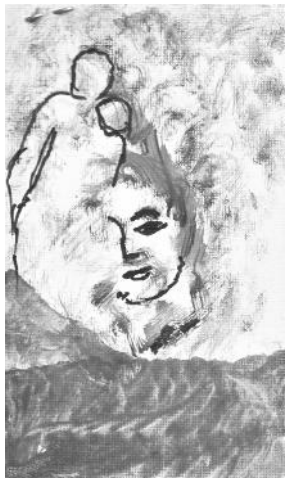

सबसे मिलके रहना रे !

नहीं झगड़ा करना रे !

छोटी छोटी बातों में

खोटी खोटी बातों में

नहीं कभी उलझना रे !

बच्चे सच्चे होते हैं

कभी हंसते कभी रोते हैं

बैर नहीं मन धरना रे !

मीठी मीठी बातें करना

गंदी गाली कभी न बकना

सबके मन को हरना रे !

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

भोपाल : आचार्य श्री निर्भय सागर जी करकमलों से दिनांक 18.08.2018 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर शाहपुरा भोपाल में ब्र. नरेन्द्र भैया राहतगढ़ को मुनि दीक्षा दी गई। जिनका नाम मुनि श्री हेमदत्तसागर जी रखा गया।

श्रवणबेलगोल- आचार्य श्री वासुपूज्य सागर जी करकमलों से ब्र. सुगन्ध भैया पाढवा राजस्थान को श्री दिगम्बर जैन क्षेत्र श्रवणबेलगोला कर्नाटक में दिनांक 16.8.18 को मुनि दीक्षा दी गई। जिनका नाम मुनि श्री श्रेयसागर जी महाराज रखा गया।

बड़ौदरा गुजरात- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन मंदिर सन्मति पार्क बड़ौदरा में क्षुल्लिका सुत्यागश्री माताजी, क्षुल्लिका शास्वतमाताजी, एवं ब्र. सुशीला दीदी, स्वयंप्रभा दीदी को दीक्षाए दी गई। जिनके नाम क्रमशः आर्यिका सुद्रव्यमति माताजी, आर्यिका सुकाव्यमति माताजी, आर्यिका सुभव्यमति माताजी, क्षुल्लिका सुसौम्यमति माताजी रखा गया।

णमोकार तीर्थ-आचार्य श्री देवनंदी महाराज के सान्निध्य में कमलाबाई रिखवचंद्र जी पाटनी नादगांव को आर्यिका दीक्षा दिनांक 17.08.18 को दिगम्बर जैन नवकार तीर्थ जैन नॉलेज सिटी मालखानी चांदवाड़ जिला नासिक महाराष्ट में दी जिनका नाम आर्यिका श्री श्रेष्ठश्री माताजी रखा गया।

समाधिमरण

श्रवणबेलगोल- आचार्य श्री वासुपूज्य सागर जी महाराज समाधि दिनांक 17.08.18 रात्रि 2.30 बजे मुनि श्री श्रेयसागर जी महाराज आदि 125 साधुओं के सान्निध्य में हुई।

णमोकार तीर्थ-आचार्य श्री देवनंदी महाराज के सान्निध्य में उनकी शिष्या आर्यिका श्री श्रेष्ठश्री माताजी की समाधि दिनांक 17.08.18 को रात्रि 8.30 श्री दिगम्बर जैन नवकार तीर्थ जैन नॉलेज सिटी मालखानी चांदवाड़ जिला नासिक महाराष्ट में हुई।

महामस्तकाभिषेक एवं निर्माण लाडू सम्पन्न

इन्दौर - श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर में श्री श्वेतमति माताजी, आर्यिका श्री विदेहमति माताजी, आर्यिका श्री अवायमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक के अवसर पर निर्माण लाडू चलाया गया। प्रथम लाडू राजीव सेठी, अनिल पांडया, संतोषजी अशोकनगर, हर्षजी तथा द्वितीय लाडू मुकेश उर्मिला जी, महिलामंडल पंचबालयति डॉ. सनतजी, तृतीय लाडू श्रीमति प्रभा सुरेन्द्र जी, महावीर कुमार जी, नरेन्द्र जी जयपुर, कृति विरेन्द्र जी, राकेश जी आदि को लाडू चलाने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रथम महामस्तिकाभिषेक करने का अवसर श्री राजीव जी सेठी, शांतिधारा करने का अवसर श्री हर्ष जी जैन, छत्र चढ़ाने का अवसर श्री आशीष जी बीना वाले, सतीश जी सतना, महेन्द्र जी पत्रकार, दीपेश गोधाजी, निलेशजी को प्राप्त हुआ।

भामंडल चढ़ाने का अवसर श्री प्रदीप जी टड़ा, कोस्तुक श्री खेमचन्द्र जी, श्री राजकुमार जी, श्री अनुराग जी को प्राप्त हुआ।

अभिषेक करने में पंडित श्री रतनलाल जी, श्री खेमचन्द्र, श्री दीपेश गोधाजी, श्री वीरेन्द्र जी, श्री एम.सी.जैन पेराडाइज आदि को अवसर प्राप्त हुआ। इसमें आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की महापूजन बढ़ी

भक्तिभाव से की गई।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज पर भजनों की सीढ़ी का लोकार्पण

रतलाम-मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में लोकेन्द्र भवन रतलाम में ऐलक श्री सिद्धांत सागर जी महाराज द्वारा लिखित आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के जीवन पर संयमोत्सव वर्ष पर आठ भजनों का संकलन एक नाम का दीवाना सीढ़ी का लोकार्पण 19.08.18 को हुआ। जिसमें चिंतन बाकीबाला इन्दौर ने भजन गाकर सभा में समा बांध दिया । इसका लोकार्पण श्री विनोद जी काला कोलकाता, चेतन मेहता जामनगर, ब्र. जिनेश मलैया, श्री पन्नालाल जी बेनाडा आगरा, सुनील बिलाला इन्दौर ने किया। सीढ़ी का संयोजन ब्र. जिनेश मलैया प्रधान संपादक संस्कार सागर पंचबालयति मंदिर इन्दौर ने किया।

आहार से आयोग्य एवं वैयावृत्ति पुस्तक का लोकार्पण

रतलाम-मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में लोकेन्द्र भवन रतलाम में ऐलक श्री सिद्धांत सागर जी महाराज द्वारा लिखित आहार से आरोग्य एवं वैयावृत्ति पुस्तक का लोकार्पण 19.08.18 को श्री पन्नालाल जी बेनाडा आगरा श्री ओम जी रतलाम तथा ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर ने किया। इस पुस्तक में आहार से आरोग्यता को कैसे प्राप्त हो इसकी विधि का संकलन किया हुआ है । यह पुस्तक श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर से मंगवाकर आहारदान देते समय इसका उपयोग किया जा सकता है। यह वैयावृत्ति हिसाब से बहुत अच्छी कृति हैं ।

उपाध्याय पद से सुशोभित

मलयगिरि इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन सर्वोदय महातीर्थ मलयगिरि इन्दौर में आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के द्वारा मुनि श्री विप्रणतसागर महाराज जी को 15 अगस्त 18 को उपाध्याय पद से सुशोभित किया गया।

480 दिवसीय महामृत्युंजय भक्तामर महानुष्ठान

मलयगिरि इन्दौर- आचार्य श्री शिवसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री सर्वोदय महातीर्थ मलयगिरि ने 480 दिवसीय महामृत्युजंय भक्तामर महानुष्ठान दिनांक 15 अगस्त 18 से 07 दिसम्बर 19 तक होने जा रहा है। जिस पर भारतीय डाक विभाग ने एक आवरण पृष्ठ तैयार किया है जिसमें 99 करोड़, 99 लाख, 99 हजार, 999 जाप का भी उल्लेख किया गया है।

हरित जैन तीर्थ अभियान

मुबंई-संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर विद्यासागर महाराज जी के संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष पर सभी क्षेत्रों पर वृक्ष लगाने का अभियान चलाया गया था। जिसमें कुंडलपुर क्षेत्र पर 5100 वृक्षारोपण तथा सभी क्षेत्रों पर लाखों वृक्ष लगाने का अभियान चलाया जा रहा है । आप भी आपके नजदीकी क्षेत्र पर वृक्षरोपण कर हरित जैन तीर्थं अभियान में सम्मलित होकर पुण्यार्जन करें।

भगवान श्रेयांसनाथ मोक्षकल्याणक एवं रक्षाबंधन सम्पन्न

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में भगवान श्री श्रेयांसनाथ स्वामी का मोक्ष कल्याणक के अवसर पर निर्वाण लाडू चलाया गया । तथा भगवान श्री पंचबालयति तीर्थंकरों के समक्ष हजारों लोगों ने मंदिर एवं धर्म की रक्षा का संकल्प लेतें हुए धर्मरक्षा संकल्प सूत्र को मंदिर जी में बांधा तथा भगवान हमारी रक्षा करें इस भावना के साथ अपने हाथ में भी धर्म रक्षा संकल्प सूत्र बांधा।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह :सितम्बर 2018

01. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
02. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित मुनि श्री समयसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
03. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित मुनि श्री नियमसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
04. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित मुनि श्री सुधासागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
05. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
06. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित मुनि श्री अभयसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
07. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
08. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित मुनि श्री समतासागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
09. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आर्यिका श्री गुरुमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
10. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आर्यिका श्री दृढ़मति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
11. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आर्यिका श्री पूर्णमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
12. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आर्यिका श्री गुणमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
13. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आर्यिका श्री ऋजुमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है
14. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आर्यिका श्री अकम्पमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
15. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आर्यिका श्री आदर्शमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
16. आचार्य श्री अनेकान्त सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
17. आचार्य श्री उदारसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
18. आचार्य श्री निर्भयसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
19. आचार्य श्री अनुभव सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
20. आचार्य श्री आदर्श सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
21. आचार्य श्री चन्द्रप्रभसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
22. आचार्य श्री चैत्यसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
23. आचार्य श्री देवसेनसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
24. आचार्य श्री देवनन्दिसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?

25. आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
26. आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
27. आचार्य श्री इन्द्रनंदी जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
28. आचार्य श्री कुन्थु सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
29. आचार्य श्री कुशाग्रनंदी सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
30. आचार्य श्री निर्मलसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
31. आचार्य श्री प्रसन्नऋषि सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
32. आचार्य श्री पुष्पदंतसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
33. आचार्य श्री सौभाग्य सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
34. आचार्य श्री सिद्धांतसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
35. आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
36. आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
37. आचार्य श्री सुन्दरसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
38. आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
39. आचार्य श्री वैराग्य सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
40. आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
41. आचार्य श्री विभव सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
42. आचार्य श्री वैराग्यनंदी जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
43. आचार्य श्री विवेक सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
44. आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
45. बालाचार्य श्री कल्पवृक्षनंदी जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
46. उपाध्याय श्री मंयक सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
47. मुनि श्री अमित सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
48. मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
49. आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
50. आर्यिका श्री विशुद्धमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः सितम्बर 2018

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम .....स्थान .....

उम्र .....सदस्यता क्र. .....

पूर्ण पता .....

पिन कोड ..... फोन नं..... (एस.टी.डी.) .....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम ..... हस्ताक्षर

नियम :– ..... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

वर्ग पहेली 233

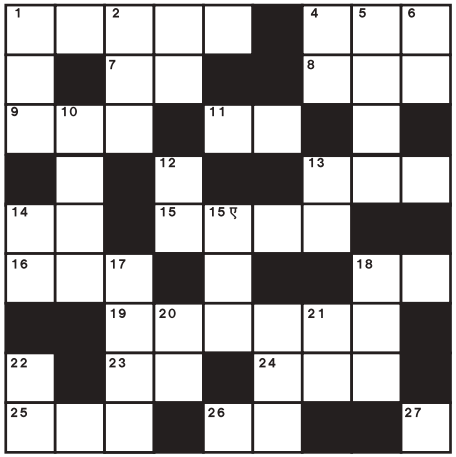

ऊपर से नीचे

1. उत्साह
2. मनुष्य, मानव
3. वह (संस्कृत
4. धर्म के भेद बताने वाला अंक
5. सच्चे सुख का मार्ग
6. मैं का बहुवचन
10. दया, करूणा, कृपा
12. हठ
15ए. मदिरा, मथ हाला
17. रिस्तेदार, संबधी
18. सहारा
20. हनुमान जी का शस्त्र
21. पूछ
22. दशलक्षण धर्म का चौथा धर्म, शुचि का भास

बाये से दाये

1. इच्छा रोधी धर्म, दशलक्षण धर्म में से एक धर्म
4. कुंडलपुर तीर्थ का जिला
7. नमस्कार करना, झुकना
8. समर्थ, योग्य,
9. स्वार्थ, खुदी
11. इन्द्रिय मन कषाय को जीतने वाला, जैनों का देवता
13. पुदगल परमाणुओं का समूह
14. ताकत, शक्ति, श्वास
15. विजय दशमी पर्व
16. कष्ट दुख
18. समता का भाव, इन्द्रिय विजय
19. सिक्खों के 9वें गुरु
23. पिताजी के पिता
24. दबाना रोकना
25. एक प्रात्यहार्य, जो भगवान के उपर दुरता है
26. स्थिति, हालात
27. कौन अर्थीय अव्यय (संस्कृत)

वर्ग पहेली 232 का हल

1 व्या	2 क	3 र	ण	■	4 सु	5 ख	दे	6 व
7 धी	मा	न	■	8 अ	म	र	■	र
■	न	■	9 ग	म	न	■	10 अ	दा
11 अ	■	12 सु	ज	न	■	13 वि	मा	न
14 क	ङ्क	र	■	■	15 म	का	न	■
म्प	■	16 भिं	17 गा	18 ना	■	स	■	19 रा
20 ना	21 क	■	22 य	23 म	न	■	24 ता	ज
25 चा	ल	■	क	■	26 ज	ग	■	तु
र्य	■	27 सः	■	28 क	र	■	29 शु	रू

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.)
प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

मैं भी तो कुछ जानु

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

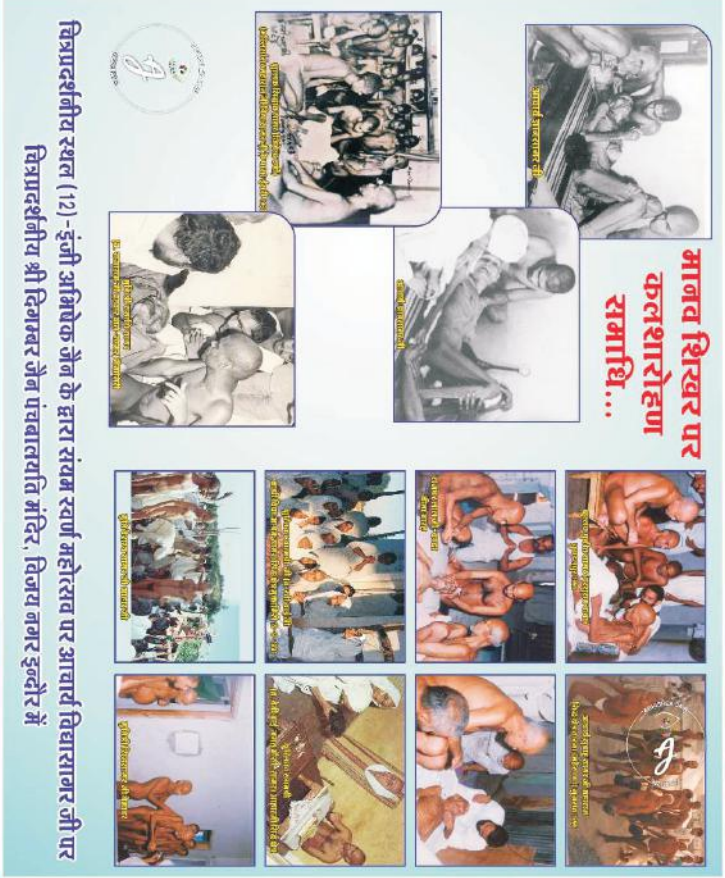

चित्रप्रदर्शनीय स्थल (13)-इंजी अभिषेक जैन के द्वारा संयम स्वर्ण महोत्सव पर आचार्य विद्यासागर जी पर
चित्रप्रदर्शनीय श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विजय नगर इन्दौर में

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के चरण सानिध्य में राष्ट्रीय विभूतिया...

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org